विश्वास और पूजा

रिसाले-ए-नूर संग्रह से

मानवता का ईश्वरीय मुठभेड़ श्रृंखला

विश्वास

और

पूजा

बेदिउज्जमां

नर्स ने कहा

The Light

न्यू जर्सी 2006

संशोधित संस्करण 2006

प्रथम प्रकाशन 2002 09 08 07

06 3 4 5 6

द लाइट, इंक. द्वारा प्रकाशित.

26 वर्ल्ड्स फेयर डॉ. सुइट सी समरसेट, न्यू जर्सी,

08873, यूएसए

www.thelightpublishing.com तुर्की से

अली उनाल द्वारा अनुवादित

लाइब्रेरी ऑफ कांग्रेस कैटलॉगिंग-इन-पब्लिकेशन डेटा पिछले संस्करण के लिए

नर्सी, सईद, 1877-1960।

[रिसाले-ए नूर. अंग्रेजी. चयन]

मानवता, विश्वास और इस्लाम / बेदिउज़्ज़मान सईद नूरसी. पृ. से.मी. - (मानवता का ईश्वर से साक्षात्कार; 1)

"रिसाले-ए नूर संग्रह से।"

इसमें ग्रंथसूची संदर्भ (पृ.) और अनुक्रमणिका शामिल है।

आईएसबीएन 0-9720654-6-6 (पीबीके: एल्क पेपर) 1. नूरकुलुक--सिद्धांत। 2. इस्लाम--सार, प्रतिभा, प्रकृति। 3. इस्लाम--सार्वभौमिकता। I. शीर्षक। II. श्रृंखला।

बीपी252.आर5713 2002बी 297.8'3--

डीसी21

2002013929

आईएसबीएन (पेपरबैक): 1-59784-043-2

आईएसबीएन (हार्डकवर): 1-59784-048-3

मुद्रित लेखक:

Çaðlayan A.Þ., इज़्मिर - तुर्की, अप्रैल 2006

विषयसूची

बेदिउज्जमां और रिसाले-ए नूर

अपने जीवनकाल की उपलब्धियों के कई आयामों के साथ-साथ अपने व्यक्तित्व और चरित्र में, बेदीउज्जमां (1877-1960) मुस्लिम दुनिया में एक महत्वपूर्ण विचारक और लेखक थे और अपने निरंतर प्रभाव के माध्यम से, आज भी हैं। उन्होंने इस्लाम की बौद्धिक, नैतिक और आध्यात्मिक शक्तियों को सबसे प्रभावी और गहन तरीके से प्रस्तुत किया, जो चौदहवीं शताब्दी के इतिहास में विभिन्न स्तरों पर स्पष्ट है। वे अस्सी-पांच साल तक जीवित रहे। उन्होंने लगभग सभी वर्ष इस्लाम के लिए प्रेम और जोश से भरे हुए, उचित तर्क पर आधारित और कुरान और पैगंबर के उदाहरण की छाया में एक बुद्धिमान और मापा हुआ सक्रियता में बिताए।

बेदीउज्जमां उस दौर में जी रहे थे जब भौतिकवाद अपने चरम पर था और बहुत से लोग साम्यवाद के पीछे पागल थे, और दुनिया बहुत बड़े संकट में थी। उस महत्वपूर्ण दौर में, बेदीउज्जमां ने लोगों को विश्वास के स्रोत की ओर इशारा किया और उनमें सामूहिक बहाली की प्रबल आशा जगाई। ऐसे समय में जब विज्ञान और दर्शन का इस्तेमाल युवा पीढ़ी को नास्तिकता की ओर गुमराह करने के लिए किया जा रहा था, और शून्यवादी दृष्टिकोण का व्यापक आकर्षण था, ऐसे समय में जब यह सब सभ्यता, आधुनिकीकरण और समकालीन सोच के नाम पर किया जा रहा था और जो लोग उनका विरोध करने की कोशिश करते थे, उन्हें सबसे क्रूर उत्पीड़न का सामना करना पड़ता था, बेदीउज्जमां ने पूरे लोगों के समग्र पुनरुत्थान के लिए प्रयास किया, उनके दिमाग और आत्माओं में वही सब फूंक दिया जो आधुनिक और पारंपरिक शिक्षा और आध्यात्मिक प्रशिक्षण दोनों के संस्थानों में सिखाया जाता है।

बेदिउज्जमां ने देखा था कि आधुनिक अविश्वास विज्ञान और दर्शन से उत्पन्न हुआ है, अज्ञानता से नहीं।

उन्होंने पहले लिखा था कि प्रकृति ईश्वरीय शक्तियों का संग्रह है।
संकेत और इसलिए विज्ञान और धर्म परस्पर विरोधी विषय नहीं हो सकते। बल्कि, वे एक ही सत्य की दो (स्पष्टतः) भिन्न अभिव्यक्तियाँ हैं। मन को विज्ञान से प्रकाशित किया जाना चाहिए, जबकि हृदय को विज्ञान से प्रकाशित किया जाना चाहिए

धर्म।

बेदिउज़्ज़माँ सामान्य अर्थों में लेखक नहीं थे।
शब्द। उन्होंने अपनी शानदार रचना रिसाले-ए-नूर लिखी,
5,000 पृष्ठों से अधिक का संग्रह, क्योंकि उनके पास
मिशन: उन्होंने विज्ञान और दर्शन द्वारा पोषित भौतिकवादी और नास्तिक विचारधारा के खिलाफ संघर्ष किया और
इस्लाम की सच्चाई को आधुनिक दिमागों के सामने पेश करने की कोशिश की और
हर स्तर की समझ वाले दिल। रिसाले-ए नूर,
कुरान की एक आधुनिक टिप्पणी, मुख्य रूप से केंद्रित है
ईश्वर के अस्तित्व और एकता, पुनरुत्थान,
पैगम्बरत्व, ईश्वरीय शास्त्र जिसमें मुख्य रूप से शामिल हैं
कुरान, अस्तित्व के अदृश्य क्षेत्र, ईश्वरीय नियति
और मानवता की स्वतंत्र इच्छा, पूजा, मानव जीवन में न्याय,
और सृष्टि में मानवता का स्थान और कर्तव्य।

लोगों के दिलो-दिमाग से मिटाने के लिए
झूठी मान्यताओं और धारणाओं के संचित 'अवसाद' को दूर करने और उन्हें बौद्धिक और आध्यात्मिक रूप से शुद्ध करने के लिए, बेदिउज़्ज़मान जोरदार तरीके से लिखते हैं और बार-बार दोहराते हैं। वह न तो अकादमिक और न ही उपदेशात्मक तरीके से लिखते हैं;

बल्कि वह भावनाओं से अपील करता है और अपनी भावनाओं को बाहर निकालने का लक्ष्य रखता है
लोगों के दिलों और दिमागों में विचारों और अवधारणाओं को पहुँचाना
उन्हें विश्वास और दृढ़ विश्वास के प्रति जागृत करना।

इस पुस्तक में रिसाले-आई से चयनित अनुभाग शामिल हैं
केवल एकत्रण ।

विश्वास और पूजा

ईश्वर के नाम पर, जो दयालु,
कृपालु है।

और उसी से हम सहायता चाहते हैं। प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जो सारे संसार का पालनहार है, और बरकत और सलाम हमारे स्वामी मुहम्मद, उनके परिवार और उनके साथियों पर हो।

परिचय

साथी मुसलमानों! आपने सलाह मांगी है, इसलिए निम्नलिखित रूपकों में निहित कुछ सच्चाइयों को सुनिए।

चूंकि आप सैनिक हैं, इसलिए मैं अपनी बात सैन्य शब्दों में ही कहूंगा।

---

[1] पैगम्बर मुहम्मद से संबंधित किसी भी प्रकाशन में उनके नाम या उपाधि के बाद “उन पर शांति और आशीर्वाद हो” लिखा जाता है, ताकि उनके प्रति हमारा सम्मान प्रदर्शित हो और ऐसा करना धार्मिक आवश्यकता भी है। उनके साथियों और अतीत के अन्य प्रतिष्ठित मुसलमानों के लिए: “ईश्वर उनसे प्रसन्न हो” का प्रयोग किया जाता है। हालाँकि, चूँकि यह गैर-मुस्लिम पाठकों को विचलित कर सकता है, इसलिए ये वाक्यांश इस पुस्तक में नहीं हैं, इस समझ के साथ कि ये मान लिए गए हैं और इनका कोई अनादर करने का इरादा नहीं है। (संपादक)

2 पैगम्बर का परिवार: पैगम्बर, अली, फातिमा, हसन और हुसैन। इन लोगों को अहल अल-बैत, यानी घर का परिवार (या लोग) के नाम से जाना जाता है। पैगम्बर की पत्नियाँ इस पदनाम में शामिल नहीं हैं। (ट्र.)

पहला शब्द

बिस्मिल्लाह का महत्व

बिस्मिल्लाह (ईश्वर के नाम पर) सभी अच्छी चीजों की शुरुआत है, इसलिए हम इससे शुरुआत करेंगे। यह धन्य वाक्य इस्लाम की निशानी है, जिसे सभी प्राणी अपनी स्वभावगत जीभों के माध्यम से निरंतर दोहराते हैं। यदि आप इसकी शक्ति और आशीर्वाद के अटूट स्रोत को समझना चाहते हैं, तो निम्नलिखित कथन पर विचार करें-

रक्तरंजित:

अरब के रेगिस्तान में यात्रियों को सुरक्षा कवच के नीचे यात्रा करनी पड़ती है।

आदिवासी मुखिया का नाम और सुरक्षा, अन्यथा वे डाकुओं से परेशान हो जाएंगे और यात्रा के लिए जो कुछ भी चाहिए उसे प्राप्त करने में असमर्थ होंगे। दो लोग,3 एक विनम्र

---

3 कुरान में ईश्वर ने घोषणा की है: मैं तुममें से किसी भी व्यक्ति के कर्म को व्यर्थ नहीं जाने दूंगा, चाहे वह पुरुष हो या महिला: तुम सब एक ही हो (3:195)। यह स्पष्ट है कि इस्लाम धार्मिक जिम्मेदारी में पुरुषों और महिलाओं के बीच भेदभाव नहीं करता है। प्रत्येक लिंग अधिकांश जिम्मेदारियों को साझा करता है, लेकिन प्रत्येक की कुछ जिम्मेदारियां होती हैं जो उसके लिए विशेष होती हैं। कुरान आमतौर पर संबोधन के पुल्लिंग रूप का उपयोग करता है, क्योंकि यह अरबी की विशेषताओं में से एक है। लगभग हर भाषा में, पुल्लिंग रूप का उपयोग पुरुषों और महिलाओं दोनों के समूह के लिए किया जाता है, जैसे अंग्रेजी शब्द मानव जाति, जिसमें दोनों शामिल हैं

और दूसरा अभिमानी, यात्रा पर निकल पड़ा। विनम्र व्यक्ति को एक जनजाति के मुखिया का नाम मिला; अभिमानी व्यक्ति को नहीं। पहले वाले ने हर जगह यात्रा की

सुरक्षित। जब भी वह किसी डाकू से मिलता, तो वह कहता: "मैं
इस प्रमुख के नाम पर यात्रा कर रहा था," और इसलिए छोड़ दिया गया था
अकेले। हर तंबू में उनके साथ सम्मान से पेश आया गया
इसके विपरीत, अभिमानी को विपत्ति और निरंतर भय का सामना करना पड़ा, क्योंकि उसे संघर्ष करना पड़ा और
हर ज़रूरत के लिए भीख माँगता था। वह नीच और नीच बन गया।

हे अभिमानी आत्मा! तुम ही वह यात्री हो, और यह
दुनिया रेगिस्तान है। आपकी कमजोरी और गरीबी
अंतहीन, और दुश्मन और अभाव जिनके लिए
आप जो उजागर कर रहे हैं वह संख्या से परे है। यह देखते हुए,
शाश्वत स्वामी और परमेश्वर का नाम लें
इस संसार का शाश्वत शासक, क्योंकि केवल यही हो सकता है
तुम्हें ऐसी भीख और भय से मुक्ति दिलाएँ।

बिस्मिल्लाह एक धन्य खजाना है। यह बदल देता है
आपकी असीम कमजोरी और गरीबी को, बांधकर
सर्वशक्तिमान और दयालु भगवान की असीम कृपा से आपको
शक्ति और दया, सबसे अधिक ध्यान देने वाले मध्यस्थ में

पुरुष और महिलाएँ। इसलिए, भाईचारे में बहनापा भी शामिल है,
और, चूँकि विश्वासियों में पुरुष और महिला दोनों शामिल हैं, इसलिए विश्वासी भाई-बहन हैं। हालाँकि,
मूल पाठ को बनाए रखना और दोहराव से बचना, आमतौर पर हम ऐसा करते हैं
अनुवाद में स्त्रीलिंग रूपों का उल्लेख नहीं किया गया है। (ट्र.)

उसके दरबार में। जब आप बिस्मिल्लाह कहते हैं, तो आप उसके नाम पर काम करते हैं। आप राज्य के नाम पर काम करने वाले एक सैनिक की तरह हैं, किसी से नहीं डरते, कानून और राज्य के नाम पर सभी काम करते हैं, और सभी बाधाओं के बावजूद डटे रहते हैं।

हर चीज़ अपने अस्तित्व के तरीके से बिस्मिल्लाह कैसे कहती है ? उदाहरण के लिए: एक अजनबी शहर में आकर अपने लोगों को एक निश्चित जगह पर इकट्ठा होने का आदेश दे सकता है ताकि वे एक निश्चित काम पर काम कर सकें। अगर इस आदेश का पालन किया जाता है, तो जाहिर है कि अजनबी शासक की ताकत और अधिकार के नाम पर काम कर रहा है, न कि अपने लिए। इसी तरह, हर चीज़ ईश्वर, सर्वशक्तिमान के नाम पर काम करती है। छोटे-छोटे बीज और दाने अपने सिर पर बड़े-बड़े पेड़ उठाते हैं और पहाड़ों जितना भारी वजन उठाते हैं। हर पेड़ बिस्मिल्लाह कहता है और रहमत के खजाने से अपने हाथों में फल भरकर उन्हें एक थाल में रखकर हमें देता है। हर बगीचा, ईश्वरीय शक्ति की रसोई से एक खाना पकाने का बर्तन जिसमें अनगिनत किस्म के फल होते हैं

बिस्मिल्लाह कहते हैं, स्वादिष्ट भोजन तैयार किया जाता है ।

सभी धन्य जानवर (जैसे गाय, ऊँट, भेड़ और बकरियाँ) बिस्मिल्लाह कहते हैं और दया की प्रचुरता से दूध के झरने बन जाते हैं। वे हमें प्रदाता के नाम पर, जीवन के जल की तरह सबसे नाजुक और शुद्ध भोजन प्रदान करते हैं। हर पौधा और घास का पत्ता, हर जड़ और तना बिस्मिल्लाह कहता है। सभी पौधे, पेड़ और

रेशम की तरह मुलायम घास की जड़ें और रेशे बिस्मिल्लाह कहते हैं और कठोर पत्थरों और मिट्टी को चीर देते हैं। उसका नाम लेने से, जो दयालु का नाम है, हर चीज़ उनके अधीन हो जाती है।

एक पेड़ की शाखाएँ आसमान में फैली होती हैं, और इसकी जड़ें पत्थरों और मिट्टी के बीच बेरोकटोक फैली होती हैं। यह जमीन के नीचे अपने आप पैदा होता है, और इसकी नाजुक हरी पत्तियाँ तीव्र गर्मी के बावजूद नमी बनाए रखती हैं।

ये वास्तविकताएँ प्रकृतिवादी को परेशान करती हैं। यह प्रकृतिवादी की अदृश्य आँखों में उँगली घुसाता है और कहता है: “तुम कठोरता और गर्मी की शक्ति पर इतना भरोसा करते हो, फिर भी वे ईश्वरीय आदेश का पालन करते हैं।

इसीलिए पौधे की जड़ों का हर कोमल रेशा मूसा की लाठी की तरह आज्ञा का पालन करता है: और हमने कहा: “ऐ मूसा, अपनी लाठी से चट्टान पर वार करो” (2:60) और चट्टान में घुस जाओ। हर नाजुक, कागज़ की तरह पतला पत्ता, इब्राहीम के अंगों में से एक की तरह, तीव्र गर्मी की अवहेलना करते हुए कहता है: ऐ आग, शीतलता और शांति हो (21:69)।

सभी चीज़ें अपने अंदर बिस्मिल्लाह कहती हैं और अल्लाह के नाम से उसकी नेमतें हम तक पहुँचाती हैं। इसी तरह हमें भी बिस्मिल्लाह कहना चाहिए, उसके नाम पर देना और लेना चाहिए, और उनसे कुछ भी स्वीकार नहीं करना चाहिए जो अल्लाह के नाम पर नहीं देते।

प्रश्न: हम लोगों को उनके द्वारा लाए गए सामान के लिए भुगतान करते हैं, भले ही वे केवल “ट्रे-वाहक” हों।

उनका सच्चा स्वामी, परमेश्वर हमसे क्या प्रतिफल चाहता है?

जवाब: हमें जो भी अनमोल वरदान और वस्तुएं प्राप्त हैं, उन सभी के सच्चे दाता को तीन चीजों की आवश्यकता है: स्मरण, धन्यवाद और चिंतन। शुरू में बिस्मिल्लाह कहना स्मरण का एक तरीका है, और उनके अंत में अल-हम्दु लिल्लाह (प्रशंसा और ईश्वर का धन्यवाद) कहना धन्यवाद का एक तरीका है।

चिंतन का अर्थ है सदैव सचेत रहना और उन बहुमूल्य और सरल उपहारों के बारे में सोचना जो हमें अनन्त-प्रार्थना-की-सभी-की-शक्ति के चमत्कारों और उनकी दया के उपहारों के रूप में प्राप्त होते हैं।

अगर आप किसी ऐसे व्यक्ति का हाथ चूमते हैं जो आपके लिए कोई कीमती उपहार लेकर आया है, लेकिन असली भेजने वाले (राजा) को नहीं पहचानते, तो आप बहुत बड़ी गलती कर रहे हैं। असली उपहार देने वाले को भूलकर, उपहार देने वाले की प्रशंसा करना और उससे प्यार करना, इससे भी ज़्यादा बुरा है। हे आत्मा! अगर तुम ऐसी मूर्खता से बचना चाहते हो, तो भगवान के नाम पर दो और पाओ। शुरू करो और अंत तक भगवान के नाम पर ही काम करो। यही तुम्हारे लिए काफी होगा।

चौदहवीं चमक का दूसरा स्टेशन

मैं बसमाला के असंख्य रहस्यों में से छह का विस्तार से वर्णन करता हूँ : दयालु ईश्वर के नाम पर,

दयालु।4 हालाँकि यह विशेष रूप से मेरे लिए कहा गया है, मैं इसे "चौदहवीं किरण का दूसरा चरण" कहता हूँ। यह उन लोगों को लाभ पहुँचाए जिनके साथ मैं आध्यात्मिक रूप से जुड़ा हुआ हूँ और जिनकी आत्माएँ मुझसे ज़्यादा समझदार हैं। यह तर्क दिमाग के बजाय दिल को छूता है, और तर्कसंगत प्रमाणों पर विचार करने के बजाय आत्मा को संतुष्ट करने का प्रयास करता है।

ईश्वर के नाम पर, जो दयालु,
कृपालु है।

> [रानी] ने कहा: "सरदारों, यहाँ मुझे सम्मान के योग्य एक पत्र दिया गया है। यह सुलैमान की ओर से है, और यह है: ईश्वर के नाम से, जो दयालु, कृपालु है।" (27:29-30)

पहला रहस्य: ब्रह्मांड, पृथ्वी और मानवता के चेहरे पर प्रभुता के तीन चिह्न अंकित हैं। वे एक दूसरे के भीतर हैं, और प्रत्येक में दूसरे का एक नमूना है:

देवत्व: हम इसे इस प्रकार देखते हैं कि किस प्रकार सभी संस्थाएं

ब्रह्मांड में एक दूसरे की मदद और सहयोग करें, और

[4] दिव्य दया से संबंधित बासमाला से एक उज्ज्वल प्रकाश ने दूर से मेरे मंद मन को छुआ। मैं इसे नोट्स के रूप में रिकॉर्ड करना चाहता था और फिर "रहस्यों" के 20 से 23 खंडों में इसके प्रकाश को इकट्ठा करना चाहता था। अफसोस, मैं अभी तक ऐसा नहीं कर पाया हूं, और मेरे 20 से 30 को घटाकर 6 कर दिया गया है।

उनकी सामान्य अंतर्संबंधता और पारस्परिकता। संदर्भ है ईश्वर के नाम पर।

ईश्वरीय दयालुता: हम इसे पारस्परिकता में देखते हैं-

समानता और रूप की समानता, व्यवस्था और सामंजस्य, तथा पौधों और जानवरों के निपटान, पालन-पोषण और प्रशासन में अनुग्रह और करुणा। संदर्भ दयालु है, इन द नेम ऑफ गॉड, द मर्सीफुल में।

दिव्य करुणा: हम इसे सूक्ष्मता में देखते हैं

ईश्वरीय अच्छाई, ईश्वरीय सौम्यता के नाजुक समायोजन, और हमारे अपने व्यापक स्वभाव के चेहरे पर ईश्वरीय करुणा के प्रकाश का बिखराव। संदर्भ दयालु है , ईश्वर के नाम पर, दयालु, दयालु ।

इस प्रकार बासमाला दिव्य एकता के तीन मोहरों की पवित्र अभिव्यक्ति है। वे ब्रह्मांड के पृष्ठ पर एक चमकदार रेखा, एक मजबूत आधार और एक सुनहरा धागा बनाते हैं। हमारे ऊपर से प्रकट, बासमाला की नोक मानवता पर टिकी हुई है, ब्रह्मांड और उसके फल का एक लघु रूप। बासमाला दुनिया को जोड़ती है

यह ईश्वरीय सिंहासन तक पहुंचने का मार्ग है और वहां तक हमारे आरोहण के लिए सीढ़ी है।

दूसरा रहस्य: ईश्वरीय एकता व्यक्तिगत प्राणियों की असीम बहुलता में स्पष्ट है।

ताकि यह बात एक साथ हमारे मन पर हावी न हो जाए,
कुरान, व्याख्या का एक चमत्कार होने के नाते, एकता के भीतर एकता[5] की अभिव्यक्ति को लगातार दोहराता है -
सभी प्राणियों पर एक दिव्य नाम का प्रकटीकरण।

इस उदाहरण पर विचार करें: सूर्य अपने प्रकाश में असंख्य चीजों को समाहित कर लेता है। लेकिन समग्रता को बनाए रखने के लिए हमारे मन में इसके प्रकाश को स्थापित करने के लिए, हमें एक विशाल वैचारिक और बोधगम्य शक्ति की आवश्यकता होगी। इसलिए सूर्य को भुलाया न जाए, सभी चमकती हुई वस्तुएं इसके गुणों (प्रकाश) को प्रतिबिंबित करती हैं और गर्मी) जितना संभव हो उतना अच्छा है और इस प्रकार इसकी उपस्थिति को प्रकट करते हैं सूर्य। यह अभिव्यक्ति पारस्परिक है, उन लोगों के लिए गुण (ताप, प्रकाश और रंग स्पेक्ट्रम) उन वस्तुओं को घेरे रहते हैं जो सूर्य के सम्मुख होती हैं।

जिस प्रकार ईश्वर की एकता, उसका शाश्वत अस्तित्व प्रार्थना की जाती है, और उसके दिव्य नाम प्रकट होते हैं सब कुछ, विशेष रूप से संवेदनशील प्राणियों में और विशेष रूप से हमारे दर्पण-जैसे स्वभाव में, प्रत्येक दिव्य नाम प्राणियों से संबंधित सभी प्राणियों को शामिल करता है ईश्वरीय एकता। इस प्रकार कुरान लगातार इस बात पर जोर देता है हमारा ध्यान दिव्य एकता के भीतर दिव्य एकता की मुहर की ओर है, ताकि हमारा मन इससे अभिभूत न हो जाए एकता और हमारे दिल शुद्ध के प्रति लापरवाह हो जाते हैं

---

[5] एकता: दिव्य नामों की अभिव्यक्ति का संकेन्द्रण-

एक बात पर ध्यान केन्द्रित करना।

और पवित्र सार। बासमाला तीन को इंगित करता है
दिव्य एकता की मुहर के महत्वपूर्ण पहलू।

तीसरा रहस्य: ईश्वरीय दया से ब्रह्मांड आनंदित होता है। यह प्रकाश और जीवन की चिंगारी देता है
अंधकारमय संस्थाओं के लिए, और जीवों का पोषण और उत्थान करता है
अपनी अंतहीन ज़रूरतों से जूझते हुए। यह ब्रह्मांड को मानवता की ओर
निर्देशित करता है, ठीक वैसे ही जैसे एक पेड़
यह अपने फल की ओर निर्देशित है, और हमारी सहायता के लिए तत्पर है।
यह असीम स्थान को भरता है और उसे प्रकाशित करता है, अन्यथा शून्य और खाली दुनिया को आनंदित करता है।
क्षणभंगुर मानवता, दिव्य दया भी अनंत काल और संबोधित प्राणी के पद को नियुक्त करती है और
उस एक के प्रिय, अनंत काल से पहले और बाद में शाश्वत।

चूँकि ईश्वरीय दया एक बहुत शक्तिशाली सत्य है, इसलिए
आमंत्रित, सौम्य, सहायक और प्रेम के योग्य, कहो :
ईश्वर का नाम, जो दयालु, कृपालु है।
इस सत्य को थामे रहो, और अंतहीन वीरानी और ज़रूरत से बच जाओ।
सर्वशक्तिमान, शाश्वत के निकट आओ
अनंत काल से पहले और बाद में, और वह बन गया जो वह है
संबोधित करता है, मित्रता करता है, और प्यार करता है।

सभी संस्थाएं मानवता के चारों ओर क्यों एकत्रित होती हैं?
उद्देश्य और दूरदर्शिता, और हमारी आवश्यकताओं को पूरा करने में तेजी
पूर्ण व्यवस्था और शालीनता के साथ? क्या वे हमें पहचानते हैं और इसलिए
हमारी मदद करने के लिए दौड़ते हैं - भले ही यह तर्कहीन हो,
कई मायनों में असंभव है? या हम, जो

कोई शक्ति नहीं, क्या हमारे पास सबसे शक्तिशाली, पूर्ण संप्रभु की शक्ति है? या क्या यह मदद दृश्यमान ब्रह्मांड के पर्दे के पीछे एक परम शक्तिशाली की पहचान के माध्यम से हम तक पहुँचती है? दूसरे शब्दों में, सभी सत्ताएँ हमें पहचानती हैं क्योंकि वह एक, सर्वज्ञ और दयालु, हमसे परिचित है और हमें पहचानता है।

इस पर विचार करें: वह सर्वशक्तिमान परमेश्वर, जो सभी प्राणियों को आपकी सहायता के लिए अपने हाथ आगे करके आपकी ओर मोड़ता है, वह आपकी आवश्यकता होने पर आपको कैसे नहीं जान सकता, देख नहीं सकता या आपके बारे में नहीं जान सकता? वह आपको सिखाता है कि वह अपनी दया के माध्यम से आपको जानता है। इसलिए उसे जानो, और श्रद्धापूर्वक दिखाओ कि तुम जानते हो। दृढ़ विश्वास के साथ समझो कि ईश्वरीय दया का सत्य ब्रह्मांड को तुम्हारी सेवा के अधीन करता है, भले ही तुम एक तुच्छ, क्षणभंगुर, पूरी तरह से कमजोर, शक्तिहीन और जरूरतमंद प्राणी हो।6

ऐसी दया के लिए पूर्ण और सच्ची कृतज्ञता के साथ-साथ ईमानदार और उत्कट श्रद्धा की भी आवश्यकता होती है। कहो: दयालु, दयावान ईश्वर के नाम से, जो ऐसी भावनाओं को व्यक्त और व्याख्या करता है। इसे उसकी दया में प्रवेश का साधन बनाओ, दयालु के दरबार में एक सिफ़ारिश करनेवाला और वकील बनाओ।

---

6 ईश्वरीय दया में (ईश्वरीय) बुद्धि, अनुग्रह, ज्ञान और शक्ति भी सम्मिलित हैं।

दिव्य दया की उपस्थिति और वास्तविकता सूर्य की तरह स्पष्ट है। ताने-बाने को व्यवस्थित करके और क्रमबद्ध करके एक केंद्र-पैटर्न वाली टेपेस्ट्री बुनी जाती है और फिर केंद्र में इकट्ठा की जाती है। उसी तरह, दिव्य नामों को प्रकट करने से फैले चमकीले धागे ऐसी करुणा की मुहर, ऐसी कोमल सौम्यता की टेपेस्ट्री, दया की मुहर के भीतर ऐसी अच्छाई का नमूना बुनते हैं, कि यह सूर्य की तुलना में अधिक चमकदार ढंग से मन पर अंकित होता है।

वह दयालु, दयालु परमेश्वर, जो हर चीज़ को जीवन की सेवा में लगाता है; जो अपने प्रेम को प्रदर्शित करता है।

आत्म-बलिदान में करुणा, करुणा की असाधारण मधुरता, पौधों और पशुओं में मातृत्व की; जो सजीव जीवन को मानवता के अधीन करती है और इस प्रकार ईश्वर की सबसे उत्तम और प्यारी रचना के रूप में हमारी महत्ता और स्थिति को प्रदर्शित करती है।

प्रभुता के साथ-साथ उनकी दया की चमक - उस एक ने, अपनी आवश्यकता की कमी के कारण, अपनी दया को अपने संवेदनशील प्राणियों और मानवता के लिए स्वीकार्य मध्यस्थ बनाया है।

यदि तुम सचमुच मानव हो, तो कहो: “ऐ मानवता! दयालु, कृपालु ईश्वर के नाम से।”

उस मध्यस्थ को खोजो और पाओ। ईश्वरीय दया के अलावा और कुछ नहीं है जो सभी पौधों और जानवरों की प्रजातियों को जीवन देता है, उनका पालन-पोषण करता है और उनका प्रबंधन करता है। यह न तो अनदेखी करता है और न ही उन्हें नियंत्रित करता है।

एक को दूसरे के साथ जोड़ता है, लेकिन प्रत्येक को दाईं ओर उठाता है
समय और पूर्ण व्यवस्था, बुद्धि और भलाई के साथ।
यह तब दिव्य एकता की मुहर को प्रभावित करता है
पृथ्वी की सतह पर। जिस प्रकार ईश्वरीय दया का अस्तित्व है
पृथ्वी के प्रत्येक प्राणी का अस्तित्व उतना ही निश्चित है, जितना कि
प्राणी भी एक प्रमाण है.

दया और दिव्य एकता की मुहर है
पृथ्वी और मानवता की प्रकृति पर प्रभाव पड़ा है।
हम पर जो दया बरसाई गई है, वह किसी भी प्रकार से कम नहीं है।
करुणा और दया ने ब्रह्माण्ड पर अपनी छाप छोड़ी।
हमारा स्वभाव व्यापक है, क्योंकि हम बुनकर हैं
केंद्र और दिव्य नामों का केन्द्र बिन्दु।

वह जो तुम्हें यह चेहरा देता है, जो
इस पर दया की मुहर और एकता की मुहर अंकित है,
तुम्हें अपने हाल पर छोड़ दे? वह तुम्हें कैसे महत्वहीन समझ सकता है, तुम्हारी परवाह नहीं कर सकता
क्रियाएँ, और इसलिए सारी सृष्टि बनाते हैं, जो निर्देशित है
तुम्हारे प्रति, व्यर्थ और बेकार? वह कैसे बना सकता है
सृष्टि का वृक्ष बेकार और सड़ चुका है
क्या वह अपनी दया को अस्वीकार कर देगा जब
यह सूर्य और उसकी बुद्धि की तरह स्पष्ट है, जो
क्या यह प्रकाश की तरह स्पष्ट है? इनमें से किसी पर भी संदेह नहीं किया जा सकता और न ही इनमें कोई दोष माना जा सकता है।

आप ईश्वरीय दया के सिंहासन पर चढ़ सकते हैं
दयालु, दयावान, दयालु ईश्वर के नाम से

प्रत्येक कुरानिक सूरा (अध्याय) की शुरुआत , सभी सार्थक पुस्तकों और अच्छे कार्यों को देखकर इसके महत्व को समझें । इस वाक्यांश की महानता, उनके द्वारा निर्धारित महानता के लिए एक स्पष्ट तर्क इमाम शाफई की टिप्पणी है : "हालाँकि बस-माला एक ही आयत है, इसे कुरान में 114 बार उतारा गया है।"

चौथा रहस्य: ईश्वरीय एकता असीम बहुलता [व्यक्तिगत प्राणियों] के भीतर प्रकट होती है। यह कहना कि हम केवल आपकी ही आराधना करते हैं (1:5) पर्याप्त नहीं है, क्योंकि हमारा मन [वास्तविकता से] भटक जाता है।

हमारे हृदय को पृथ्वी जितना ही व्यापक होना होगा ताकि हम परमेश्वर के पीछे स्थित उस एकत्व को देख सकें।

व्यक्तिगत संस्थाओं की समग्रता में एकता, और फिर कहें: हम सिर्फ़ आपकी ही पूजा करते हैं, और सिर्फ़ आपसे ही सहायता चाहते हैं (1:5)। इस प्रकार, ईश्वरीय एकता की मुहर सभी संस्थाओं के मन और प्रजातियों पर स्पष्ट होनी चाहिए, ठीक वैसे ही जैसे प्रत्येक व्यक्तिगत संस्था पर।

---

7 अल-शफीई (मृत्यु 820): मुस्लिम कानूनी विद्वान, शफीई कानूनी स्कूल के संस्थापक। उन्होंने इस्लामी कानूनी विचारों का एक नया संश्लेषण विकसित किया। अधिकांश विचार पहले से ही परिचित थे, लेकिन उन्होंने उन्हें एक नए तरीके से संरचित किया। उन्होंने मुख्य रूप से इस बात पर चर्चा की कि इस्लामी कानून के स्रोत क्या थे और उन्हें समकालीन घटनाओं पर कानून द्वारा कैसे लागू किया जा सकता है। उनके जीवन के अंतिम 5 वर्षों के दौरान लिखी गई उनकी अल-रिसाला उन्हें "मुस्लिम न्यायशास्त्र का जनक" कहलाने का हकदार बनाती है। (संपादक)

इसके अलावा, उन्हें अपने प्रभु यीशु मसीह को भी याद रखना चाहिए। एकता। यह आवश्यकता दिव्य एकता द्वारा पूरी होती है ईश्वरीय दया की मुहर के भीतर दिखाया जा रहा है। परिणामस्वरूप, हर स्तर पर हर कोई शुद्ध की ओर मुड़ सकता है और पवित्र परमेश्वर को नमन करते हुए, और यह कहते हुए कि: केवल तेरी ही हम उपासना करते हैं, और केवल तुझ से ही सहायता मांगते हैं (1:5), सीधे उससे बात करो।

इस महान रहस्य को व्यक्त करने और इंगित करने के लिए ईश्वरीय दया की मुहर, सर्व-बुद्धिमान कुरान अचानक व्यक्तिगत विवरण को समग्रता, छोटेपन के साथ जोड़ता है बड़े के साथ, विशेष के साथ सामान्य। रोकने के लिए मन को भटकने से और दिल को डूबने से बचाओ, आत्मा को उसकी सच्ची आराधना की वस्तु खोजने की अनुमति देना सीधे तौर पर, यह हमारी रचना और जैसे विषयों को सामने लाता है बोलते हुए, एहसान और ज्ञान का बारीक विवरण हमारे फीचर में, के निर्माण का उल्लेख करते हुए स्वर्ग और पृथ्वी। यह सत्य चमत्कारिक रूप से दिखाया गया है और उसकी निशानियों में से है आकाशों और धरती की रचना और तुम्हारी भाषाओं का विभिन्नता से प्रयोग करना। और तेरे रंगों में (30:22).

असंख्य प्राणियों और असीम बहुलता के भीतर दिव्य एकता की छाप विभिन्न प्रकार और डिग्री की है। वे सबसे बड़े से लेकर सबसे छोटे तक संकेन्द्रित वृत्तों की तरह हैं। लेकिन एकता चाहे जितनी भी स्पष्ट हो, यह अभी भी बहुलता के भीतर एकता है और इसे पर्यवेक्षकों द्वारा सही ढंग से संबोधित नहीं किया जा सकता है।

इस प्रकार एकता के पीछे दिव्य एकता की छाप होनी चाहिए, ताकि वैयक्तिकता बहुलता को ध्यान में न लाए, और ताकि शुद्ध और पवित्र एक के समक्ष सीधे हृदय तक जाने का मार्ग खुल सके।

इसके अलावा, दिव्य एकता की मुहर पर एक अत्यंत आकर्षक डिजाइन, चमकदार प्रकाश, मनभावन मिठास, मनभावन सौंदर्य और शक्तिशाली सत्य रखा गया है ताकि हमारा ध्यान और दिल उस ओर आकर्षित हो सके। दया की शक्ति संवेदनशील प्राणियों का ध्यान खींचती है और उन्हें अपनी ओर आकर्षित करती है। यह उन्हें एकता की मुहर प्राप्त करने, उसकी एकता में एक की सेवा करने और इस तरह से सच्चे पते को प्रकट करने में सक्षम बनाती है: केवल आपकी ही हम पूजा करते हैं, और केवल आपसे ही सहायता मांगते हैं (1:5)।

इस प्रकार , दयालु, कृपालु ईश्वर के नाम से, प्रारंभिक अध्याय (सूरत अल-फातिहा) की अनुक्रमणिका और कुरान का सार, इस महान रहस्य का संकेत और व्याख्याकार है।

जो कोई इसे प्राप्त कर लेता है, वह ईश्वरीय दया के स्तरों से ऊपर उठ सकता है; जो कोई इसे बोलने के लिए प्रेरित करता है, वह ईश्वरीय दया के रहस्यों को जान सकता है और ईश्वरीय करुणा और दया की रोशनी देख सकता है।

पांचवां रहस्य: एक परंपरा है[8] जो इस प्रकार है
कि ईश्वर ने मानवता को सर्वज्ञ के रूप में बनाया है।

---

8 अरबी शब्द हदीस, जिसका सामान्यतः अंग्रेजी में अनुवाद होता है
परंपरा का शाब्दिक अर्थ है "समाचार, कहानी, संचार या बातचीत"।

दयालु। कुछ लोगों द्वारा इसकी अतिशयोक्तिपूर्ण व्याख्या
सूफी विश्वास के मूल सिद्धांतों के अनुरूप नहीं है।9

कुछ परमानंदी सूफियों का दावा है कि हमारी आध्यात्मिक प्रकृति
“अत्यंत दयालु के रूप में है।” उनके में डूबा हुआ

भ्रमित करने वाली चिंतनशील समाधि, वे हो सकते हैं
गलत विचार व्यक्त करने के लिए माफ़ किया जा सकता है। अगर दूसरे लोग
ऐसे विचारों को स्वीकार्य मानते हैं, तो वे भी गलत हैं।

शुद्ध और पवित्र ईश्वर, जो ब्रह्मांड को इतनी आसानी से आदेश और
प्रशासित करता है जैसे कि यह एक महल या
एक घर, जो आकाशगंगाओं को ऐसे घुमाता है जैसे वे कण हों और उन्हें अंतरिक्ष
में यात्रा के लिए भेजता है
बुद्धि और कृपा, जो छोटे से छोटे कण को भी आज्ञाकारी अधिकारी की तरह
भेजती है, उसकी बराबरी कोई नहीं कर सकता।
या मैच, कोई साथी या विपरीत नहीं। के अनुसार: वहाँ

चाहे धार्मिक हो या धर्मनिरपेक्ष, ऐतिहासिक हो या हालिया।
कुरान में यह शब्द धार्मिक (39:23, 68:44), धर्मनिरपेक्ष या
सामान्य (6:68), ऐतिहासिक (20:9), और वर्तमान या संवादात्मक
(66:3) संदर्भ। उदाहरण के लिए, पैगम्बर ने इसे इसी तरह के अर्थ में इस्तेमाल किया, जब उन्होंने कहा:
"सबसे अच्छी हदीस कुरान है" (बुखारी)।
हालाँकि, मुहद्दिथिन (परंपरावादी [परंपराओं के विद्वान])
बता दें कि इस शब्द का अर्थ है "जो प्रसारित किया गया था
पैगम्बर का अधिकार, उनके कार्य, कथन, मौन स्वीकृति या उनके शारीरिक स्वरूप का वर्णन।" न्यायविद
इस अंतिम कथन को शामिल नहीं करते।
उनकी परिभाषा में आइटम. (ट्र.)

9 सूफीवाद: एक आध्यात्मिक इस्लामी विश्वास और अभ्यास जिसमें मुसलमान
ईश्वरीय प्रेम और ज्ञान को पाने के लिए विशेष तरीकों का इस्तेमाल किया जाता है। पश्चिम में इसके
अनुयायी सूफी के नाम से जाने जाते हैं। (संपादक)

उसके समान कुछ भी नहीं, और वह सब कुछ सुननेवाला है,
वह सर्वज्ञ है (42:11), उसका कोई रूप, समानता या स्वरूप नहीं है
कोई भी चीज़ उससे मिलती जुलती या मिलती जुलती नहीं है।
दूसरी ओर, इसके अनुसार: और आकाशों और धरती में उसकी तुलना सबसे अधिक है, और वह सर्वोच्च है
सर्वशक्तिमान सर्वशक्तिमान (30:27) में मानवता रूपक और तुलना के माध्यम से उसके कार्यों, गुणों और नामों को समझ सकती है। इस प्रकार परंपरा का उद्देश्य
इसका अर्थ है: "मानवता का रूप, अपनी समग्रता में, प्रतिबिंबित करता है
वह ईश्वरीय नाम जो अत्यंत दयालु है।

यह दिव्य नाम सभी के प्रकाश से स्पष्ट है
ब्रह्माण्ड और पृथ्वी पर प्रकट हुए नाम
ईश्वर की पूर्ण सत्ता के असंख्य प्रमाणों के माध्यम से
प्रभुता। उसी तरह, दयालु भगवान हमारे व्यापक स्वरूप में, लघु रूप में, पूर्ण रूप से प्रकट होते हैं।
रूप।

एक और संकेत इससे प्राप्त हो सकता है
निम्नलिखित सादृश्य: चेतन सृष्टि और मानवता
अनिवार्य रूप से विद्यमान के साक्ष्य के स्थान हैं
एक, दयालु और दयावान के लिए प्रमाण और दर्पण। ये प्रमाण इतने निश्चित और स्पष्ट हैं,
और यह स्पष्ट है कि जैसे हम कह सकते हैं कि दर्पण
सूर्य को प्रतिबिंबित करने वाला "(या जैसा) रूप है
सूर्य" (सूर्य के शानदार सबूत पर जोर देते हुए)
प्रकाश), हम यह भी कह सकते हैं: "मानवता में सर्व-

दयालु का रूप," हमारे भीतर स्पष्ट प्रमाण पर जोर देते हुए, और उसमें, दयालु के संबंध की पूर्णता पर जोर देते हुए। इसलिए, अस्तित्व की एकता में अधिक उदार और संतुलित विश्वासियों ने कहा: "उसके अलावा कोई अस्तित्व नहीं है," प्रमाण की स्पष्टता और संबंध की पूर्णता को व्यक्त करते हुए।

हे ईश्वर, हे सर्व-दयालु, सर्व-करुणामय। दयालु, दयावान ईश्वर के नाम पर सत्य के माध्यम से , अपने दयालु होने के अनुसार हम पर दया करें। अपने दयालु होने के अनुसार, इस वाक्यांश के रहस्यों को हमारी समझ के लिए खोलें। आमीन।

छठा रहस्य: हे दुखी मानवता जो असीम नपुंसकता और अंतहीन ज़रूरतों के बोझ तले दबी हुई है। एक साधन और मध्यस्थ के रूप में दिव्य दया के महत्व को समझें। यह एक शानदार प्रभुसत्ता का साधन है जिसकी सेना में विशाल आकाशगंगाएँ और सूक्ष्म कण पूर्ण आज्ञाकारिता और सामंजस्य के साथ मिलकर सेवा करते हैं। वह शानदार प्रभुसत्ता, एक, अनंत काल से पहले और बाद में शाश्वत, अनंत काल से प्रार्थित है - हर चीज़ को उसकी ज़रूरत है जिसकी कोई ज़रूरत नहीं है।

वह असीम रूप से समृद्ध है और उसे ब्रह्मांड या उसके अस्तित्व की आवश्यकता नहीं है। सब कुछ उसके अधिकार और निर्देशन के अधीन है, उसकी महिमा और महानता के समक्ष आज्ञाकारी है, उसकी महानता के समक्ष भयभीत और नतमस्तक है।

यह ईश्वरीय दया है, और यह आपके लिए है। यह आपको बिना किसी ज़रूरत के एक ऐसे शाश्वत प्रभु की उपस्थिति में ले जाती है जो आपसे मित्रता करता है और आपको अपना प्रिय सेवक कहता है।

फिर भी जिस तरह आप सूर्य के करीब नहीं जा सकते, भले ही उसका प्रकाश आपके दर्पण के माध्यम से आप पर प्रतिबिंबित और प्रकट होता हो, आप शुद्ध और पवित्र के प्रकाश से असीम रूप से दूर हैं, जो अनंत काल से पहले और बाद में शाश्वत है। आप उसके करीब तब तक नहीं आ सकते जब तक कि उसकी दया का प्रकाश उसे आपके करीब न ला दे।

आप।

जो कोई इस दया को पाता है, वह अमोघ प्रकाश का शाश्वत खजाना पाता है। इस दया को सबसे महान पैगंबर, इसके सबसे शानदार उदाहरण और प्रतिनिधि, इसकी सबसे वाक्पटु आवाज़ और संदेशवाहक की सुन्नत10 के ज़रिए प्राप्त किया जा सकता है, जिसे कुरान "सारे संसारों के लिए दया" के रूप में सम्मानित करता है। उस तक ईश्वर की कृपा को अपने ऊपर बुलाकर पहुँचा जा सकता है, जिसका उद्देश्य है

---

10 सुन्ना पैगंबर के हर कार्य, शब्द और पुष्टि का रिकॉर्ड है, साथ ही इस्लामी कानून और जीवन का दूसरा स्रोत है (कुरान पहला है)। नए सिद्धांतों और नियमों को स्थापित करने के अलावा, सुन्ना कुरान में अस्पष्टताओं को स्पष्ट करता है, जो इसमें केवल संक्षेप में उल्लेखित है, निर्दिष्ट करता है कि क्या बिना शर्त है, और जो विशेष रूप से कहा गया है उससे सामान्यीकरण और जो आम तौर पर कहा गया है उससे विशेषीकरण को सक्षम बनाता है। (संपादक)

इस प्रार्थना का सार दया है। ईश्वरीय दया के जीवित अवतार के लिए दया की प्रार्थना के रूप में, यह “सभी संसारों पर दया” तक पहुँचती है।

इसलिए इस प्रार्थना का उपयोग उस तक पहुँचने के लिए करें, और उसे वह मार्ग बनाएँ जिसके माध्यम से आप सबसे दयालु दयालु की दया तक पहुँच सकते हैं। सभी मुसलमान “सभी संसारों पर दया” के लिए यह प्रार्थना करते हैं, जो दया का पर्याय है। ऐसा करना इस बात का एक शानदार प्रदर्शन है कि ईश्वरीय दया कितनी कीमती है, और इसका क्षेत्र कितना व्यापक है।

अंत में, दया के खजाने में सबसे कीमती रत्न उसका द्वारपाल है: पैगम्बर मुहम्मद। पहली कुंजी है ईश्वर के नाम पर, जो दयालु और दयावान है, और उपयोग करने की सबसे आसान कुंजी है पैगम्बर के लिए प्रार्थना करना।

> हे ईश्वर! रहस्यों के निमित्त , दयालु, कृपालु ईश्वर के नाम से, उस व्यक्ति पर, जिसे तूने अपनी दया और सम्मान के अनुसार सारे संसारों के लिए दया बनाकर भेजा है, तथा उसके परिवार और साथियों पर आशीर्वाद और शांति प्रदान कर।

> हमें दया प्रदान करें, जिससे कि हमें आपके अतिरिक्त, आपकी बनाई हुई सृष्टि में से किसी की दया की आवश्यकता न रहे।
> आमीन! आपकी महिमा हो! हमें कोई ज्ञान नहीं, सिवाय इसके कि आपने हमें जो सिखाया है। निस्संदेह, आप सर्वज्ञ, अत्यन्त तत्वदर्शी हैं।

दूसरा शब्द

संतोष का मार्ग

यदि आप जानना चाहते हैं कि अच्छाई का आनंद कैसे लिया जाए विश्वास के माध्यम से संतोष और आशीर्वाद, और कैसे पूर्णता और सहजता का अनुभव करने के लिए, निम्नलिखित दृष्टांत को सुनें:

दो लोग मौज-मस्ती और व्यापार दोनों के लिए यात्रा करते हैं। पहला व्यक्ति घमंडी और निराशावादी है, और दूसरा व्यक्ति अपने काम के लिए यात्रा करता है। इसलिए वह एक ऐसे देश में पहुँच जाता है जिसे वह सबसे दुष्ट देश मानता है। वह खुद को गरीब और निराश लोगों से घिरा हुआ देखता है जो गुंडों से परेशान हैं और बर्बाद जीवन जी रहे हैं जीवन में हर कोई एक ही दुख से ग्रस्त है। नशे के नशे में सब कुछ भूल जाने की कोशिश में वह हर किसी को अजनबी या दुश्मन मानता है। वह भयानक है लाशों और अनाथों के दर्शन, और उसकी आत्मा डूब जाती है पीड़ा में.

दूसरा व्यक्ति, ईश्वर की सेवा करने वाला, सभ्य और एक निष्पक्ष व्यक्ति एक ऐसे देश में जाता है जिसे वह बहुत अच्छा मानता है। एक सार्वभौमिक त्योहार देखकर, वह हर कोने में खुशी और आनंद मिलता है, और एक घर भगवान को याद करके बहुत प्रसन्न हो गया।

इसमें सामान्य रूप से कर्तव्यों से मुक्ति (मृत्यु) का उत्सव मनाया जाता है, साथ ही शुभकामनाओं और धन्यवाद की पुकार भी होती है।

सैनिकों की भर्ती के लिए ढोल और बैंड की आवाज़ सुनकर, जिसमें “ईश्वर सबसे महान है” और “ईश्वर के अलावा कोई ईश्वर नहीं है” की खुशी भरी आवाज़ें सुनाई देती हैं, वह खुद की और दूसरों की खुशी से खुश हो जाता है। वह एक आरामदायक व्यापार का आनंद लेता है और ईश्वर का शुक्रिया अदा करता है।

जब वह दूसरे व्यक्ति से मिलता है, तो वह अपने दोस्त की स्थिति को समझता है और कहता है: "तुम पागल हो गए हो। जो बुरी और बदसूरत चीजें तुम देखते हो, वे तुम्हारी आंतरिक दुनिया से आती हैं और उसे दर्शाती हैं। तुम हँसी को रोना समझते हो और कर्तव्यों से मुक्ति को लूटपाट समझते हो। अपने होश में आओ और अपने दिल को साफ करो, ताकि यह अशुभ पर्दा तुम्हारी आँखों से हट जाए और तुम सच्चाई को देख सको। यह एक व्यवस्थित, समृद्ध और सभ्य देश है, जिसका शासक शक्तिशाली, दयालु और न्यायप्रिय है। चीजें वैसी नहीं हैं जैसा तुम देखते या सोचते हो।" आदमी को होश आता है और वह पछतावे से भर जाता है: "हाँ, मैं उन सभी नशीले पदार्थों के कारण वास्तव में पागल हो गया हूँ। धन्यवाद। मुझे ऐसी नारकीय स्थिति से बचाने के लिए भगवान तुमसे प्रसन्न हों।"

हे मेरे प्राण! पहला व्यक्ति अविश्वासी या असावधान पापी का प्रतिनिधित्व करता है जो इस संसार को सामान्य शोक का स्थान मानता है, सभी जीवित चीजें रोती हुई दिखाई देती हैं।

अलगाव और क्षय के दर्द के कारण अनाथ हो जाना,
लोगों और पशुओं को मृत्यु द्वारा काटे गए अकेले और असभ्य प्राणियों के रूप में,
तथा विशाल जनसमूहों (पहाड़ों और महासागरों) को आत्माविहीन भयानक लाशों के रूप में दर्शाया गया है।
उसका अविश्वास और गुमराही बड़ी चिंताएँ पैदा करती हैं
जो उसे यातना देते हैं।

दूसरा व्यक्ति ईश्वर में विश्वास करता है और उसकी पुष्टि करता है सर्वशक्तिमान। वह दुनिया को एक ऐसी जगह के रूप में देखता है जहाँ लोग उसकी प्रशंसा करते हैं, लोगों और जानवरों के लिए एक अभ्यास क्षेत्र, और लोगों और जिन्न के लिए एक परीक्षा कक्ष।
जानवरों और मानवता को निष्क्रिय कर दिया जाता है ताकि बाद में
मृत्यु पर विश्वास करने वाले आध्यात्मिक आनंद में यात्रा कर सकते हैं
दूसरी दुनिया - क्योंकि इस दुनिया को आबाद होने और इसमें काम करने के लिए एक नई पीढ़ी की जरूरत है।

सभी जानवर और लोग इस दुनिया में एक निश्चित अवधि के लिए आते हैं।
सभी जीवित चीजें सैनिकों या अधिकारियों के रूप में हैं,
अपने नियुक्त कार्य से खुश। जो ध्वनि हम सुनते हैं
क्या उनकी प्रशंसा और महिमा है जैसे वे शुरू करते हैं, या उनका
काम करते समय खुशी, या जब वे काम करते हैं तो उनका धन्यवाद
विश्वासी सभी चीज़ों को आज्ञाकारी सेवकों के रूप में देखते हैं,
यह पुस्तक उनके मित्रवत अधिकारियों के लिए है, जो उनके परम उदार स्वामी और परम दयालु स्वामी की एक प्यारी पुस्तक है।

ऐसे और भी कई सुंदर, उदात्त और आनंददायक सत्य विश्वास से उत्पन्न होते हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि विश्वास

वास्तव में, यह एक टुबा वृक्ष का बीज है

स्वर्ग, जबकि अविश्वास में स्वर्ग का बीज निहित है,

जक्कुम नरक का पेड़ है। सुरक्षा और खुशहाली मिलती है

केवल इस्लाम और ईमान में ही शुक्रिया अदा करें। इसलिए हमेशा शुक्रिया अदा करें

ईश्वर से प्रार्थना करते हुए कहा: “इस्लाम और पूर्ण विश्वास के लिए ईश्वर की प्रशंसा हो।”

तीसरा शब्द

सही रास्ता चुनना

ईश्वर के नाम पर, जो दयालु, कृपालु है।

ऐ लोगो! इबादत करो... (2:21)

यदि आप प्रार्थना से मिलने वाले आनंद और लाभ को समझना चाहते हैं, तथा बुराई, अपव्यय और परमेश्वर की आज्ञाओं की अनदेखी से मिलने वाली हानि और विनाश को समझना चाहते हैं, तो इस छोटे से दृष्टांत को सुनें:

दो सैनिकों को दूर के शहर में जाने को कहा जाता है। साथ-साथ यात्रा करते हुए, वे एक चौराहे पर पहुँचते हैं और एक बुद्धिमान व्यक्ति से मिलते हैं जो कहता है: "दायाँ रास्ता जोखिम-मुक्त है, और दस में से नौ यात्रियों को बहुत लाभ होता है लेकिन कोई कठिनाई नहीं होती। बायाँ रास्ता कोई लाभ नहीं देता है, और दस में से नौ यात्रियों को बहुत नुकसान होता है। दोनों सड़कें एक ही लंबाई की हैं। लेकिन एक अंतर है: जो लोग बायाँ रास्ता लेते हैं, जिस पर कोई नियम या कोई प्रभारी नहीं है, वे बिना उपकरण या हथियारों के यात्रा करते हैं, और इसलिए वे सहज और सहज दिखते हैं। जो लोग दायाँ रास्ता लेते हैं उन्हें सैन्य नियमों का पालन करना चाहिए, अपना भोजन खुद रखना चाहिए, और हमले की स्थिति में एक भारी हथियार रखना चाहिए।"

एक सैनिक दायाँ रास्ता लेता है। अपने भारी बोझ को उठाते हुए, उसका दिल और आत्मा एक साथ किसी भी बोझिल कर्ज और भय से मुक्त हो जाते हैं। शांति से यात्रा करते हुए, शहर के लोग उसे एक ईमानदार सैनिक के रूप में देखते हैं जो अपने कर्तव्यों का पूरी तरह से पालन करता है। दूसरा सैनिक बायाँ रास्ता लेता है। कुछ भी भारी न उठाते हुए, उसका दिल और आत्मा फिर भी अनगिनत खतरों और चिंताओं से ग्रस्त है। वह लगातार भयभीत और जरूरतमंद रहता है। जब वह किसी शहर में पहुंचता है, तो उसके साथ विद्रोही और भगोड़ा जैसा व्यवहार किया जाता है।

अब, मेरी अनुशासनहीन और कामुक आत्मा, ध्यान दो। पहला सैनिक ईश्वर के आज्ञाकारी सेवक का प्रतिनिधित्व करता है; दूसरा सैनिक विद्रोहियों और अपनी इच्छा का पालन करने वालों का प्रतिनिधित्व करता है। सड़क जीवन रेखा है

आत्माओं की दुनिया से आना, इस दुनिया और कब्र से गुजरना, और परलोक की ओर बढ़ना।

भारी बोझ और हथियार पूजा और धर्मपरायणता हैं।
प्रार्थना एक कठिन काम लगता है, लेकिन वास्तव में यह अवर्णनीय शांति और आराम देता है। जो लोग प्रार्थना करते हैं वे अशहादु अन ला इलाहा इल्लल्लाह (मैं गवाही देता हूं कि ईश्वर के अलावा कोई ईश्वर नहीं है), 11 कहते हैं ।

11 इस्लामी आस्था का पेशा। जो कोई भी ऐसा कहता है, उसे मुसलमान माना जाता है, और वह इस्लाम के सभी अधिकारों और लाभों के साथ-साथ नियमों और कर्तव्यों का भी हकदार है। (संपादक)

और सर्व-प्रदाता। केवल वही हानि और लाभ पहुँचा सकता है। वह अत्यन्त बुद्धिमान है जो कोई व्यर्थ काम नहीं करता, वह दयावान है जिसकी दया और अनुग्रह प्रचुर है। ईमानवाला सिपाही प्रत्येक घटना में ईश्वर की दया के धन का द्वार देखता है और प्रार्थना के द्वारा उस पर दस्तक देता है। यह जानकर कि उसका प्रभु और पालनहार सब कुछ नियंत्रित करता है, वह उसकी शरण में जाता है।

परमेश्वर पर भरोसा रखते हुए और पूरी तरह से उसके प्रति समर्पित होकर, वह बुराई का विरोध करता है। उसका विश्वास उसे पूर्ण आत्मविश्वास देता है।

हर अच्छे काम की तरह, साहस ईश्वर में विश्वास और उसके प्रति निष्ठावान भक्ति से उत्पन्न होता है। हर बुरे काम की तरह, कायरता गलत दिशा में जाने से उत्पन्न होती है। यदि पृथ्वी फट जाए, तो ईश्वर के वे सेवक जिनके हृदय वास्तव में प्रकाशित हैं, वे भयभीत नहीं होंगे - वे इसे अनंत काल से प्रतीक्षित शक्ति का चमत्कार भी मान सकते हैं। एक तर्कवादी लेकिन अविश्वासी दार्शनिक धूमकेतु को देखकर काँप सकता है, कहीं ऐसा न हो कि वह पृथ्वी से टकरा जाए (जैसा कि कुछ अमेरिकियों ने हाल ही में हेली के धूमकेतु को देखकर किया था)।

हमारी अंतहीन मांगों को पूरा करने की क्षमता नगण्य है। हम उन कष्टों से भयभीत हैं जिनका सामना हमारी अपनी शक्ति नहीं कर सकती। हमारी शक्ति सीमित है जहाँ तक हम पहुँच सकते हैं, फिर भी हमारी इच्छाएँ और माँगें, दुख और पीड़ा, हमारी कल्पना जितनी ही व्यापक हैं।

जो लोग सत्य के प्रति पूरी तरह से अंधे नहीं हैं, वे जानते हैं कि हमारा सबसे अच्छा विकल्प ईश्वर के प्रति समर्पित होना, उसकी आराधना करना, उस पर विश्वास करना और उस पर भरोसा रखना है। एक सुरक्षित मार्ग एक खतरनाक मार्ग से बेहतर है, भले ही सुरक्षित मार्ग की थोड़ी सी संभावना हो। विश्वास का मार्ग व्यक्ति को लगभग निश्चितता के साथ अनंत आनंद की ओर सुरक्षित रूप से ले जाता है; अविश्वास और अपराध का मार्ग लाभदायक नहीं है और इसमें अनंत हानि की लगभग निश्चितता है।12 यहां तक कि इसके यात्री भी इस सत्य से सहमत हैं, जैसे कि अनगिनत विशेषज्ञ और अंतर्दृष्टि और अवलोकन वाले लोग।

इस प्रकार, दूसरे संसार के आनंद की तरह, यहाँ भी खुशी भगवान के प्रति समर्पण और उनके समर्पित सेवक होने पर निर्भर करती है। इसलिए हमेशा उनकी स्तुति करें और कहें: "आज्ञाकारिता और उनकी सफलता के लिए भगवान की स्तुति हो

हम मुसलमान हैं, इस बात के लिए हम उनका शुक्रिया अदा करते हैं।

---

12 लेखक ने अपनी पूर्ण स्वतंत्र इच्छा के सम्मान में , पूर्ण निश्चितता के विपरीत , निकट निश्चितता का प्रयोग किया है। ईश्वर को विश्वासियों को स्वर्ग में और अविश्वासियों को नरक में भेजने के लिए बाध्य नहीं किया जा सकता या ऐसा नहीं माना जा सकता, क्योंकि वह जो चाहता है, करता है। लेकिन जैसा कि उसने वादा किया था कि वह उन लोगों को पुरस्कृत करेगा जो विश्वास करते हैं और अच्छे कर्म करते हैं, स्वर्ग में अनंत आनंद के साथ, और जो विश्वास नहीं करते हैं उन्हें नरक में दंडित करेगा, वह अपना वादा पूरा करेगा। (अनुवाद)

चौथा शब्द

निर्धारित प्रार्थनाओं का मूल्य

भगवान के नाम पर,
दयालु, कृपालु.

निर्धारित प्रार्थनाएँ (सलात) इस्लाम के स्तंभ हैं। उनके महत्व को पूरी तरह से समझने के लिए, विचार करें
यह दृष्टान्त: एक शासक अपने दो सेवकों में से प्रत्येक को देता है
24 सोने के सिक्के और उन्हें एक खूबसूरत खेत में भेज देता है
यानी 2 महीने की यात्रा दूर। वह उनसे कहता है: "इसका उपयोग करें
टिकट खरीदने के लिए पैसे, सामान और अन्य चीजें
आपके आने के बाद आपको इसकी आवश्यकता होगी। यात्रा करने के बाद
दिन में, आप एक ट्रांज़िट स्टेशन पर पहुँच जाएँगे। एक तरीका चुनें
परिवहन की वह सुविधा जिसका आप वहन कर सकें।"

नौकर चले जाते हैं। स्टेशन पहुंचने से पहले थोड़ा पैसा ही खर्च करना पड़ता है, और वह भी इतनी समझदारी से कि
उसका मालिक उसे हज़ार गुना बढ़ा देता है। दूसरा नौकर स्टेशन पहुँचने से पहले 24 में से 23
सिक्के जुए में हार जाता है। पहला नौकर दूसरे को सलाह देता है

एक: "इस सिक्के का उपयोग अपना टिकट खरीदने के लिए करें, अन्यथा आपको
पैदल चलना पड़ता है और भूख से तड़पना पड़ता है। हमारे मालिक बहुत उदार हैं।
शायद वे तुम्हें माफ कर दें। शायद तुम ले जा सको
हवाई जहाज़ की ज़रूरत है, ताकि हम एक दिन में खेत तक पहुँच सकें। अगर नहीं, तो

आपको पैदल जाना होगा और 2 महीने तक कष्ट सहना होगा
रेगिस्तान पार करते समय भूख से परेशान। अगर वह अपनी भूख को नज़रअंदाज़ करता है
दोस्त की सलाह, कोई भी देख सकता है क्या होगा।

अब आपमें से जो लोग हैं, वे इसका स्पष्टीकरण सुनें।
प्रार्थना मत करो, साथ ही तुम, मेरी आत्मा जो इच्छुक नहीं है
प्रार्थना की ओर। शासक हमारा निर्माता है। एक सेवक
धार्मिक लोगों का प्रतिनिधित्व करता है जो उत्साह के साथ प्रार्थना करते हैं;
दूसरा उन लोगों का प्रतिनिधित्व करता है जो प्रार्थना करना पसंद नहीं करते।
24 सिक्के दिन के 24 घंटे हैं।
स्वर्ग, पारगमन स्टेशन कब्र है, और यात्रा कब्र से अनन्त जीवन की ओर है।
लोग कवर करते हैं
जो अपने कर्मों के अनुसार अलग-अलग समय पर यात्रा करते हैं
और आचरण। कुछ सच्चे भक्त एक दिन में ही गुजर जाते हैं
बिजली की तरह 1,000 साल, जबकि अन्य 50,000 साल पार करते हैं
कल्पना की गति से वर्षों तक। कुरान
22:47 और 70:4.13 में इस सत्य का संकेत मिलता है

टिकट निर्धारित प्रार्थना है, जो
एक घंटे में प्रार्थना की जानी चाहिए। यदि आप सांसारिक कार्यों में 23 घंटे
बिताते हैं और शेष घंटे को अपने लिए नहीं रखते हैं
निर्धारित प्रार्थनाओं का पालन न करने पर, आप एक मूर्ख हारे हुए व्यक्ति हैं।
आप अपने पैसे का आधा हिस्सा बहुत कुछ खरीदने में खर्च करने के लिए प्रेरित हो सकते हैं-

---

[१३] ... तुम्हारे रब की नज़र में एक दिन तुम्हारे हज़ार साल के बराबर है
हिसाब-किताब, और फ़रिश्ते और आत्मा उसके पास चढ़ते हैं
एक दिन, जिसका माप तुम्हारे हिसाब से ५०,००० वर्ष है,
क्रमश।

यह खेल 1,000 लोगों द्वारा खेला जाता है। आपके जीतने की संभावना 1:1,000 है, जबकि प्रार्थना करने वालों के जीतने की संभावना 99 प्रतिशत है। यदि आप एक अटूट खजाना पाने के लिए कम से कम एक सिक्का का उपयोग नहीं करते हैं, तो आपके साथ कुछ गड़बड़ है।

प्रार्थना आत्मा और मन को सुकून देती है और शरीर के लिए आसान होती है। इसके अलावा, सही इरादा हमारे कर्मों और आचरण को पूजा में बदल देता है। इस प्रकार हमारा छोटा जीवनकाल दूसरी दुनिया में अनंत जीवन के लिए व्यतीत होता है, और हमारा क्षणभंगुर जीवन एक तरह की स्थायित्व प्राप्त करता है।

पांचवां शब्द

विश्वासियों के लिए सही प्रशिक्षण

भगवान के नाम पर

दयालु, कृपालु.

> निस्संदेह अल्लाह उन लोगों के साथ है जो उससे डरते हुए उसकी अवज्ञा से बचते हैं और अच्छे कर्म करते हैं (मानो उन्होंने उसे देखा हो)। (16:128)

नीचे दिया गया रूपक यह दर्शाता है कि प्रार्थना करना और बड़े पापों से बचना कितना आवश्यक है, और यह कि दोनों कार्य सीधे तौर पर हमारी अपनी प्रकृति से संबंधित हैं:

युद्ध के दौरान, एक निजी सैनिक अच्छी तरह से प्रशिक्षित और कर्तव्यनिष्ठ होता है जबकि दूसरा एक भर्ती और अपने आप का गुलाम होता है। पहला सैनिक प्रशिक्षण अभ्यास में भाग लेता है और दुश्मन के खिलाफ संघर्ष करता है। वह कभी भी राशन और भत्ते के बारे में चिंता नहीं करता, क्योंकि वह जानता है कि सरकार आवश्यक सैन्य उपकरण, भोजन और चिकित्सा देखभाल की आपूर्ति करेगी। उसे बस युद्ध के लिए प्रशिक्षित होना है और देश के लिए लड़ना है। वह भोजन की आपूर्ति करके और रसोई में काम करके मदद करता है।

जब उससे पूछा गया कि वह क्या कर रहा है, तो उसने जवाब दिया: "राज्य के कुछ काम।" उसने यह नहीं कहा कि वह अपनी आजीविका के लिए काम कर रहा है। लेकिन दूसरा सैनिक प्रशिक्षण या लड़ाई नहीं करता, क्योंकि: "यह मेरा कोई काम नहीं है। यह एक

वह केवल अपनी आजीविका के बारे में सोचता है, और इसलिए युद्ध का मैदान छोड़कर बाज़ार चला जाता है।

पहला सैनिक उसे सलाह देता है: “भाई, तुम्हें देश के लिए लड़ने का प्रशिक्षण लेना चाहिए।

इसीलिए तुम यहाँ हो। राजा तुम्हारी ज़रूरतें पूरी करेगा, क्योंकि यही उसका कर्तव्य है। तुम समय या स्थान की परवाह किए बिना अपनी सभी ज़रूरतें पूरी नहीं कर सकते। चूँकि हम युद्ध की स्थिति में हैं, इसलिए तुम पर भगोड़ापन या विद्रोह का आरोप लगाया जा सकता है और तुम्हें सज़ा दी जा सकती है। हमारा अपना कर्तव्य है, और राजा का अपना। हम लड़ने के लिए तैयार हैं, और राजा हमारी ज़रूरतें पूरी करता है।” कल्पना कीजिए कि अगर दूसरा सैनिक अपने दोस्त की बातों को नज़रअंदाज़ कर दे, तो उसे कितनी परेशानी होगी।

हे मेरे आलसी आत्मा! युद्ध का मैदान सांसारिक जीवन की उथल-पुथल का प्रतिनिधित्व करता है। रेजिमेंटों में विभाजित सेना राष्ट्रों में विभाजित मानवता का प्रतिनिधित्व करती है।

वह विशेष बटालियन इस्लामी समाज का प्रतिनिधित्व करती है। एक सैनिक एक धर्मनिष्ठ और धार्मिक मुसलमान है जो जानता है कि उसे क्या करने के लिए कहा गया है और इसलिए वह अपने आप और शैतान के खिलाफ संघर्ष करता है। दूसरा सैनिक एक पापी है जो

वह सेवक के रूप में अपने कर्तव्यों की उपेक्षा करता है, अनेक पाप करता है, तथा अपने राशन और भत्ते के प्रति इतना आसक्त हो जाता है कि वह सच्चे पालनहार पर भी आरोप लगाता है।

प्रशिक्षण दैनिक प्रार्थनाओं और विश्वासियों से अपेक्षित अन्य कर्तव्यों का प्रतिनिधित्व करता है। युद्ध का अर्थ है

वह प्रक्रिया जिसके माध्यम से आत्मा शाश्वतता प्राप्त करती है
मोक्ष - शारीरिक वासनाओं से लड़ना। ये दो कर्तव्य
आसानी से समझ में आ जाता है: पहला (जीवन का निर्माण और
रखरखाव) निर्माता की जिम्मेदारी है, जबकि
दूसरा (सृष्टिकर्ता और पालनहार से प्रार्थना करना)
और उस पर पूरी तरह से भरोसा करना) हमारा है।

केवल वही जो जीवन देता है, एक सबसे शानदार चमत्कार
अनन्त बेसोत की कला और एक आश्चर्य की बात है
गुरु की बुद्धि, जीवन को पोषण देती है।
आपको समझाने की ज़रूरत है? सबसे कमज़ोर और सरल जानवरों को
सबसे अच्छा खाना मिलता है। सबसे कम सक्षम और सबसे कमज़ोर
जीव, जैसे कि बच्चे या नवजात जानवर, सबसे अच्छा खाना पाते हैं।
भोजन प्राप्त करने से कोई फ़र्क नहीं पड़ता
शक्ति या स्वतंत्र इच्छा से संबंधित नहीं, बल्कि ज़रूरतमंद होने से संबंधित
और अभावों से जूझ रहे हैं। देखिए कैसे पेड़ और जानवर,
मछलियाँ और लोमड़ी, साथ ही बच्चे और युवा जानवर
और वयस्कों और जानवरों को खिलाया जाता है। इससे लोगों को यकीन हो जाना चाहिए
आप।

जो लोग अपनी दैनिक प्रार्थनाओं को अनदेखा कर देते हैं,
उनकी आजीविका उस सैनिक की तरह है जो अपनी उपेक्षा करता है
अभ्यास, भूख के डर से मोर्चे को छोड़ना, और
बाज़ार में इधर-उधर भटकता रहता है। इसके विपरीत, पृथ्वी से अपना
राशन मांगना - सर्व-उदार प्रदाता की दया की रसोई - प्रार्थना करने के
बाद और न करने के बाद

दूसरों पर बोझ डालना ठीक और उचित है। यह भी एक तरह का
पूजा का.

इसके अलावा, हमारी प्रकृति और आध्यात्मिक अस्तित्व दर्शाता है
हम भगवान की पूजा करने के लिए बनाए गए हैं। जहाँ तक हमारी शारीरिक
शक्तियों और यहाँ रहने की क्षमता का सवाल है, हम बदतर स्थिति में हैं
गौरैया से ज़्यादा सुंदर। लेकिन हमारे ज्ञान के संबंध में, हमारी ज़रूरत को समझते
हुए, और प्रार्थना और
उपासना, जो हमारे आध्यात्मिक जीवन के लिए आवश्यक है और
परलोक के जीवन में हम सभी चेतन प्राणियों के राजा और सेनापति हैं।

हे मेरी आत्मा! यदि तू इस संसार को अपना मानता है
अपना प्रमुख लक्ष्य निर्धारित करें और उसके लिए काम करें, आप केवल एक व्यक्ति ही बने रहेंगे
सैनिक जिसका आपके मामलों पर कोई नियंत्रण नहीं है
एक गौरैया। लेकिन अगर तुम आख़िरत की तरफ़ बढ़ो,
इस संसार को बोने योग्य खेत, परलोक की तैयारी समझो और उसी के अनुसार
आचरण करो।
पशु जगत का शासक, सर्वशक्तिमान ईश्वर का याचक, और उसका कृपापात्र या
कृपापात्र बन जाना
इस दुनिया में मेहमान। आप कोई भी विकल्प चुन सकते हैं।
अतः उनसे मार्गदर्शन और सफलता की प्रार्थना करें।
दयालुओं में सबसे अधिक दयालु.

छठा शब्द

सर्वोच्च लेन-देन

ईश्वर के नाम पर, जो दयालु,
कृपालु है।

निस्संदेह अल्लाह ने ईमानवालों से उनकी जान और उनके माल दोनों को जन्नत के बदले में खरीद लिया। (9:111)

अगर आप समझना चाहते हैं कि ऐसा सौदा कितना लाभदायक और सम्मानजनक है, तो निम्न दृष्टांत सुनें: एक राजा ने दो सेवकों को एक-एक संपत्ति सौंपी, जिसमें सभी आवश्यक कार्यशालाएँ, मशीनें, घोड़े, हथियार और अन्य उपकरण शामिल थे। लेकिन चूंकि यह युद्ध का समय था, जब सब कुछ अस्थिर था, इस दयालु और करुणामय राजा ने अपने सबसे महान अधिकारी को निम्नलिखित संदेश के साथ उनके पास भेजा:

मुझे सौंपी गई संपत्ति बेच दो ताकि मैं इसे तुम्हारे लिए रख सकूँ। इसे व्यर्थ में नष्ट मत होने दो। युद्ध समाप्त होने के बाद, मैं इसे पहले से बेहतर स्थिति में तुम्हें लौटा दूँगा। यह तुम्हारी ट्रस्ट की संपत्ति है, और मैं इसके लिए अधिक कीमत चुकाऊँगा। मशीनरी और औजार मेरे नाम से मेरे कार्यक्षेत्र में उपयोग किए जाएँगे। उनके उपयोग के लिए कीमत और शुल्क दोनों में वृद्धि की जाएगी, शायद एक हजार गुना। मैं सारा लाभ तुम्हें दे दूँगा। तुम कमजोर और गरीब हो, और इन महान कार्यों के लिए भुगतान नहीं कर सकते।

मैं खर्च और उपकरणों का ध्यान रखूंगा, और
आपको आय और लाभ देता है। आप इसका उपयोग तब तक कर सकते हैं जब तक
विमुद्रीकरण। इसके पाँच लाभों पर विचार करें
लेन-देन।

यदि आप मुझे संपत्ति नहीं बेचते हैं, तो इस पर विचार करें।
जो आपके पास है उसे आप सुरक्षित नहीं रख सकते, इसलिए खो देंगे
जो तुम अभी पकड़ रहे हो वह व्यर्थ हो जाएगा, और तुम
मैं आपको जो उच्च मूल्य प्रदान करता हूं उसे याद न करें। सभी नाजुक, कीमती
उपकरण और बढ़िया तराजू जो तैयार हैं
उपयोग में आने वाली धातुएँ अपना मूल्य खो देंगी, क्योंकि उनके उपयोग के लायक
कोई धातु नहीं है। आपको कोई रास्ता निकालना होगा
उन्हें प्रशासित और संरक्षित करना। इसके अलावा, आप
अपने विश्वासघात के लिए दंडित किया गया। तो विचार करें
आप कई तरीकों से हार सकते हैं।

अगर आप अपनी संपत्ति मुझे बेच देंगे तो आप
मेरा सिपाही बनो और मेरे नाम पर काम करो। महज एक सिपाही होने से कहीं दूर
चाहे आप भर्ती हों या अनियमित, आप एक महान राजा के सम्मानित और स्वतंत्र
अधिकारी होंगे।14

---

[14] कुछ लोगों को यहां खतरा नजर आ सकता है। हालांकि, यहां मानव अस्तित्व
यह मानवीय इच्छा से उत्पन्न एक वास्तविकता है। इसलिए यह इससे कहीं अधिक है
यह एक सौदा है, क्योंकि ईश्वर द्वारा हमें बनाया जाना एक शुद्ध आशीर्वाद है।
दुनिया में बहुत से लोग शिकायत करते हैं? क्या कोई है
जीवन से कौन प्यार नहीं करता? केवल वे ही जो अपनी इच्छाशक्ति का दुरुपयोग करते हैं
और अपव्यय में लिप्त जीवन के बारे में शिकायत करते हैं। कोई सच नहीं
आस्तिक शिकायत करता है। जीवन में और दुनिया में जो कुछ भी हमें पसंद नहीं है
दुनिया में जो स्थिति है वह इस तथ्य के कारण है कि हम अपनी जिम्मेदारियों की उपेक्षा करते हैं
सबसे सम्मानित प्राणी। परमेश्वर हमें बता रहा है कि हमें कैसे कार्य करना चाहिए
जीवन में और फिर हमें अनंत खुशी से पुरस्कृत करना उतना ही महान है
और अनंत काल के रूप में अनंत आशीर्वाद। अगर कुछ लोग अभी भी खतरा देखते हैं, तो वह
धमकी भी शुद्ध आशीर्वाद है, क्योंकि यह हमें सीधे रास्ते को खोजने के लिए मजबूर करती है
रास्ता अपनाओ और दोनों दुनिया में खुशी पाओ, जहाँ वादा नहीं है

जब दोनों व्यक्तियों ने यह अनुग्रहपूर्ण आदेश सुना तो उनमें से एक ने कहा: “मैं इसे बेचकर सम्मानित और खुश हूँ।
बहुत-बहुत धन्यवाद।” दूसरा व्यक्ति भी फिरौन की तरह ही घमंडी, अहंकारी, स्वार्थी और बिगड़ैल था। मानो वह हमेशा के लिए उस संपत्ति पर ही रहेगा, उसने भूकंप और कोलाहल को अनदेखा किया और कहा: “नहीं! यह राजा कौन है? मैं अपनी संपत्ति नहीं बेचूँगा या अपना आराम कम नहीं करूँगा।” थोड़ी देर बाद, पहला व्यक्ति इतने ऊँचे पद पर पहुँच गया कि हर कोई उसके पद से ईर्ष्या करने लगा। उसे राजा का अनुग्रह प्राप्त था और वह राजा के महल में खुशी-खुशी रहता था। दूसरा व्यक्ति इतना नीचे गिर गया कि हर किसी को उस पर दया आ गई लेकिन उसे एहसास हुआ कि वह अपने पद का हकदार था। अपनी गलती के परिणामस्वरूप, उसने अपनी खुशी और संपत्ति खो दी, और उसे दंड और पीड़ा झेलनी पड़ी।

अब, हे मनमौजी आत्मा, यहाँ दिखाए गए सत्य पर विचार करो। राजा सम्राट है, अनंत काल से पहले और बाद में शाश्वत, तुम्हारा भगवान और निर्माता। उसने तुम्हें जो सौंपा है वह तुम्हारे शरीर, आत्मा और हृदय, और इसी तरह, साथ ही तुम्हारी बाहरी और आंतरिक इंद्रियों (जैसे, दृष्टि, स्वाद, बुद्धि, कल्पना) का प्रतिनिधित्व करता है।

अधिकारी रसूल है; दयालु आदेश कुरान है, जिसमें कहा गया है: ईश्वर ने ईमान वालों से उनकी जान और उनकी संपत्ति खरीद ली है

कमज़ोर इरादों वाले, आध्यात्मिक रूप से भ्रष्ट, जिद्दी लोगों के लिए अपने तरीके बदलने के लिए पर्याप्त है। (ट्र.)

जन्नत के बदले में (9:111)। उफनता हुआ युद्ध का मैदान परिवर्तनशील
दुनिया की तूफ़ानी सतह है,
और हमें चिंतन करने पर मजबूर करता है।

लोग पूछते हैं: "हमारे हाथ से सब कुछ छूट जाएगा, नष्ट हो जाएगा, और
खो जाएगा। शायद इसे शाश्वत बनाने, इसे सुरक्षित रखने का कोई तरीका
हो?" ऐसे विचारों में मग्न रहते हुए,
वे अचानक कुरान की स्वर्गीय आवाज़ सुनते हैं:
"एक सुंदर और आसान तरीका है जो पाँच प्रदान करता है
लाभ या मुनाफा।" यह कौन सा तरीका है? बेचने का
अपने असली मालिक के प्रति विश्वास। परिणामस्वरूप पाँच लाभ हैं:

पहला लाभ: क्षणभंगुर संपत्ति चिरस्थायी हो जाती है। यह क्षीण जीवन,
जब शाश्वत को दे दिया जाता है
और महामहिम का आत्मनिर्भर अस्तित्व और के लिए खर्च किया
उसकी खातिर, स्थायित्व में तब्दील हो जाता है और देता है
अनन्त फल। वर्तमान जीवन के क्षण
गुठली और बीज की तरह ही ये भी गायब हो जाते हैं और सड़ जाते हैं। लेकिन फिर
खुशियों के फूल खिलते हैं राज्य में
अनंत काल का, और प्रत्येक मध्यवर्ती क्षेत्र में एक चमकदार और आश्वस्त
करने वाला पहलू प्रस्तुत करता है।

दूसरा लाभ: इसकी कीमत स्वर्ग है।

तीसरा लाभ: प्रत्येक शारीरिक अंग और शरीर का मूल्य
भावना हज़ार गुना बढ़ जाती है। उदाहरण के लिए, अगर
आप अपनी बुद्धि का उपयोग स्वयं के लिए करते हैं, यह
एक अशुभ, विनाशकारी और दुर्बल करने वाला साधन बन जाता है जो
आपको दु:ख के साथ बोझिल कर देता है

अतीत और भविष्य की भयावह आशंकाएँ। यह है
पापी लोग अक्सर नशे का सहारा क्यों लेते हैं
या अन्य तुच्छ सुख। लेकिन अगर आप अपना बेचते हैं
बुद्धि को उसके सच्चे स्वामी तक पहुंचाओ और उसकी ओर से उसका प्रयोग करो,
यह करुणा के अनंत खजाने और ज्ञान से भरे द्वार को खोलने वाली
रहस्यमयी कुंजी की तरह हो जाता है
तिजोरी, और आपको एक पवित्र और के पद तक बढ़ा देता है
शाश्वत खुशी के हकदार धर्मी मार्गदर्शक।

आँख एक खिड़की है जिसके माध्यम से आत्मा देखती है
इस संसार में। यदि आप इसका उपयोग स्वयं के लिए, क्षणभंगुर, अस्थाई
सुन्दरता और तमाशे को देखकर करते हैं,
यह वासना और अन्य शारीरिक इच्छाओं को बढ़ावा देता है। लेकिन अगर आप
इसे उसके सर्वज्ञ निर्माता को बेच दें और उसकी ओर से इसका उपयोग करें
और उसकी सीमाओं के भीतर, यह एक पाठक के पद तक बढ़ जाता है
ब्रह्मांड की महान पुस्तक,15 उसकी रचना के चमत्कारों का साक्षी, एक
धन्य मधुमक्खी जो चूसती है
इस संसार के बगीचे में दया के फूल खिलें।

यदि आप अपनी रुचि का उपयोग स्वयं के लिए तथा दूसरों के लिए करते हैं,
आपकी जीभ या पेट की खातिर, यह डूब जाता है

---

[15] सैद नूरसी के विचार में, ईश्वर ने ब्रह्मांड को एक "पुस्तक" के रूप में बनाया है
उन लोगों द्वारा “पढ़ा” जाना जो सीखना चाहते हैं और निकट आना चाहते हैं
ब्रह्माण्ड की व्यवस्था, नियमितता, अन्तर्सम्बन्ध, कार्यप्रणाली, इत्यादि उसके कुछ नाम और
गुण प्रदर्शित करते हैं।
अन्य को उसकी सृष्टि के सजीव और निर्जीव सदस्यों के माध्यम से प्रदर्शित किया जाता है,
जैसे कि सर्व-दयालु, सर्व-प्रदाता,
अत्यंत दयालु, क्षमाशील, इत्यादि (संपादक)

पेट के अस्तबल में एक द्वारपाल, उसके कारखाने में एक चौकीदार का स्तर।
लेकिन अगर आप इसे कुलीन वर्ग को बेचते हैं
प्रदाता, स्वाद की भावना एक कुशल के पद तक बढ़ जाती है
दिव्य करुणा के खजाने के घर का ओवरसियर,
शाश्वत रसोई में आभारी निरीक्षक
बेसोत की शक्ति.

हे बुद्धि, सावधान हो जा! सोचो कि क्या है एक
विनाश का साधन और सभी के लिए एक कुंजी क्या है
हे नेत्र! एक घृणित दलाल और ईश्वर के विद्वान पर्यवेक्षक के बीच अंतर देखो

पुस्तकालय! हे जीभ! अच्छी तरह से स्वाद लेकर देखो कि कौन सी भाषा में क्या अंतर है।
एक अस्तबल का द्वारपाल या एक फैक्ट्री का चौकीदार और
परमेश्वर की दया के ख़ज़ाने के ट्रस्टी!

जब आप अन्य सभी साधनों, क्षमताओं और अंगों की तुलना इनसे करते हैं, तो आप समझते हैं कि विश्वासियों को स्वर्ग के योग्य स्वभाव प्राप्त होता है और अविश्वासियों को नरक के अनुरूप स्वभाव प्राप्त होता है। प्रत्येक को अपना-अपना प्राप्त होता है।
संबंधित मूल्य। अपने विश्वास के कारण, विश्वासी इसका उपयोग करते हैं
सृष्टिकर्ता ने अपनी ओर से उन्हें क्या सौंपा है

और उसकी सीमाओं के भीतर। अविश्वासी लोग विश्वासघात करते हैं
और इसका उपयोग शारीरिक स्वार्थ के लिए करते हैं।

चौथा लाभ: आप असहाय और असुरक्षित हैं
दुर्भाग्य, दरिद्रता, असंख्य आवश्यकताओं, और
नपुंसकता। जीवन का बोझ बहुत भारी है। अगर आप ऐसा करते हैं
सर्वशक्तिमान परमेश्वर पर भरोसा मत करो, भरोसा करो

यदि आप पूर्ण विश्वास के साथ उस पर विश्वास करते हैं और उसके प्रति समर्पित होते हैं, तो आपका विवेक व्यर्थ की पीड़ा, दर्द और पश्चाताप से व्याकुल रहता है, जो आपकी समझ को नष्ट कर देता है।

अंततः आप जानवर बन जाते हैं।

पांचवां लाभ: जो सच्चे स्वरूप को उजागर करते हैं

वस्तुओं और अनुभवों के आधार पर सत्य यह है कि अपने अंगों, इन्द्रियों और क्षमताओं द्वारा की गई ईश्वर की आराधना और महिमा का प्रतिफल, सबसे बड़ी आवश्यकता के समय, स्वर्ग के फलों के रूप में मिलेगा।

यदि आप इनकार करते हैं, तो आपको निम्नलिखित पाँच गुना नुकसान उठाना पड़ेगा:

पहली हानि: आपकी प्रिय सम्पत्ति और संतान, आपका प्रिय स्व और उसकी मनमानी, आपकी मूर्खतापूर्ण रूप से प्रिय युवावस्था और जीवन, सभी का स्थान पीड़ा और पाप ने ले लिया है।

दूसरी हानि: विश्वासघात के कारण आपको दण्डित किया जाता है, क्योंकि आप सबसे मूल्यवान उपकरणों का उपयोग सबसे बेकार वस्तुओं पर करके स्वयं के साथ अन्याय करते हैं।

तीसरी हानि: अपनी बहुमूल्य क्षमताओं को पशुओं से भी निम्न स्तर तक गिराकर, आप ईश्वर की बुद्धि का अपमान और उल्लंघन करते हैं।

चौथी हानि: अपनी असहायता और गरीबी में, आप जीवन का भारी बोझ उठाते हैं और निरन्तर क्षणभंगुरता और अलगाव के आघातों से कराहते रहते हैं।

पाँचवाँ नुकसान: तुम दयालु परमेश्वर के उन उपहारों को, जो अनन्त जीवन और परलोक में धन्यता की नींव रखने के लिए इस्तेमाल किए जाने थे, कुरूपता में बदल देते हो। वे केवल तुम्हारे लिए नरक के द्वार खोलने के लिए उपयुक्त होंगे।

बहुत से लोग बेचना क्यों नहीं चाहते? क्या यह इतना कठिन है? बिलकुल नहीं! इसके परिणामस्वरूप होने वाले बोझ कठिन नहीं हैं। अनुमेय की सीमाएँ आपकी इच्छा के लिए व्यापक और पर्याप्त हैं, और इसलिए आपको निषिद्ध चीज़ों में लिप्त होने की आवश्यकता नहीं है। ईश्वर द्वारा लगाए गए कर्तव्य हल्के और कम हैं। उनका सेवक और सैनिक होना वर्णन से परे सम्मान है।

आपका कर्तव्य है कि आप एक सैनिक की तरह परमेश्वर के नाम पर सभी कार्य करें, परमेश्वर की ओर से लें और दें, तथा उसकी अनुमति और कानून का पालन करें।

यदि आप पाप करते हैं, तो उनसे क्षमा मांगते हुए कहें: “हे प्रभु, हमारे पापों को क्षमा करें और हमें अपने सेवक के रूप में स्वीकार करें।
विश्राम के समय तक हमें अपना भरोसा सौंपें-

और उससे प्रार्थना करो।

सातवाँ शब्द

मानवीय खुशी का द्वार

सर्वशक्तिमान सृष्टिकर्ता और परलोक में विश्वास
अनमोल है, क्योंकि इस तरह के विश्वास का उपयोग प्रकट करने के लिए किया जाता है
ब्रह्मांड में शांति और खुशी के द्वार खोलें। धैर्यपूर्वक
सृष्टिकर्ता पर भरोसा करते हुए, प्रदाता से विनती करते हुए
कृतज्ञता और उसकी शरण में जाना अमूल्य है
सभी बीमारियों के लिए दवाइयाँ। कुरान पर ध्यान देना, उसके नियमों का पालन
करना, प्रार्थना करना और बड़े कामों से दूर रहना
पाप हमें दस्तावेज़ और पासपोर्ट प्रदान करते हैं
अनंत काल की हमारी यात्रा के लिए आवश्यक हैं।16 वे एक प्रकाश हैं
कब्र के लिए और अगले जीवन के लिए प्रावधान।

यदि आप इस सत्य को समझना चाहते हैं तो समझिए
निम्नलिखित कहानी: एक बार एक सैनिक बीच में
एक युद्ध के मैदान में खुद को भयावह परिस्थिति में पाया

---

16 सबसे बड़े पापों में शामिल हैं ईश्वर का साझीदार बनाना, अपने माता-पिता का अनादर करना, दूसरों की संपत्ति हड़पना,
विशेष रूप से अनाथों के मामले में; सूदखोरी में लिप्त होना; जब जरूरत हो तो पीछे हट जाना
सेना का आगे बढ़ना; पतिव्रता महिलाओं पर लांछन लगाना; अपराध करना
निर्धारित दंड के साथ (जैसे, चोरी, व्यभिचार, व्यभिचार,
हत्या); कुरान या उसके आदेश के बावजूद निषिद्ध कार्यों में संलग्न होना
परम्परागत रूप से ऐसा करने पर अगले जन्म में कठोर दण्ड की धमकी दी जाती है।
जीवन; और पैगंबर द्वारा शापित कर्म। (ट्र.)

वह अपने दाएं और बाएं हिस्से पर घायल था। उसके पीछे एक शेर उसे चीरने के लिए तैयार खड़ा था, और उसके आगे उसके दोस्त और साथी थे

फाँसी पर लटकाया जा रहा है। उसके आगे निर्वासन का लम्बा रास्ता है।

एक बुद्धिमान, धर्मपरायण व्यक्ति उसके दाहिनी ओर प्रकट हुआ और बोला: "निराश मत हो। मैं तुम्हें दो अनमोल वचन दूंगा जो शेर को घोड़े की तरह हानिरहित बना देंगे और फाँसी को तुम्हारे आनंद के लिए झूले की तरह बना देंगे। मैं तुम्हें दो दवाइयाँ दूंगा जो तुम्हारे घावों को भर देंगी और उन्हें गुलाब की तरह महका देंगी। मैं तुम्हें एक टिकट भी दूंगा जिससे तुम एक दिन में कई वर्षों की दूरी तय कर सकोगे। उन्हें आज़माओ और देखो कि क्या मेरी बातें सच हैं।" सैनिक ने वैसा ही किया। उसकी बातें सच पाकर सैनिक ने उस व्यक्ति की सलाह पर विश्वास किया और उसका पालन किया।

अचानक, एक शैतान आदमी उसके बाईं ओर दिखाई दिया और बोला: "चलो मौज-मस्ती करते हैं, संगीत सुनते हैं, और ये स्वादिष्ट चीजें खाते-पीते हैं।" उसने सिपाही से पूछा कि वह क्या बड़बड़ा रहा था। सिपाही ने जवाब दिया: "एक पवित्र प्रार्थना," जिस पर आदमी ने कहा: "इन जटिल मुद्दों को छोड़ो। चलो अपना आराम बर्बाद न करें। तुम्हारे हाथ में क्या है?" सिपाही ने जवाब दिया "दवा।" आदमी ने नाक भौं सिकोड़ी: "इसे फेंक दो। तुम्हें कुछ भी बुरा नहीं है। वह क्या है?

क्या कागज पर पाँच मुहरें हैं?" जब सिपाही
जब उस आदमी ने कहा कि यह एक टिकट और राशन कार्ड है, तो उसने कहा: "फाड़ दो इन्हें! तुम इतने खूबसूरत वसंत के दिन कहीं जाने के बारे में कैसे सोच सकते हो?" यह इस तरह है
उस शैतान आदमी ने सिपाही को गुमराह करने की कोशिश की।
सैनिक अंततः उसका अनुसरण करने के लिए प्रलोभित होगा, क्योंकि वह मनुष्य है और इसलिए धोखे का शिकार हो सकता है।

अपने दाहिनी ओर, सिपाही को अचानक बिजली जैसी आवाज़ सुनाई देती है: "उठो! धोखा मत खाओ। कहो
उस शैतान से कहा: 'अगर तुम शेर को मार सकते हो, तो मार डालो। अगर तुम फाँसी हटा सकते हो, तो ऐसा करो। अगर तुम मेरी बीमारी ठीक कर सकते हो घावों को ठीक करो। अगर तुम ऐसा कर सको कि मैं ऐसा न करूँ
अगर आपको यह जगह छोड़नी पड़े, तो ऐसा करें। ये काम करें, और फिर हम अपना आनंद ले सकते हैं। अगर तुम नहीं कर सकते, तो चुप रहो!'”

वास्तविकता पर लौटें: सैनिक प्रत्येक का प्रतिनिधित्व करता है
हम में से एक। शेर हमारी मृत्यु का नियत समय है,
जबकि फाँसी का फंदा हमारे दोस्तों से निरंतर अलगाव का प्रतीक है। ये दो घाव हमारे अनंत घाव हैं।
और परेशान करने वाली नपुंसकता और हमारी गंभीर और
असीम गरीबी। लंबी यात्रा
आत्माओं की दुनिया हमारे भ्रूण के रूप में जीवन के लिए, फिर
जवानी, बुढ़ापा, कब्र में रखा जाना, जीवन
क़यामत के दिन तक क़ब्र से बाहर रहना, और अनन्त जीवन की शुरुआत के लिए
सिरात पुल से गुज़रना

परलोक। दो ताबीज हैं ईश्वर में विश्वास और परलोक।

समझें: सर्वशक्तिमान रचयिता और परलोक में विश्वास। यह अनमोल ताबीज हमें मानसिक शांति और ईश्वर की दया प्रदान करता है। शेर, उसकी अनुमति के बिना कार्य करने में असमर्थ, एक आज्ञाकारी घोड़े की तरह बन जाता है। इस प्रकार धर्मपरायण और विद्वान, जिन्हें मृत्यु की सच्ची समझ है, वे मरने से नहीं डरते और वास्तव में अपने नियत समय से पहले मरना चाहते हैं।

समय बीतने के साथ-साथ दोस्तों से बिछड़ना (मृत्यु के कारण, जिसे गैलो द्वारा दर्शाया जाता है), परलोक में विश्वास के द्वारा ईश्वर के अद्भुत कार्यों, उनकी शक्ति के चमत्कारों और उनकी करुणा के प्रकटीकरणों की निरंतर नवीनीकृत और हमेशा रंगीन कढ़ाई को देखने के साधन में बदल जाता है। यह इस तरह है: चूँकि सूर्य के प्रकाश के रंगों को प्रतिबिंबित करने वाले "दर्पण" विविध और प्रतिस्थापित होते हैं, इसलिए परिणामी दृश्य और भी अधिक सुंदर होते हैं।

पहली दवा है धैर्य और ईश्वर पर भरोसा, उसकी शक्ति पर भरोसा और उसकी बुद्धि पर भरोसा। जब हम अपनी असहायता को महसूस करते हैं और ईश्वर के स्वामी पर भरोसा करते हैं, और वह सच है , तो डरने की क्या बात है (36:82)? यहां तक कि जब हम किसी बहुत ही भयावह स्थिति और बड़ी विपत्ति का सामना करते हैं, तो भी वह कहता है: वास्तव में, हम ईश्वर के हैं और हमारा सब कुछ उसी का है।

लौटता है (2:156), और अपने परमपिता परमेश्वर पर भरोसा रखता है
अत्यंत शांति के साथ दयालु प्रभु।

इस प्रकार नेक लोग ईश्वर के सामने अपनी असहायता को समझकर संतुष्ट रहते हैं और उसके निर्णय पर आशा रखते हैं। निश्चय ही ईश्वर के भय में आनन्द है। यदि ईश्वर के भय में आनन्द है तो ईश्वर के भय में आनन्द है।
अगर एक साल के बच्चे से पूछा जाए कि उसके लिए सबसे सुखद बात क्या है, तो जवाब होगा: "सबसे सुखद होना"
अपनी माँ की गर्म गोद में सुरक्षित, सचेत
मेरी कमज़ोरी और लाचारी की - बजाय इसके कि मैं
मुझे वैसी ही सज़ा मिली जैसी मुझे उम्मीद थी।" एक माँ की करुणा के रूप में ईश्वर की करुणा की एक छोटी सी चिंगारी मात्र है, पूर्णता के लोग अपनी असहायता और ईश्वर के भय में बहुत आनंद लेते हैं। जो उनके पास है उसे त्याग देते हैं
शक्ति, वे भगवान की शरण लेते हैं और उनका डर
और लाचारी को उसके समक्ष मध्यस्थता का साधन बनाओ।

दूसरी दवा है भगवान से प्रार्थना करना
धन्यवाद और संतोष, और पर भरोसा
उदार सर्व-प्रदाता की दया। हम प्रार्थना करते हैं और भगवान
देता है। एक उदार सर्व-प्रदाता के मेहमान, जिसने पृथ्वी की सतह को एक मेज के रूप में बनाया है, कैसे हो सकते हैं
और उस मेज पर फूल रखने के लिए वसंत, संबंध
भगवान के सामने अपनी गरीबी और लाचारी को
असहनीय? वे ऐसा नहीं कर सकते थे। उनकी गरीबी और ज़रूरत
उनकी भूख बन जाती है, और इसलिए वे अपनी भूख बढ़ाने की कोशिश करते हैं

यही कारण है कि ऐसे लोग अपनी गरीबी पर गर्व करते हैं।17

अनंत काल के लिए पासपोर्ट में पाँच दैनिक प्रार्थनाएँ, अन्य दायित्वों का पालन करना और प्रमुख पापों से बचना शामिल है। सभी समझदार और विद्वान लोग इस बात पर सहमत हैं कि अनंत काल की लंबी यात्रा के लिए प्रकाश, कुछ प्रावधान और वाहन पाने का एकमात्र तरीका कुरान के नियमों और निषेधों का पालन करना है। विज्ञान, दर्शन और शिल्प कौशल अकेले बहुत मूल्यवान नहीं हैं, क्योंकि वे केवल कब्र तक का रास्ता रोशन करते हैं।

पाँचों नमाज़ों को अदा करने और सात बड़े पापों को त्यागने के महत्व और सहजता पर जितना ज़ोर दिया जाए, उतना कम है। अगर आप यहाँ सच्चाई को समझ गए, तो आप पहले से ही भटके हुए व्यक्ति और आपको भटकाने की इच्छा रखने वाले व्यक्ति की ओर मुड़ेंगे और कहेंगे: "अगर आप मौत, नपुंसकता और गरीबी को खत्म कर सकते हैं और कब्र का दरवाज़ा बंद कर सकते हैं, तो ऐसा करें। नहीं तो चुप रहें! ब्रह्मांड की सबसे बड़ी मस्जिद में, कुरान ब्रह्मांड की व्याख्या करता है, तो आइए इसे सुनें। आइए इसके प्रकाश से भर जाएँ और इसके मार्गदर्शन के अनुसार कार्य करें।

[17] गरीबी इस अर्थ में है कि भगवान सब कुछ के मालिक हैं और हमारे पास कुछ भी नहीं है। इसे अपनी सांसारिक जरूरतों को पूरा करने के लिए लोगों से भीख मांगने के साथ भ्रमित नहीं किया जाना चाहिए। (संपादक)

कुरान सत्य है, क्योंकि यह सृष्टिकर्ता की ओर से है। यह सत्य बोलता है और अपना प्रकाश सर्वत्र फैलाता है।”

ऐ खुदा, हमारे दिलों को ईमान और कुरान की रौशनी से रोशन कर। अपने मुताल्लिक हमें ग़रीब बना दे। अपने मुताल्लिक बेरुखी से हमें ग़रीब न बना। हमने तेरे लिए अपनी ताक़त और ताक़त छोड़ दी है और तेरी ताक़त और ताक़त की पनाह ली है, तो हमें उन लोगों में शामिल कर जो तुझ पर भरोसा करते हैं।

हमें अपने हाल पर न छोड़। अपनी रक्षा से हमारी रक्षा कर। हम पर और सभी ईमान वालों पर दया कर।

हमारे स्वामी मुहम्मद, आपके सेवक और पैगंबर, आपके चुने हुए और अंतरंग मित्र - आपके राज्य की सुंदरता, आपकी रचना में अग्रणी, आपके स्नेह का केंद्र और आपके मार्गदर्शन का सूर्य; आपकी प्रमाणों की जीभ, आपकी करुणा का मूर्त रूप, आपकी रचना का प्रकाश और आपकी रचनाओं में सबसे महान; आपकी रचनाओं की बहुलता के बीच आपकी एकता का दीपक; आपकी रचना के रहस्य को प्रकट करने वाला; आपके प्रभुत्व के राज्य का संदेशवाहक; जो आपको प्रसन्न करता है उसका उपदेशक; आपके नामों के खजाने का उद्घोषक; आपके सेवकों का प्रशिक्षक; आपकी निशानियों का व्याख्याता; आपके प्रभुत्व की सुंदरता का दर्पण; आपकी गवाही देने और हमें आपकी गवाही देने का वृत्त और कम्पास; आपका प्रिय और रसूल जिसे आपने संसारों के लिए दया बनाकर भेजा - और उनके परिवार और साथियों पर, उनके साथी नबियों और रसूलों पर,

आठवाँ शब्द

धर्म की आवश्यकता

ईश्वर के नाम पर, जो दयालु,
कृपालु है।

हे ईश्वर, उसके सिवा कोई पूज्य नहीं, वह सर्वव्यापक, स्वतन्त्र है। (2:255)

अल्लाह के निकट धर्म इस्लाम है। (3:19)

निम्नलिखित रूपक संसार और उसमें विद्यमान हमारी आत्मा, तथा धर्म की प्रकृति और महत्व को स्पष्ट करता है।
यह यह भी बताता है कि कैसे सच्चे धर्म का अभाव इस संसार को सबसे अंधकारमय कालकोठरी बना देता है और अविश्वासी सबसे अभागा प्राणी बन जाता है, और कैसे ईश्वर के अस्तित्व और एकता में विश्वास, साथ ही उस पर निर्भरता, ब्रह्मांड के गुप्त संकेत को खोलती है और हमारी आत्माओं को अंधकार से बचाती है।

दो भाई साथ-साथ यात्रा करते हैं। सड़क पर एक दोराहे पर पहुँचकर वे एक बुद्धिमान बूढ़े व्यक्ति को देखते हैं और उससे पूछते हैं कि उन्हें किस रास्ते से जाना चाहिए। वह उन्हें बताता है कि दायाँ दोराहा सड़क के नियमों का पालन करने की माँग करता है और एक निश्चित सुरक्षा और खुशी लाता है, जबकि बायाँ दोराहा एक निश्चित प्रकार की स्वतंत्रता के साथ-साथ निश्चितता का वादा करता है-

वह उन्हें खतरे और संकट से बचने के लिए चुनाव करने को कहता है।
सु-अनुशासित भाई, परमेश्वर पर भरोसा रखते हुए, सही रास्ता अपनाता है और कानून और व्यवस्था पर निर्भरता स्वीकार करता है।

दूसरा भाई आज़ादी की खातिर बायाँ रास्ता लेता है। वह सहज लगता है, लेकिन वास्तव में उसे कोई आंतरिक शांति महसूस नहीं होती। रेगिस्तान में पहुँचते ही उसे अचानक एक जानवर की भयानक आवाज़ सुनाई देती है जो उस पर हमला करने वाला है। वह भागता है और 60 मीटर गहरे एक जलहीन कुएँ को देखकर उसमें कूद जाता है। आधे रास्ते में वह दीवार से उगे एक पेड़ को पकड़ लेता है ताकि वह गिरना रोक सके। पेड़ की दो जड़ें हैं, दोनों को दो चूहे कुतर रहे हैं, एक सफ़ेद और दूसरा काला। ऊपर देखने पर वह देखता है कि जानवर उसका इंतज़ार कर रहा है।

नीचे देखते हुए, वह अपने पैरों के पास एक भयानक अजगर को देखता है, जिसका बड़ा मुंह उसे लेने के लिए खुला है। दीवार की ओर देखते हुए, वह देखता है कि यह कीटों से भरी हुई है। पेड़ की ओर फिर से देखते हुए, वह देखता है कि हालांकि यह केवल एक अंजीर का पेड़ है, लेकिन चमत्कारिक रूप से इस पर अखरोट और अनार जैसे कई अलग-अलग फल उग रहे हैं।

कुएँ में लटके हुए उसे समझ में नहीं आ रहा है कि आखिर हुआ क्या है। वह कल्पना भी नहीं कर सकता कि किसी ने ये सब कुछ होने दिया है, क्योंकि वह तर्क नहीं कर सकता। हालाँकि वह अंदर से परेशान है, और अपनी सारी परेशानियों के बावजूद

आत्मा और हृदय की शिकायतें, उसकी बुरी आज्ञाएँ
स्वयं दिखावा करता है कि सब कुछ ठीक है और इसलिए उनकी उपेक्षा करता है
रो रहा है। दिखावा कर रहा है कि वह मौज-मस्ती कर रहा है
एक बगीचे में, वह सभी प्रकार के फल खाने लगता है - मुफ्त में।
लेकिन उनमें से कुछ जहरीले हैं और उसे नुकसान पहुंचाएंगे।

हदीस कुदसी में ईश्वर कहते हैं: "मैं अपने सेवकों के साथ वैसा ही व्यवहार करूंगा जैसा वे मेरे बारे में सोचते हैं।"18 यह आदमी देखता है उसके लिए जो कुछ भी घटित हो रहा है उसे वह महत्वहीन समझता है, और इस प्रकार उसके लिए यही तरीका है। वह न तो मरता है और न ही अच्छी तरह से रहता है, लेकिन केवल संदेह की पीड़ा में रहता है सोचना।

बुद्धिमान और अनुशासित भाई हमेशा
अच्छाई के बारे में सोचता है, कानून की पुष्टि करता है, और सुरक्षित महसूस करता है
और मुफ़्त। सुंदर फूल और फल ढूँढना या
बगीचे में बर्बाद और बदसूरत चीजों पर, वह ध्यान केंद्रित करता है
क्या अच्छा और सुंदर है। उसका भाई नहीं कर सकता, क्योंकि
उसने खुद को बुराई में उलझा लिया है और उसे कोई राहत नहीं मिल रही
ऐसे बगीचे में। बुद्धिमान भाई उसी के अनुसार रहता है
"हर चीज़ के अच्छे पक्ष को देखो" और इसी तरह
आम तौर पर हर चीज से खुश रहता है।

रेगिस्तान में पहुंचकर जब उसकी मुलाकात एक जानवर से हुई, तो उसने डरता है। लेकिन सोचता है कि यह किसी की सेवा कर रहा होगा-

---

18 हदीस कुदसी: यह कथनों की एक विशिष्ट श्रेणी है।
पैगम्बर। शब्द तो पैगम्बर के हैं, लेकिन अर्थ पैगम्बर का है।
भगवान के लिए.

एक, वह इतना डरा हुआ नहीं है। वह एक कुएं में भी कूद जाता है और आधे रास्ते में कुछ पेड़ की शाखाओं को पकड़ लेता है। पेड़ की दो जड़ों को कुतरते दो चूहों, साथ ही नीचे ड्रैगन और ऊपर जानवर को देखकर वह खुद को एक अजीब स्थिति में पाता है।

लेकिन अपने भाई के विपरीत, वह यह अनुमान लगाता है कि सब कुछ किसी के द्वारा व्यवस्थित किया गया है और यह एक संकेत है। यह सोचकर कि उस पर नज़र रखी जा रही है और उसकी जाँच की जा रही है, वह समझता है कि उसे एक परीक्षण के रूप में और एक उद्देश्य के लिए निर्देशित और निर्देशित किया जा रहा है। उसकी जिज्ञासा जागृत हुई, उसने पूछा: "कौन मुझे उससे परिचित कराना चाहता है?" इस बीच, वह धैर्यवान और आत्म-अनुशासित रहता है। यह जिज्ञासा उसके अंदर संकेत के स्वामी के लिए प्रेम जगाती है, जो उसे संकेत को समझने, घटनाओं का क्या अर्थ है, और उसके स्वामी को खुश करने के लिए अच्छे गुण प्राप्त करने के लिए प्रेरित करती है।

उसे एहसास होता है कि पेड़ एक अंजीर का पेड़ है, हालाँकि यह कई तरह के फल देता है। अब उसे डर नहीं लगता, क्योंकि उसे एहसास होता है कि यह मेहमानों के लिए तैयार किए गए अदृश्य मालिक के फलों की एक नमूना सूची है। अन्यथा, एक पेड़ इतने सारे अलग-अलग फल नहीं देता। वह ईमानदारी से प्रार्थना करना शुरू कर देता है और परिणामस्वरूप, रहस्य की कुंजी उसके अंदर प्रेरित होती है। वह घोषणा करता है: "हे इस दृश्य और घटनाओं के मालिक, मैं आपके हाथों में हूँ। मैं आपकी शरण लेता हूँ और आपकी सेवा में हूँ। मैं आपकी स्वीकृति चाहता हूँ और

दीवार खुलती है और एक दरवाज़ा दिखाई देता है
(ड्रैगन का मुंह) एक अद्भुत, सुखद बगीचे की ओर ले जाता है। ड्रैगन और जानवर दोनों ही बन जाते हैं
दो नौकर उसे अंदर बुलाते हैं। जानवर बदल जाता है
एक घोड़ा जिसपर वह सवारी करता है।

और इसलिए, मेरे आलसी आत्मा और काल्पनिक दोस्त! चलो
उनकी स्थिति की तुलना करें और देखें कि कितना अच्छा परिणाम मिलता है
अच्छाई और बुराई बुराई लाती है। भाई जो ले गया
आत्म-विश्वास और स्व-इच्छाधारी स्वतंत्रता का बायाँ मार्ग लगभग है
ड्रैगन के मुंह में गिरना। वह हमेशा चिंतित और अकेला रहता है, और खुद को एक कैदी मानता है
जंगली जानवरों के हमलों का सामना करना पड़ रहा है। वह अपने संकट को और बढ़ाते हुए ऐसे स्वादिष्ट लेकिन वास्तव में जहरीले फल खाता है जो केवल नमूने हैं; उनका उद्देश्य नहीं है
अपने लिए नहीं बल्कि लोगों को मूल चीज़ें खोजने और उनके ग्राहक बनने के लिए राजी करने के लिए
वह अपने दिन को अंधकार में बदल देता है। वह अन्याय करता है
स्वयं अपनी स्थिति को नरक जैसी स्थिति में बदल रहा है,
ताकि वह न तो दया का पात्र हो और न ही उसे दया का अधिकार हो
शिकायत करना।

इसके विपरीत, जिस भाई ने सही रास्ता अपनाया
वह एक फलदार बगीचे में है और नौकरों से घिरा हुआ है।
वह हर अलग और खूबसूरत घटना का अध्ययन करता है
विस्मय, और खुद को एक सम्मानित अतिथि के रूप में आनंद लेते हुए देखता है
अपने उदार मेजबान के अजीब और सुंदर सेवकों से।

वह अंजीर के पेड़ के फल नहीं खाता; बल्कि, वह
उन्हें नमूना लेता है और वास्तविकता को समझते हुए स्थगित कर देता है
वह अपनी खुशी का अनुभव करता है और प्रत्याशा का आनंद उठाता है।

पहला भाई उस व्यक्ति के समान है जो अपने अनुग्रह को अस्वीकार करता है
गर्मियों में दोस्तों से घिरे बगीचे में स्थिति,
और इसके बजाय, नशे में धुत होकर, खुद को बीच में कल्पना करता है
सर्दियों में जंगली जानवरों से परेशान होकर शिकायत करता है।
अपने आप को और अपने दोस्तों का अपमान करता है, वह दया का पात्र नहीं
है। दूसरा भाई, जो जो है उसे विश्वासपूर्वक स्वीकार करता है
कानून दिया और उसका पालन करता है, देखता है और स्वीकार करता है
वास्तविकता, जो उसके लिए सुंदर है।
वास्तविकता का स्वामी, वह दया का पात्र है। इस प्रकार हम भी दया के पात्र हो सकते हैं।
आंशिक समझ प्राप्त करें: जो भी अच्छा है

जो कुछ तुम पर पड़ता है वह अल्लाह की ओर से है, और जो कुछ बुरा तुम पर पड़ता है वह अल्लाह की ओर से है।
(4:79)

भाइयों पर विचार करते हुए, हम देखते हैं कि
उसकी आंतरिक आत्मा ने उसके लिए नरक जैसी स्थिति तैयार कर दी थी, जो
उसकी वास्तविकता के प्रति दृष्टिकोण के अनुरूप थी, जबकि
दूसरे की संभावित अच्छाई, सकारात्मक इरादे, और
अच्छे स्वभाव ने उसे बहुत ही अनुकूल और खुशहाल स्थिति में पहुंचा दिया।
अब, मैं अपने भीतर के साथ-साथ अपने आप से भी कहता हूँ
पाठक: यदि आप सफलता चाहते हैं, तो कुरान के मार्गदर्शन का पालन करें।

रूपक का सार इस प्रकार है: एक भाई आस्तिक है; दूसरा अविश्वासी है।

रास्ता कुरान और ईमान का है; बायाँ रास्ता अविश्वास और विद्रोह का है। बगीचा मानव समाज और सभ्यता है, जिसमें अच्छाई और बुराई, स्वच्छता और प्रदूषण दोनों शामिल हैं। एक समझदार व्यक्ति "जो साफ और सुखद है उसे लेता है, जो गंदा और परेशान करने वाला है उसे छोड़ देता है," और शांत मन से आगे बढ़ता है। रेगिस्तान पृथ्वी है, जानवर मौत है, कुआँ हमारा जीवन है, और 60 मीटर हमारी औसत आयु 60 वर्ष है।

कुएँ में पेड़ जीवन है, इसकी जड़ों को कुतरते दो चूहे दिन और रात हैं, और अजगर कब्र का द्वार है। एक आस्तिक के लिए, यह बगीचे में खुलने वाले एक दरवाजे से ज़्यादा कुछ नहीं है। कीड़े वे परेशानियाँ हैं जिनका हम सामना करते हैं, और वास्तव में वे ईश्वर की कोमल चेतावनियाँ हैं जो विश्वासियों को लापरवाह होने से रोकती हैं।

फल इस दुनिया की नेमतें हैं जो परलोक की नेमतों के नमूने के रूप में पेश की जाती हैं, जो ग्राहकों को स्वर्ग के फलों की ओर आमंत्रित करती हैं।19 यह चिन्ह सृष्टि में ईश्वर की गुप्त इच्छा को दर्शाता है। इसे विश्वास के साथ खोला जाता है, और इसकी कुंजी है: "हे ईश्वर, वहाँ है

19 विभिन्न फलों वाला वृक्ष ईश्वरत्व की मुहर दर्शाता है, जिसका अद्वितीय गुण है “एक ही चीज़ से सब कुछ बनाना” और “सब कुछ एक ही चीज़ में बदलना”; एक ही मिट्टी से विभिन्न पौधे और फल बनाना; पानी की एक बूँद से सभी जीवित चीज़ों को बनाना; और सभी जीवित चीज़ों को एक ही तरीके से लेकिन अलग-अलग खाद्य पदार्थों के माध्यम से पोषण और पोषण देना। (ट्र.)

ईश्वर के अतिरिक्त कोई ईश्वर नहीं; ईश्वर, उसके अतिरिक्त कोई ईश्वर नहीं, वह सदा जीवित है, स्वयंभू है।”

एक भाई के लिए, अजगर का मुंह (कब्र) बगीचे (स्वर्ग) के द्वार में बदल जाता है। दूसरे के लिए, सभी अविश्वासियों की तरह, कब्र मुसीबत की जगह (नर्क) का द्वार है। जानवर एक आज्ञाकारी सेवक, एक अनुशासित और प्रशिक्षित घोड़े में बदल जाता है। दूसरे शब्दों में, अविश्वासियों के लिए मृत्यु प्रियजनों से एक दर्दनाक अलगाव है, स्वर्ग जैसी धरती को छोड़ने के बाद एक कारावास है। विश्वासियों के लिए, यह मृत मित्रों और साथियों के साथ पुनर्मिलन का एक साधन है। यह उनके शाश्वत सुख के घर जाने जैसा है, शाश्वत बगीचों में जाने का एक औपचारिक निमंत्रण, परम दयालु और कृपालु व्यक्ति द्वारा उन्हें दी गई सेवाओं के लिए दी गई मजदूरी प्राप्त करने का अवसर, और जीवन के बोझ से एक तरह की सेवानिवृत्ति।

संक्षेप में, जो लोग इस क्षणिक जीवन का पीछा करते हैं, वे खुद को नर्क में डालते हैं, भले ही वे उस जगह पर रहते हैं जो उन्हें पृथ्वी पर स्वर्ग जैसा लगता है। जो लोग अनंत जीवन की तलाश करते हैं, वे दोनों दुनिया में शांति और खुशी पाते हैं। सभी परेशानियों के बावजूद, वे भगवान का शुक्रिया अदा करते हैं और धैर्यपूर्वक निष्कर्ष निकालते हैं कि यह सब केवल स्वर्ग की ओर खुलने वाला एक प्रतीक्षा कक्ष है।

हे ईश्वर, हमें सुख, मोक्ष, कुरान और ईमान वाले लोगों में शामिल कर! आमीन। हे ईश्वर, हमें सुख, मोक्ष, कुरान और ईमान वाले लोगों में शामिल कर!

हमारे स्वामी मुहम्मद पर शांति और आशीर्वाद हो,
और उसके परिवार और साथियों पर, संख्या तक
कुरान में निहित सभी अक्षरों में से,
ध्वनि में सबसे दयालु की अनुमति
कुरान के पाठकों द्वारा पढ़े गए प्रत्येक शब्द की लहरें
समय के अंत के लिए इसका पहला रहस्योद्घाटन। दया करो
हम पर और हमारे माता-पिता पर, और सभी ईमान वालों पर उन शब्दों
की संख्या तक, आपकी दया के माध्यम से, हे परमप्रधान!
दयालुओं में सबसे दयालु। आमीन। सारी प्रशंसा परमेश्वर की हो,
सभी लोकों के स्वामी.

नौवां शब्द

विभिन्न प्रार्थना समय

ईश्वर के नाम पर, जो दयालु,
कृपालु है।

> पवित्र है अल्लाह, जब भी तुम शाम को पहुँचो और जब भी तुम सुबह को उठो। सारी प्रशंसा उसी के लिए है आकाशों और धरती में, दोपहर के बाद और जब भी तुम दोपहर को पहुँचो। (30:17-18)

आप मुझसे पूछते हैं, साथी मुसलमान, कि पाँचों रोज़ाना की नमाज़ें खास समय पर क्यों पढ़ी जानी चाहिए। मैं इसके कई कारणों में से सिर्फ़ एक कारण बताता हूँ। हर प्रार्थना का समय एक महत्वपूर्ण मोड़ की शुरुआत है, जो ईश्वरीय शक्ति के निपटान के साथ-साथ उसमें मौजूद सार्वभौमिक ईश्वरीय वरदानों का दर्पण है। हमें उन खास समयों पर प्रार्थना करने के लिए कहा जाता है ताकि सर्वशक्तिमान ईश्वर को ज़्यादा से ज़्यादा पूजा और महिमा दी जा सके, और किसी भी दो अवधियों के बीच जमा हुए वरदानों के लिए ज़्यादा से ज़्यादा धन्यवाद दिया जा सके। इस सूक्ष्म और गहन अर्थ को थोड़ा बेहतर ढंग से समझने के लिए, इन पाँच बिंदुओं पर विचार करें:

पहला बिंदु: प्रत्येक प्रार्थना का अर्थ है परमेश्वर की स्तुति, महिमा और उसके प्रति कृतज्ञता महसूस करना। हम महिमा करते हैं

हम उसकी महिमा के प्रति जागरूकता में शब्द और कर्म के साथ सुभान अल्लाह (ईश्वर की महिमा) कहकर उसे गौरवान्वित और महान करते हैं। हम उसकी पूर्णता के प्रति जागरूकता में शब्द और कर्म के साथ अल्लाहु अकबर (ईश्वर सबसे महान है) कहकर उसे गौरवान्वित और महान करते हैं। हम उसकी कृपा के प्रति जागरूकता में अपने दिल, जीभ और शरीर से अल-हम्दु लिल्लाह (सभी प्रशंसा ईश्वर की है) कहकर उसे धन्यवाद देते हैं। इससे हम यह निष्कर्ष निकालते हैं कि प्रार्थना के केंद्र में महिमा, उत्थान, प्रशंसा और धन्यवाद शामिल हैं। इस प्रकार, ये तीन वाक्यांश प्रार्थना करने वालों के सभी शब्दों और कार्यों में मौजूद हैं। इसके अलावा, प्रत्येक प्रार्थना के बाद, प्रार्थना के उद्देश्यों की पुष्टि और पूर्णता के लिए उन्हें प्रत्येक में 33 बार दोहराया जाता है। इन संक्षिप्त उच्चारणों के साथ प्रार्थना का अर्थ लगातार उच्चारित किया जाता है।

दूसरा बिंदु: हम परमेश्वर के सेवक हैं। जागरूक रहें

ईश्वरीय उपस्थिति में अपने दोषों, दुर्बलताओं और दरिद्रता को त्यागकर, हम उनके प्रभुत्व की पूर्णता, उनकी दिव्य शक्ति, जिस पर प्रत्येक प्राणी निर्भर है, तथा उनकी दिव्य करुणा के समक्ष प्रेम और भय से नतमस्तक होते हैं।

जिस प्रकार परम पावन की प्रभुता भक्ति और आज्ञाकारिता की मांग करती है, उसी प्रकार परम पावन चाहते हैं कि हम अपने दोषों को देखें और उनसे क्षमा मांगें, यह घोषणा करें कि उनमें कोई दोष नहीं है, कि परमेश्वर के झूठे निर्णय झूठे हैं।

अज्ञानी लोग अर्थहीन हैं, और वह अपने प्राणियों की सभी असफलताओं से परे है।

उनकी शक्ति की पूर्णता के लिए यह आवश्यक है कि हम अपनी कमज़ोरी और सभी प्राणियों की असहायता को समझते हुए, हमेशा से प्रार्थना करने वाले के कार्यों की महिमा के समक्ष प्रशंसा और विस्मय में घोषणा करें: "ईश्वर सबसे महान है"। विनम्रतापूर्वक झुकते हुए, हमें उनकी शरण लेनी चाहिए और उन पर अपना भरोसा रखना चाहिए। उनकी करुणा का असीम खजाना मांगता है कि हम प्रार्थना करके और उनसे मदद मांगकर अपनी और सभी प्राणियों की ज़रूरतों को घोषित करें, और हम अल -हम्दु लिल्लाह कहकर प्रशंसा और कृतज्ञता के माध्यम से उनके आशीर्वाद की घोषणा करें। संक्षेप में, प्रार्थना के शब्दों और कार्यों में ये सभी अर्थ शामिल हैं, और इसलिए उन्हें ईश्वर द्वारा आदेशित और व्यवस्थित किया गया था।

तीसरा बिंदु: प्रत्येक व्यक्ति ब्रह्मांड का एक छोटा सा हिस्सा है। इसी तरह, कुरान का पहला सूरा (अध्याय), सूरत अल-फातिहा, पूरी किताब का एक प्रकाशित लघु रूप है, और प्रार्थना सभी प्रकार की पूजा पद्धतियों को शामिल करने वाला एक उज्ज्वल सूचकांक है, एक पवित्र मानचित्र जो सभी जीवित प्राणियों द्वारा की जाने वाली पूजा के विभिन्न प्रकारों का संकेत देता है।

चौथा बिंदु: दिन और रात के क्रमिक विभाजन, साथ ही आपके वर्ष और चरण

जीवन, एक विशाल घड़ी के पहियों और लीवरों की तरह काम करता है।
उदाहरण के लिए:

फज्र (सूर्योदय से पहले) का समय इस प्रकार हो सकता है:
वसंत के जन्म तक, वह क्षण जब शुक्राणु शरण लेता है
सुरक्षात्मक गर्भ में, या लगातार 6 दिनों में से पहले दिन जिसके दौरान पृथ्वी और आकाश थे
यह याद दिलाता है कि भगवान अपनी शक्ति और
ऐसे समय और घटनाओं में कार्य करता है।

ज़ुहर (दोपहर के ठीक बाद) का समय हो सकता है
किशोरावस्था के पूरा होने, गर्मियों के मध्य या मानवता के निर्माण की अवधि के समान

दुनिया के जीवनकाल में। यह उन लोगों में भगवान की करुणामयी अभिव्यक्तियों और प्रचुर आशीर्वाद की ओर इशारा करता है
घटनाएँ और समय। 'असर (दोपहर) का समय शरद ऋतु, बुढ़ापे और अंतिम पैगंबर के समय से मिलता जुलता है
(खुशी का युग)। यह ईश्वरीय शक्ति को भी याद दिलाता है
कर्म और उनमें सर्वशक्तिमान की कृपा।

मगरिब (सूर्यास्त) का समय हमें कई बातों की याद दिलाता है
शरद ऋतु के अंत में जीवों की गिरावट और
हमारी अपनी मृत्यु। इस प्रकार यह हमें दुनिया की मृत्यु के बारे में पहले से ही आगाह कर देता है।
पुनरुत्थान की शुरुआत में विनाश, हमें सिखाता है कि भगवान की अभिव्यक्ति को कैसे समझा जाए
महामहिम, और हमें उपेक्षा की गहरी नींद से जगाता है।
'ईशा' (रात का समय) का समय दुनिया को याद दिलाता है
अँधेरे का काला आवरण, दिन की सभी वस्तुओं को ढक लेता है

कफ़न, और सर्दी ने मृत पृथ्वी की सतह को ढक रखा है
अपने सफेद कफ़न के साथ। यह मृतकों के बचे हुए कार्यों को भुलाए जाने की
याद दिलाता है, और इस ओर इशारा करता है
इस परीक्षण क्षेत्र का अपरिहार्य, पूर्ण पतन। इस प्रकार
'ईशा' उस सर्वशक्तिमान परमेश्वर के भयानक कार्यों की घोषणा करता है।

रात हमें सर्दी, कब्र, मध्यवर्ती दुनिया की याद दिलाती है, और यह भी कि
हमारी आत्मा को कितनी जरूरत है।
दयालु अल्लाह की दया। देर रात की तहज्जुद
प्रार्थना हमें याद दिलाती है और चेतावनी देती है कि यह कितना आवश्यक है
प्रार्थना की रोशनी कब्र के अंधेरे में होगी।
इन असाधारण घटनाओं के दौरान दिए गए सच्चे दाता के असीम उपहारों को याद
करते हुए, यह घोषणा करता है
वह प्रशंसा और धन्यवाद के कितने योग्य हैं।

अगली सुबह अगली सुबह की ओर इशारा करती है
पुनरुत्थान। जैसे रात के बाद सुबह होती है और
वसंत ऋतु सर्दियों के बाद आती है, इसलिए सुबह
पुनरुत्थान या “वसंत” मध्यवर्ती जीवन के बाद आता है।

प्रत्येक नियत प्रार्थना समय, प्रार्थना के प्रारम्भ का समय होता है।
यह एक महत्वपूर्ण मोड़ है तथा ब्रह्माण्ड के जीवन में महानतम क्रांतियों या
महत्वपूर्ण मोड़ों की याद दिलाता है।
अनंत काल के अद्भुत दैनिक निपटान के माध्यम से
प्रार्थना के समय हमें शक्ति की याद दिलाते हैं
दैवी शक्ति के चमत्कारों और दैवी दया के
समय या स्थान की परवाह किए बिना उपहार। इसलिए निर्धारित

प्रार्थना, जो एक जन्मजात कर्तव्य है, पूजा का आधार है, और एक निर्विवाद दायित्व है, सबसे अधिक महत्वपूर्ण है
इन समयों के लिए उपयुक्त और उपयुक्त।

पाँचवाँ बिन्दु: हम कमज़ोर बनाए गए हैं, फिर भी सब कुछ
हम पर इसका असर पड़ता है, हम पर इसका असर पड़ता है और हम दुखी होते हैं। हमारे पास कोई ताकत नहीं है, फिर भी हम विपत्तियों और दुश्मनों से पीड़ित हैं।
हम अत्यंत गरीब हैं, फिर भी हमारी बहुत सी ज़रूरतें हैं। हम आवारा और असमर्थ हैं, फिर भी जीवन का बोझ बहुत ज़्यादा है
भारी। मनुष्य होने के नाते, हम बाकी लोगों से जुड़े हुए हैं
दुनिया का, फिर भी जिसे हम प्यार करते हैं और जिससे परिचित हैं
गायब हो जाता है, और परिणामस्वरूप उत्पन्न दुःख हमें पीड़ा पहुँचाता है।
हमारी मानसिकता और इन्द्रियाँ हमें गौरवशाली उद्देश्यों और शाश्वत लाभ की ओर प्रेरित करती हैं, लेकिन हम ऐसा करने में असमर्थ हैं,
अधीर, शक्तिहीन, और केवल छोटा जीवनकाल।

यह सब देखते हुए, कई चीजें काफी स्पष्ट हो जाती हैं
स्पष्ट:

फज्र की नमाज़ ज़रूरी है, क्योंकि हमें नमाज़ अदा करनी होती है
दिन की गतिविधियाँ शुरू होने से पहले एक याचिका।
प्रार्थना और विनती के साथ हमें न्यायालय से निवेदन करना चाहिए
एक सर्वशक्तिमान, महामहिम, दयालु और कृपालु परमेश्वर की कृपा से सफलता और सहायता मिलती है।
परेशानियों को सहने और झेलने के लिए सहारे की ज़रूरत होती है
और बोझ हमारा इंतज़ार कर रहे हैं।

ज़ुहर की नमाज़ ज़रूरी है, क्योंकि यही वह समय है जब अल्लाह तआला की इबादत की जाती है।
दिन अपनी गति पूरी करने के लिए आगे बढ़ने लगता है।

लोग अपनी गतिविधियों से छुट्टी लेते हैं।
कठिन परिश्रम के कारण होने वाली असावधानी और असंवेदनशीलता से विराम लेने की आवश्यकता है, और ईश्वरीय कृपा पूर्ण रूप से प्रकट होती है। इस समय प्रार्थना करना अच्छा है, आवश्यक है,
सहमत, और उचित। यह प्रार्थना राहत देती है
दैनिक जीवन के दबाव और लापरवाही। हम खड़े हैं
सच्चे दाता की उपस्थिति में विनम्रतापूर्वक
आशीर्वाद दें, आभार व्यक्त करें, और उसकी मदद के लिए प्रार्थना करें।
हम उनकी महिमा के समक्ष असहायता प्रदर्शित करने के लिए झुकते हैं
और शक्ति, और हमारे आश्चर्य, प्रेम की घोषणा करने के लिए साष्टांग प्रणाम,
और उसकी अनन्त पूर्णता के समक्ष विनम्रता और
अतुलनीय अनुग्रह.

अस्र की नमाज़ दुखद घटना की याद दिलाती है
शरद ऋतु, वृद्धावस्था की शोकाकुल अवस्था, और
समय के अंत में कष्टदायक अवधि। दिन का
कार्य पूर्णता की ओर अग्रसर होते हैं, और ईश्वरीय कृपा प्राप्त होती है
उस दिन प्राप्त इनाम (जैसे, स्वास्थ्य, सुरक्षा, और
उनके मार्ग में अच्छी सेवा) एकत्रित होकर बन गई है
एक महान कुल। यह वह समय भी है जब सूरज ढल जाता है
दूर, यह साबित करते हुए कि सब कुछ अस्थायी है।
जो अनंत काल की लालसा रखते हैं, वे इसके लिए बनाए गए हैं और दिखाते हैं
प्राप्त उपकारों के प्रति श्रद्धा, दुःख भी होता है
इसलिए हम खड़े होते हैं, वुज़ू करते हैं और नमाज़ पढ़ते हैं।

इस प्रकार अस्र की नमाज़ पढ़ना एक महान कर्तव्य है, एक उचित सेवा है, कर्ज चुकाने का एक उचित तरीका है।

कृतज्ञता और सुखद आनंद। हम शाश्वत, शाश्वत रूप से स्वयंभू के शाश्वत दरबार में प्रार्थना करके और उसकी असीम दया में शरण लेकर, उसकी अनंत कृपाओं के लिए धन्यवाद और प्रशंसा अर्पित करके, उसके प्रभुत्व की शक्ति और महिमा के आगे विनम्रतापूर्वक झुककर और उसकी शाश्वत दिव्यता के आगे विनम्रतापूर्वक दंडवत करके मन की शांति और सच्ची सांत्वना और आत्मा की शांति प्राप्त करते हैं।

शाम हमें सर्दियों की शुरुआत, गर्मियों और शरद ऋतु के जीवों की दुखद विदाई और मृत्यु के माध्यम से प्रियजनों से हमारे दुखद अलगाव की याद दिलाती है। सूर्य का दीपक बुझ गया है, और पृथ्वी के निवासी इस दुनिया के विनाश के बाद दूसरी दुनिया में चले जाएंगे। यह उन लोगों के लिए भी एक गंभीर चेतावनी है जो क्षणभंगुर, क्षणभंगुर प्रियजनों की पूजा करते हैं, जिनमें से प्रत्येक की मृत्यु होगी।

अपने स्वभाव से, मानव आत्मा शाश्वत सौंदर्य की चाह रखती है। इस प्रार्थना के दौरान, यह शाश्वत सत्ता की ओर मुड़ती है, जो सब कुछ बनाता और ढाँचा बनाता है, जो विशाल आकाशीय पिंडों को नियंत्रित करता है। इस समय, मानव आत्मा किसी भी सीमित चीज़ पर भरोसा करने से इनकार करती है और अल्लाहु अकबर (ईश्वर सबसे महान है) चिल्लाती है। फिर, उसकी उपस्थिति में, हम उसकी दोषहीनता के बारे में जागरूकता में उसकी प्रशंसा करने के लिए अल-हम्दु लिल्लाह (सभी प्रशंसा ईश्वर की है) कहते हैं।

पूर्णता, अतुलनीय सौंदर्य और अनुग्रह, और असीम दया।

इसके बाद, यह घोषणा करके: केवल आप ही की हम आराधना करते हैं, और केवल आप ही से सहायता मांगते हैं (1:5), हम उनकी असहायता प्राप्त प्रभुता, अविभाजित दिव्यता और अविभाजित संप्रभुता की आराधना करते हैं और उनसे सहायता मांगते हैं। उनकी असीम महानता, असीम शक्ति और पूर्ण सम्मान और महिमा के आगे नतमस्तक होकर, हम बाकी सृष्टि के साथ अपनी कमजोरी और लाचारी, विनम्रता और दरिद्रता को यह कहकर प्रदर्शित करते हैं: "मेरे प्रभु, पराक्रमी की जय हो।" उनके सार की अमर सुंदरता और कृपा, उनके अपरिवर्तनीय पवित्र गुणों और उनकी निरंतर चिरस्थायी पूर्णता के प्रति जागरूकता में दंडवत करते हुए, हम उन सभी से विरक्ति के माध्यम से, जो उनसे अलग हैं, आश्चर्य और आत्म-हीनता में अपने प्रेम और दासत्व की घोषणा करते हैं। एक सर्व-सुंदर स्थायी, एक सर्व-दयालु शाश्वत को पाकर, जिसके लिए हम कहते हैं: "मेरे प्रभु, परम महान की जय हो," हम अपने परम महान प्रभु को किसी भी गिरावट या दोष से मुक्त घोषित करते हैं।

फिर हम श्रद्धापूर्वक बैठते हैं और स्वेच्छा से सभी प्राणियों की प्रशंसा और महिमा को शाश्वत, सर्वशक्तिमान और सर्व-प्रतापी को अर्पित करते हैं। हम ईश्वर से यह भी प्रार्थना करते हैं कि वह अपने पवित्र दूत पर शांति और आशीर्वाद प्रदान करें ताकि हम उसके प्रति अपनी निष्ठा को नवीनीकृत कर सकें, उसकी आज्ञाओं के प्रति अपनी आज्ञाकारिता की घोषणा कर सकें और नवीनीकृत और शक्तिशाली बन सकें-

हमारे विश्वास में। ब्रह्मांड के बुद्धिमान क्रम को देखकर,
हम सृष्टिकर्ता और मुहम्मद की एकता की गवाही देते हैं
संदेशवाहक, ईश्वर की संप्रभुता का संदेशवाहक
आधिपत्य, जो उसे प्रसन्न करता है उसका उद्घोषक, तथा ब्रह्माण्ड की पुस्तक के संकेतों या आयतों का व्याख्याकार।

यदि हम ऐसा करेंगे तो हम सच्चे मानव कैसे हो सकते हैं?
शाम की प्रार्थना क्या दर्शाती है इसका एहसास नहीं है:
सुखद कर्तव्य, एक मूल्यवान और आनंददायक सेवा,
एक अच्छी और सुंदर आराधना, एक गंभीर मामला, निर्माता के साथ एक महत्वपूर्ण बातचीत, और एक स्रोत
इस क्षणभंगुर अतिथिगृह में स्थायी सुख की क्या संभावना है?

'ईशा (रात्रि) का समय , जब रात छा जाती है
पृथ्वी हमें ईश्वर के शक्तिशाली निर्णयों की याद दिलाती है
रात और दिन को बदलने वाले के रूप में आधिपत्य। यह आह्वान करता है हमारा मन सर्वज्ञ की दिव्य गतिविधियों
सूर्य और चंद्रमा को वश में करने वाली पूर्णता की,
दिन के सफेद पृष्ठ को बदलने में देखा गया
रात के काले पन्ने पर, और उसकी गर्मियों की खूबसूरत रंगीन लिपि को सर्दियों की ठंडी में बदलते हुए
सफेद पृष्ठ। यह जीवन के निर्माता के रूप में उनके कार्यों को याद करता है
और मृत इकाई के शेष को भेजने में मृत्यु
यह हमें सृष्टिकर्ता के रूप में परमेश्वर के राजसी नियंत्रण और सुंदर अभिव्यक्तियों की याद दिलाता है
स्वर्ग और पृथ्वी का विनाश होगा, और यह संकीर्ण, नश्वर और नीच दुनिया नष्ट हो जाएगी।

यही बात परलोक की विस्तृत, शाश्वत और भव्य दुनिया के प्रकट होने के बारे में भी सत्य है। यह यह भी चेतावनी देता है कि केवल वही व्यक्ति जो दिन को रात में, सर्दी को गर्मी में और इस दुनिया को दूसरी दुनिया में आसानी से बदल सकता है, वही ब्रह्मांड का स्वामी और सच्चा ईश्वर हो सकता है।

हे स्वामी! केवल वही पूजा के योग्य है और सच्चा प्यार पाने के योग्य है।

रात्रि के समय हमारी आत्माएं, जो असीम रूप से असहाय और कमजोर हैं, असीम रूप से गरीब और जरूरतमंद हैं, परिस्थितियों से घिरी हुई हैं और अंधकारमय और अज्ञात भविष्य की ओर आगे बढ़ रही हैं, 'ईशा' प्रार्थना करती हैं।

हम अब्राहम की तरह कहते हैं: मैं उन लोगों से प्रेम नहीं करता जो अस्त होते हैं (6:76)। हम सदा-जीवित, सदा-पूज्य, शाश्वत प्रियतम के दरबार में शरण चाहते हैं। इस अंधकारमय, क्षणभंगुर दुनिया और अंधकारमय भविष्य में अपने क्षणभंगुर जीवन से, हम उस स्थायी, शाश्वत परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं।

अनंत वार्तालाप के एक पल के लिए, अमर जीवन के कुछ सेकंड के लिए, हम सर्व-दयालु और करुणामयी की कृपा चाहते हैं। हम उनके मार्गदर्शन के प्रकाश के लिए प्रार्थना करते हैं जो हमारी दुनिया और हमारे भविष्य को रोशन करेगा, और सभी प्राणियों और मित्रों के पतन से होने वाले दर्द को कम करेगा।

हम भूल जाते हैं दुनिया को, जो हमें रात के लिए छोड़ गई है, और दया के दरबार में अपने दिल का दुखड़ा उड़ेल देते हैं। इससे पहले कि मौत जैसी नींद आए, जिसके बाद

कुछ भी हो सकता है, हम अपनी पूजा का “अंतिम” कर्तव्य निभाते हैं। अपने दिन की गतिविधियों को एक अनुकूल नोट पर समाप्त करने के लिए, हम प्रार्थना करते हैं और अनन्त प्रिय और पूज्य की उपस्थिति में प्रवेश करते हैं, न कि उन नश्वर प्राणियों की जिनसे हम पूरे दिन प्यार करते थे; सर्वशक्तिमान और उदार की उपस्थिति, न कि उन नपुंसक प्राणियों की जिनसे हम पूरे दिन भीख मांगते रहे; और सर्व-दयालु रक्षक की उपस्थिति, इस आशा में कि हम पहले से मौजूद हानिकारक प्राणियों की बुराई से बच सकें

जिससे हम पूरे दिन कांपते रहे।

हम नमाज़ की शुरुआत सूरत अल-फ़ातिहा से करते हैं, जिसमें दुनिया के रब, पूर्ण और आत्मनिर्भर, दयालु और सर्व-उदार की प्रशंसा की गई है। हम सिर्फ़ तेरी ही पूजा करते हैं (1:5)। यानी, हमारी तुच्छता और अकेलेपन के बावजूद, क़यामत के दिन के मालिक, शाश्वत शासक के साथ हमारा संबंध हमें एक भोगी अतिथि और महत्वपूर्ण अधिकारी की तरह व्यवहार करने का कारण बनता है। सिर्फ़ तेरी ही पूजा करते हैं और सिर्फ़ तुझसे ही सहायता माँगते हैं (1:5), हम सभी प्राणियों की पूजा उसी को करते हैं और उनके लिए उसकी सहायता माँगते हैं। हमें सीधे मार्ग पर ले चलो (1:6) कहते हुए , हम अनंत सुख और उज्ज्वल मार्ग की ओर मार्गदर्शन माँगते हैं।

यह कहते हुए कि ईश्वर सबसे महान है, हम उस महान् ईश्वर के आगे झुकते हैं और उसकी महानता का चिंतन करते हैं, जो

छिपे हुए सूर्य और जागते तारों को आदेश देता है, जो कि
प्रत्येक सैनिक उसके आदेश के अधीन है जैसे
पौधे और जानवर जो अब सो गए हैं,
और इस संसार में उसके दीपक और सेवक हैं।

हम सभी प्राणियों की सार्वभौमिक साष्टांग प्रणाम के बारे में सोचते हैं।
अर्थात्, उन प्राणियों की तरह जो रात को सोते हैं, जब
एक निश्चित युग या अवधि में रहने वाले सभी प्राणियों को आदेश द्वारा पूजा के कर्तव्य से मुक्त कर दिया जाता है
" हो जाओ!" और यह आज्ञाकारी सैनिकों की एक सुव्यवस्थित सेना की तरह है, और इसे अदृश्य दुनिया में भेजा जाता है,
यह पूरी तरह से व्यवस्थित तरीके से मौत के गलीचे पर गिरकर कहता है: "ईश्वर सबसे महान है।" वे वसंत में हो! की आज्ञा से एक उत्तेजक, जीवनदायी तुरही-ध्वनी द्वारा पुनर्जीवित होते हैं और यह होता है, और उठता है

अपने प्रभु की सेवा करने के लिए तैयार हो जाओ। तुच्छ मानवता
सर्व दयालु, सर्वसिद्धिवान, सर्वकरुणामय परमेश्वर की उपस्थिति में भी यही घोषणा
अनुग्रह से भरा, आश्चर्य से भरे प्रेम में, अनंत काल से रंगा हुआ
विनम्रता और गरिमापूर्ण आत्म-विनाश। फिर हम दंडवत करते हैं और एक तरह का आरोहण प्राप्त करते हैं।

इस प्रकार प्रत्येक निर्धारित प्रार्थना समय एक निश्चित समय की ओर संकेत करता है।
महान क्रांति, गुरु की प्रचंड गतिविधि का संकेत है, और सार्वभौमिक दिव्यता का प्रतीक है
और इसलिए यह मामला परिपूर्णता का परिणाम है
बुद्धि।

पवित्र है तू! हमें कोई ज्ञान नहीं, परन्तु जो तूने हमें सिखाया है। निस्संदेह तू सर्वज्ञ, अत्यन्त तत्वदर्शी है।

हे ईश्वर! तूने अपने सेवकों को शिक्षा देने के लिए उन्हें शिक्षक बनाकर भेजा है, उस पर कृपा और शांति प्रदान कर।

आपके ज्ञान और आपकी पूजा में; आपके नामों के खजाने को ज्ञात करने के लिए, आपके ब्रह्मांड की पुस्तक के संकेतों या छंदों का व्याख्याकार; अपनी पूजा के माध्यम से, आपके प्रभुत्व की कृपा के लिए एक दर्पण के रूप में सेवा करने के लिए; और अपने परिवार और साथियों पर।

हम पर और सभी ईमान वालों पर दया करो। आमीन। आपकी दया के लिए, हे दयालुओं में सबसे दयालु।

ग्यारहवाँ वचन

सृष्टि और प्रार्थना

भगवान के नाम पर,
दयालु, कृपालु.

सूर्य और उसकी चमक की कसम, चंद्रमा जब वह उसके पीछे चलता है, दिन जब वह उसे प्रकट करता है, रात जब वह उसे प्रकट करती है
इसे घेरे हुए है, स्वर्ग और वह जिसने इसे बनाया, पृथ्वी और
वह जिसने उसे फैलाया, और आत्मा और वह जिसने उसे पूर्ण किया।
(91:1-7)

यदि आप मानवता और ब्रह्मांड के निर्माण के उनके उद्देश्यों के बारे में कुछ समझना चाहते हैं, और
पांचों वक्त की नमाज़ें क्यों हैं फ़र्ज़, सुनिए
यह दृष्टान्त: एक राजा के पास बहुमूल्य धन का विशाल भण्डार था
पत्थरों और गड़े हुए खजानों के बारे में केवल उसे ही पता था।
सभी उद्योगों में पारंगत थे, और उनके पास विशाल अनुभव था
सभी कलात्मक और वैज्ञानिक विषयों का ज्ञान।
जिस किसी के पास स्वाभाविक रूप से सुंदरता और पूर्णता होती है, वह उसे दूसरों को दिखाना चाहता है,20 वह निर्माण करना चाहता था
एक ऐसा महल जो उसके राज्य की भव्यता, उसकी संपत्ति की भव्यता और विस्तार, और उसकी कलात्मकता और कौशल के अद्भुत उत्पादों को प्रदर्शित करेगा।

---

२० विशेष रूप से सुंदरता और पूर्णता जिसकी सभी लोग प्रशंसा करते हैं
दूसरों के लिए लाभदायक। (ट्र.)

उसकी सुन्दरता और सम्पूर्णता को अपने नेत्रों से निहारना चाहता था। अपनी विवेकशील आँखों से और दूसरों की आँखों से।

और इसलिए उसने एक बहुत बड़ा, शानदार महल बनवाना शुरू किया। इसे कई अपार्टमेंट और कमरों में विभाजित किया।
कमरे, उन्होंने इसे अपनी बेहतरीन और सबसे खूबसूरत कलाकृतियों से सजाया, और अपने कीमती पत्थरों से इसे सजाया। कलात्मक और

वैज्ञानिक सिद्धांतों और विषयों, उन्होंने इसे सुसज्जित किया
अपने ज्ञान के चमत्कारी उत्पादों के साथ।
अंत में, उन्होंने स्वादिष्ट विशिष्ट खाद्य पदार्थ तैयार किए और
वहां रहने वाले प्रत्येक परिवार के लिए पेय, और
उन्हें इतनी विस्तृत, उदारतापूर्वक और कलात्मक रूप से प्रदान किया गया है कि प्रत्येक भोजन एक ही स्थान से प्राप्त हुआ प्रतीत होता है
कम से कम 100 अलग-अलग कौशल।

फिर, राजा ने अपनी कुछ प्रजा को वहाँ बसाया।
उन्होंने अपने सहायक को यह बताने के लिए भेजा कि वह महल में क्यों हैं।
इसे किसने बनाया था, उन्हें किन नियमों का पालन करना था, किस तरह की
राजा कौन था, और महल की वास्तुकला, सजावट, फर्नीचर और आभूषणों के बारे में। राजा
अपने सहायक से कहा कि वह बताए कि महल का क्या हाल है
संरचनाएं, डिजाइन और सामग्री उसकी प्रदर्शित करती हैं
कलात्मकता और परिपूर्णता, और कैसे रहने वाले लोग
यह उसे खुश कर सकता है.

सहायक-दल में कई छात्र थे, और प्रत्येक
उनके कई सहायकों को एक निश्चित कार्य के लिए प्रतिनियुक्त किया गया था

अपने छात्रों के बीच खड़े होकर उन्होंने श्रोताओं को संबोधित किया:

> हे लोगों! हमारे स्वामी, जो इस महल के मालिक हैं, ने खुद को तुम पर प्रकट करने के लिए इसे बनवाया है। बदले में, उन्हें ठीक से जानो और पहचानो। वे इन आभूषणों के माध्यम से खुद को तुम्हारे लिए प्यारा बनाना चाहते हैं। बदले में, उनकी कलात्मकता की सराहना करो और उनके कामों के लिए उनकी सराहना करो, जिससे तुम उनके द्वारा प्रिय बनो। उनके उपकार तुम्हारे लिए उनके प्रेम को दर्शाते हैं, इसलिए उनकी आज्ञा मानकर उनसे प्रेम करो। उनके चढ़ावे तुम्हारे लिए उनकी देखभाल और करुणा को दर्शाते हैं, इसलिए उनके प्रति अपना सम्मान दिखाकर उनका धन्यवाद करो।
>
> अपनी पूर्णता के कामों के ज़रिए, गुरु अपनी सुंदरता और शालीनता दिखाना चाहते हैं। बदले में, उन्हें देखने और उनका ध्यान आकर्षित करने की तीव्र इच्छा प्रदर्शित करें। अपनी विशेष छाप, जिसे कॉपी नहीं किया जा सकता, को हर उस चीज़ पर लगाकर जो आप देखते हैं, वह यह दर्शाता है कि वह अद्वितीय, बिल्कुल स्वतंत्र और बिना किसी भागीदार के है, कि यह महल और इसकी सामग्री उसका काम है और केवल उसी की है। इसलिए, उसकी विशिष्टता, पूर्ण स्वतंत्रता और किसी भागीदार के न होने को स्वीकार करें।

सहायक ने अपना भाषण जारी रखा। महल के निवासी दो प्रकार के थे। पहले समूह के लोग समझदार और अपने बारे में जागरूक थे, उन्होंने महल के चमत्कारों को देखा और निष्कर्ष निकाला कि हर चीज का एक उद्देश्य होता है। इस बारे में सोचते हुए, उन्होंने सहायक की बात सुनी और जाना कि वे उद्देश्य क्या थे। उन्होंने वही किया जो राजा चाहते थे, और

राजा ने उन्हें एक बहुत बड़े और अवर्णनीय रूप से अधिक सुंदर महल में आमंत्रित किया, जहाँ उन्होंने उन्हें सभी प्रकार के अनन्त उपहार और आशीर्वाद दिए।

दूसरे समूह के लोग नैतिक रूप से भ्रष्ट थे, अज्ञानी थे, और उनमें तर्क की कमी थी। वे केवल स्वादिष्ट भोजन देखते थे और सजावट और अलंकरण के पीछे का अर्थ नहीं समझते थे। सहायक-डे-कैंप और उसके सहायकों के पते और निर्देशों को अनदेखा करते हुए, वे खाने और सोने पर ध्यान केंद्रित करते थे।

निषिद्ध पेय पदार्थ पीने के बाद वे नशे में धुत हो गए, नौकरों और मेहमानों को परेशान करने लगे और नियम तोड़ने लगे। इसलिए राजा ने उन्हें कैद कर लिया।

संक्षेप में, गौरवशाली राजा ने अपने सहायक द्वारा बताए गए उद्देश्यों के लिए महल का निर्माण किया। इन उद्देश्यों को साकार करना दो चीजों पर निर्भर करता है। सबसे पहले, यदि सहायक मौजूद नहीं होता, तो वे उद्देश्य कुछ भी नहीं होते, क्योंकि शिक्षक के बिना किताब केवल पन्नों का एक पैकेट होती है। दूसरा, सहायक की आज्ञा का पालन किया जाना चाहिए, क्योंकि उसका अस्तित्व महल बनाने का कारण है, और इसके निवासियों की आज्ञाकारिता इसे बनाए रखने का कारण है। महल के निवासियों को बताने और उन्हें राजा की इच्छा के बारे में बताने के लिए सहायक के बिना, बाद वाले नहीं होंगे

उन्होंने कहा, "यह महल उन्हीं लोगों ने बनाया है। साथ ही, अगर वे राजा के निर्देशों की अनदेखी करेंगे, तो महल नष्ट हो जाएगा।"

यदि आप इसे समझते हैं, तो इसके अर्थ पर विचार करें।
महल यह दुनिया है, जिसकी छत स्वर्ग है
मुस्कुराते सितारों से रोशन, जिसका फर्श पृथ्वी का है
सतह अनेक प्रकार के फूलों से सुशोभित है।
राजा परम पवित्र है, शाश्वत राजा है,
जिसे सातों आकाशमण्डल और पृथ्वी सहित
उनकी सारी सामग्री, प्रत्येक के लिए विशिष्ट भाषाओं में महिमा और प्रशंसा करें।
वह इतना शक्तिशाली राजा है कि उसने 6 दिनों में स्वर्ग और पृथ्वी का निर्माण किया।21 अपने सिंहासन पर बैठे हुए
आधिपत्य का सिंहासन (अर्थात्, उसके आधिपत्य के माध्यम से)
निरंतर अभिव्यक्तियाँ),22 वह दिन और दिन बदलता रहता है
रात को एक सफेद और काले धागे की तरह, अपने
ब्रह्माण्ड की विशाल चादर पर चिन्ह। वह एक है,
सर्व-प्रतापी और शक्तिशाली, जिनके लिए सूर्य,
चाँद और तारे सब वश में हैं।

---

21 बाइबल की तरह, कुरान में भी उल्लेख है कि परमेश्वर ने सृष्टि की।
ब्रह्मांड को 6 दिनों में पूरा किया जा सकता है। हालाँकि, कुरान में कभी भी सुबह और शाम का ज़िक्र नहीं किया गया है, और "दिन" को एक सापेक्ष अवधि के रूप में प्रस्तुत किया गया है जिसका समय 6 दिनों में पूरा होता है।
माप अज्ञात है। 22:47, 32:5, और 70:4 देखें: (ट्र.)

22 मूल शब्द जिसका अनुवाद “प्रभु” किया गया है वह है रब्ब। यह दर्शाता है
ईश्वर वह है जो अपने प्राणियों का पालन-पोषण, प्रशिक्षण, शिक्षा, पोषण और प्रशासन करता है। नोट: इसे ईश्वर के साथ भ्रमित नहीं होना चाहिए।
"प्रभु" अर्थात् यीशु मसीह के बारे में ईसाई समझ
“परमेश्वर का पुत्र।” (अनुवाद)

महल के कमरे हज़ारों दुनियाएँ हैं,

प्रत्येक को एक विशिष्ट तरीके से डिज़ाइन, सुसज्जित और सजाया गया है। कला के बेहतरीन और सबसे खूबसूरत काम

हम यहाँ जो कुछ भी देख रहे हैं, उनमें से प्रत्येक एक चमत्कार है

दिव्य शक्ति; भोजन अद्भुत फल हैं

ईश्वरीय दया जो हम यहाँ देखते हैं, विशेष रूप से गर्मियों में; और रसोईघर पृथ्वी के केंद्र में अग्नि है और

सूर्य की गर्मी। कीमती पत्थर दिव्य पवित्र नामों की अभिव्यक्तियाँ हैं, और अलंकरण सुव्यवस्थित, सुंदर ढंग से बनाए गए प्राणी हैं

और पेन के बिल्कुल आनुपातिक शिलालेख

उस शक्ति की जो इस संसार को सुशोभित करती है और उस ओर संकेत करती है

सर्वशक्तिमान ईश्वर के नाम।

हमारे सहायक हमारे गुरु पैगम्बर मुहम्मद हैं। उनके सहायक सभी अन्य पैगम्बर हैं, और उनके सहायक भी हमारे गुरु हैं।

सभी छात्र संत और शुद्ध विद्वान हैं।

नौकर फ़रिश्ते हैं, महल के निवासी जिन्न हैं

और मानवता, और आमंत्रित अतिथि वे जानवर हैं जिन्हें मानवता की सेवा के लिए बनाया गया है।

लोग ईमान वाले हैं, कुरान के विद्यार्थी हैं

ब्रह्मांड की पुस्तक के छंदों की व्याख्या करता है।

दूसरा समूह अविश्वासियों और विद्रोही लोगों का है।

"बहरे और गूंगे" गुमराह लोग जो, आज्ञा का पालन करते हैं

वे अपने शारीरिक स्वभाव और शैतान से ऊपर उठकर केवल सांसारिक जीवन को ही स्वीकार करते हैं और इस प्रकार स्वयं को पशुओं से भी नीचे रखते हैं।

पहले समूह में अच्छे और आध्यात्मिक रूप से समृद्ध लोग थे, जिन्होंने बौद्धिक ज्ञान और आध्यात्मिक कल्याण के गुरु के संदेश को सुना, जो दोनों दुनिया में समृद्धि का मार्ग है। वह गुरु सेवकत्व के संबंध में एक पूज्य सेवक है, जो अपने स्वामी का वर्णन करता है और उन्हें अपने स्वामी से परिचित कराता है।

वह अपने लोगों के लिए एक दूत होता है, सर्वशक्तिमान ईश्वर के दरबार में अपने समुदाय का दूत होता है, तथा संदेशवाहक के सम्बन्ध में एक संदेशवाहक होता है, जो अपने स्वामी के आदेशों को लोगों तक पहुंचाता है।

कुरान के माध्यम से मानवता और जिन्न का वर्णन किया गया है।

इन लोगों ने स्वयं को ऊंचे पदों पर पाया और उन्हें निर्धारित प्रार्थना के अनेक सूक्ष्म और सुखद कर्तव्य सौंपे गए, जो सभी प्रकार की उपासनाओं का सूचकांक है:

- प्रथम: उन्होंने ईश्वरीय कार्यों को देखा और स्वयं को ईश्वरीय प्रभुत्व के राज्य के चमत्कारों के वस्तुनिष्ठ पर्यवेक्षकों की स्थिति में देखते हुए, उसकी महिमा और गुणगान करते हुए कहा, "ईश्वर सबसे महान है।"

- दूसरा: दिव्य पवित्र नामों के अनमोल प्रकटीकरण की घोषणा करने की स्थिति में खुद को देखकर, उन्होंने इन शब्दों के माध्यम से उनकी प्रशंसा की और उन्हें सर्व-पवित्र माना: "परमेश्वर की महिमा हो। सभी प्रशंसा परमेश्वर की हो।"

- तीसरा: दिव्य दया के भण्डार में संग्रहीत उपहारों को चखने और समझने की स्थिति में (अपनी बाह्य और आंतरिक इंद्रियों के साथ), उन्होंने धन्यवाद दिया और उनकी प्रशंसा की।

- चौथा: अपनी मानसिक और आध्यात्मिक क्षमताओं के तराजू से दिव्य नामों के खजाने के रत्नों को तौलने की स्थिति में, उन्होंने भगवान की स्तुति की और उन्हें दोष रहित घोषित किया।

- पांचवां: गुरु की शक्ति की कलम द्वारा भाग्य की तर्ज पर लिखे गए उनके संदेशों का अध्ययन करने के दौरान, उन्होंने उनका चिंतन और प्रशंसा की।

- छठा: वस्तुओं की रचना में सूक्ष्म सौंदर्य और कोमलता को देखने के साथ-साथ सृजन की कला और ईश्वर को दोषरहित घोषित करने के स्थान पर, वे अपने महाप्रवर्तक और दयालु निर्माता के प्रति प्रेम और लालसा के अपने कर्तव्य को पूरा करने के लिए निकल पड़ते हैं।

इसलिए, ब्रह्मांड और उसकी सामग्री का अवलोकन करते हुए, उन्होंने अप्रत्यक्ष रूप से भगवान को संबोधित किया और ऊपर वर्णित स्थानों में पूजा के सभी कर्तव्यों का पालन किया।

फिर, बुद्धिमान निर्माता के कार्यों और उनके कार्य करने के तरीके को देखकर, वे इस बात से आश्चर्यचकित हो गए कि कैसे राजसी निर्माता अपनी कला के चमत्कारों के माध्यम से खुद को सचेत प्राणियों के सामने प्रकट करता है।

प्रत्यक्ष प्रतिक्रिया में, उन्होंने उनकी उपस्थिति में घोषणा की: "आपकी महिमा हो। हम आपको नहीं जान सकते
आपके ज्ञान द्वारा अपेक्षित - जैसा कि आपको जानने का कर्तव्य अपेक्षित है।
जो आपको ज्ञात कराता है वह आपका है
आपके प्राणियों में प्रदर्शित चमत्कार।" जवाब में
सर्व दयालु को स्वयं के माध्यम से प्यार करना
उनकी दया के सुंदर फल, उन्होंने घोषणा की
प्रेम और परमानंद: केवल आपकी ही हम पूजा करते हैं, और
हम केवल तुझ से ही सहायता मांगते हैं (1:5)
सच्चे दानदाता अपनी देखभाल और दया प्रदर्शित करते हैं
उनकी शालीन भेंटों के माध्यम से करुणा, उन्होंने धन्यवाद दिया
और उसकी स्तुति करते हुए कहा: "आपकी और सभी की जय हो
आपकी स्तुति हो।” दूसरे शब्दों में:

> आप धन्यवाद और प्रशंसा के इतने पात्र हैं कि आपके सभी
> ब्रह्मांड में उपकार आपकी भाषा में आपकी प्रशंसा करते हैं
> उनके स्वभाव। आपके सभी उपहारों की व्यवस्था की गई और
> विश्व के बाजार में और पृथ्वी के चेहरे पर प्रदर्शित
> आपकी प्रशंसा और सराहना की घोषणा करें। आपके सुंदर, सुडौल फल और उपज
> पृथ्वी पर दया और कृपा उचित मात्रा में हो और
> आपकी उदारता और महानता की गवाही देते हैं, और इस प्रकार लोगों की आँखों के सामने आपको धन्यवाद देते हैं।
> सभी प्राणी.

उनकी कृपा प्रदर्शित करने के प्रत्युत्तर में, महामहिम,
उन्होंने कहा कि प्राणियों के "दर्पणों" में पूर्णता और भव्यता निरंतर भर्ती और नवीनीकृत होती रहती है:

"ईश्वर सबसे महान है," और उसके सामने उचित ढंग से झुके अपनी खुद की नपुंसकता की धारणा। इसके बाद, वे विनम्रता, आश्चर्य और प्रेम के साथ साष्टांग प्रणाम किया। फिर, सर्वशक्तिमान द्वारा अपनी महिमा के प्रदर्शन से पहले धन की प्रचुरता और उसकी दया की व्यापकता से प्रसन्न होकर, उन्होंने प्रार्थना करके अपनी गरीबी और आवश्यकता को दर्शाया: केवल आप ही से हम सहायता चाहते हैं (1: 5)।

मैजेस्टिक मेकर की प्रदर्शनी के जवाब में उनकी कला की सूक्ष्मता और आश्चर्य की झलक सजीवता के माध्यम से मिलती है उन्होंने यह कहकर अपनी सराहना प्रकट की: "भगवान ने क्या (आश्चर्य) चाहा है," और यह कहकर उनकी प्रशंसा: "उन्होंने कितनी खूबसूरती से किया है बनाया गया है।" वे देखते रहे और बोले: "परमेश्वर उन्हें आशीर्वाद दें। वे कितने अद्भुत ढंग से बनाए गए हैं," और अपने विश्वास की घोषणा करके उसकी गवाही दी। पूर्ण प्रशंसा के साथ, उन्होंने सभी को इस घटना का गवाह बनने के लिए बुलाया वही: "आओ और देखो! अपने आप को रास्ते में जोड़ो समृद्धि के लिए!"

शाश्वत राजा की घोषणा के जवाब में वे प्रभु के राज्य और सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में उनकी एकता के प्रकटीकरण में विश्वास करते थे। और अपनी एकता की पुष्टि की, और यह कहकर अपनी आज्ञाकारिता और समर्पण दिखाया: "हमने सुना है और आज्ञा का पालन किया।" प्रभु के प्रकट होने के लिए विश्व की दिव्यता, उन्होंने पूजा के साथ जवाब दिया

अपनी दुर्बलता में अंतर्निहित नपुंसकता, आवश्यकता में अंतर्निहित अपनी गरीबी, तथा निर्धारित प्रार्थना (उपासना का सार) की घोषणा करके।

दुनिया की उस विशाल मस्जिद में रहते हुए, उन्होंने खुद को इन और इसी तरह की इबादत के कामों में समर्पित कर दिया और इस तरह सृष्टि के सबसे बेहतरीन नमूने को अपना लिया। अन्य सभी प्राणियों से ऊपर, वे ईश्वर के भरोसेमंद प्रतिनिधि बन गए, जो ईमान और विश्वसनीयता के आशीर्वाद से सुसज्जित थे।23 इस परीक्षा और परीक्षण के बाद, और इस्लाम के प्रति उनकी भक्ति के बदले में, उनके दयालु भगवान ने उनके ईमान को शाश्वत खुशी से पुरस्कृत किया और उन्हें शांति के घर में आमंत्रित किया।

वहाँ, अपनी दया से, उसने उन्हें वर्णन और कल्पना से परे चमकदार उपहार, अनंत काल और अनन्त जीवन प्रदान किया। शाश्वत, स्थायी सौंदर्य के अवलोकन और चिंतन करने वाले प्रेमी अनंत काल तक चले जाएँगे। कुरान के छात्रों का अंत और अंतिम पड़ाव यही है। सर्वशक्तिमान ईश्वर हमें उनमें शामिल करें। आमीन!

दूसरे समूह के सदस्य, जो सभी पापी और दुष्ट लोग थे, इस महल में घुस गए।

---

23 ईश्वर की प्रतिनिधिता को इस प्रकार परिभाषित किया जाता है कि मानवता ईश्वर द्वारा पृथ्वी पर अपने आदेशों को क्रियान्वित करने तथा अपने नियमों के अनुसार इस पर शासन करने के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला “साधन” है। (अनुवाद)

विवेक के युग में संसार को नष्ट कर दिया।२४ ईश्वरीय एकता के प्रमाण पर अविश्वास करते हुए और उसके वरदानों के प्रति कृतघ्न होकर, उन्होंने सभी प्राणियों पर पाप करने का आरोप लगाकर उनका अपमान किया।
बेकार होना, और ईश्वर को अस्वीकार करना और अस्वीकार करना
नामों की अभिव्यक्तियाँ। संक्षेप में, उन्होंने एक अपराध किया
अल्प समय में अनंत त्रुटि और अनन्त काल के योग्य

सज़ा.

हमें जीवन और मानव की यह पूंजी दी गई है
संकायों को ऊपर वर्णित कर्तव्यों पर खर्च करना होगा।
इसे देखते हुए, हमारा कर्तव्य केवल जीवन जीने तक ही सीमित नहीं है
आरामदायक जीवन (आधुनिक भ्रष्ट सभ्यता की आवश्यकताओं के अनुसार)
और अपनी शारीरिक इच्छाओं की संतुष्टि।
न ही हमारी नाजुक इंद्रियाँ और क्षमताएँ संवेदनशील हैं
इसमें क्षमताएं और अंग, सुव्यवस्थित सदस्य और प्रणालियां, तथा जिज्ञासु
इंद्रियां और भावनाएं शामिल हैं
हमारे जीवन की "मशीन" (हमारे शरीर) में
आधार, शारीरिक स्वयं की निम्न इच्छाएँ।

बल्कि, उन्हें इसमें शामिल किया गया और एक बनाया गया
यह हमारे स्वभाव का हिस्सा है, दो कारणों से: पहला, हमें
वास्तविक ईश्वर द्वारा प्रदान किए गए सभी प्रकार के उपहारों को महसूस करें
हे कृपा देने वाले, और हमें कृतज्ञ होने का आग्रह करने के लिए। इसलिए,
उन्हें महसूस करें और उसके प्रति आभारी रहें। दूसरा,
ज्ञात है और हमें सभी अभिव्यक्तियों का अनुभव करने का आग्रह करता है

24 इस्लाम में एक व्यक्ति को “विवेक की उम्र” पर तब माना जाता है जब वह शारीरिक रूप से परिपक्व हो जाता है।

ब्रह्माण्ड में देखे गए प्रत्येक दिव्य पवित्र नाम का।

इसलिए उन्हें अनुभव करें और जानें, और उन पर विश्वास करें। यदि हम
इन उद्देश्यों को प्राप्त करने से हम मानवीय पूर्णता प्राप्त कर सकते हैं और सच्चे मनुष्य बन सकते हैं।

जैसा कि निम्नलिखित दृष्टांत में दिखाया गया है, हम नहीं थे
हमने अपनी मानवीय क्षमताएं केवल सांसारिक सुख अर्जित करने के लिए दी हैं
जीविका: एक स्वामी ने एक नौकर को 20 सोने के सिक्के दिए
और उसे एक विशेष कपड़े का सूट खरीदने के लिए कहा।
नौकर ने एक बढ़िया सूट खरीदा और फिर पहना
कपड़े की सबसे अच्छी गुणवत्ता। स्वामी ने दूसरे नौकर को 1,000 सोने के सिक्के दिए,
उसकी जेब में एक लिखित सूची रखी, और उसे कुछ व्यापार करने के लिए भेज दिया।
जाहिर है कि पैसे का इस्तेमाल कपड़ों के लिए नहीं किया जाना था। इसलिए अगर दूसरा
नौकर कपड़े के लिए इस्तेमाल नहीं किया जाना था।
नौकर ने सूची नहीं पढ़ी, बल्कि दूसरे नौकर की नकल करते हुए उसे दिए गए पैसे से एक
सूट खरीदा और इसके अलावा, उसे एक सूट भी मिला।

क्या उसका स्वामी उसकी मूर्खता के लिए उसे कड़ी फटकार और दंड नहीं देगा?

हे मेरे शारीरिक आत्मा और मेरे मित्र! तुम्हें नहीं भेजा गया है
आप अपनी जीवन की पूंजी और अपनी जीवन क्षमता को भौतिक सुखों और इस क्षणभंगुर
जीवन पर खर्च करने के लिए यहां हैं।
यदि आप ऐसा करेंगे, तो आप सबसे निचले पायदान पर पहुंच जाएंगे, यद्यपि आप
पूंजी के मामले में वे अन्य देशों से कहीं बेहतर हैं
विकसित पशु.

हे मेरे असावधान प्राण! यदि तू अपने जीवन के उद्देश्य और स्वरूप को समझना चाहता है, तो प्रत्यक्ष रूप देख।
और अर्थ, और आपके जीवन में पूर्ण खुशी,
अपने शरीर की इन्द्रियों के तराजू पर ईश्वरीय दया के भण्डार में संग्रहित उपहारों को तौलें और अर्पित करें
अपने शरीर की ओर से धन्यवाद। भावनाओं के माध्यम से,
आपके स्वभाव में निहित प्रवृत्तियाँ और क्षमताएँ,
दिव्य पवित्र नामों के छिपे हुए खजाने - कार्यों और अभिव्यक्तियों - की खोज करें और फिर

उन नामों के माध्यम से परम पवित्र को पहचानें।

इस प्रदर्शनी स्थल में, सचेत रूप से प्रदर्शित करें
अपने जीवन के माध्यम से अपने अस्तित्व में दिव्य नामों की सूक्ष्म अभिव्यक्तियाँ [जैसे कि आपकी इंद्रियाँ, क्षमताएँ और योग्यताएँ] सभी सृष्टि के सामने प्रकट करें। अपनी घोषणा करें
सृष्टिकर्ता के दरबार में पूजा और सेवा
आधिपत्य, मौखिक रूप से और अपनी जीभ के माध्यम से
स्वभाव। एक सैनिक की तरह, जो राजा के सामने सजावट के साथ उपस्थित होता है
उससे, राजा के अनुग्रह के निशान प्रदर्शित करता है, होशपूर्वक सूक्ष्म के "आभूषणों" से खुद को सजाना
आपके अस्तित्व में अंतर्निहित मानवीय इंद्रियाँ और क्षमताएँ
दिव्य नामों के प्रकटीकरण के माध्यम से स्वयं को शाश्वत साक्षी के समक्ष प्रस्तुत करो।

अन्य जीव उनकी पूजा करते हैं और उनका महिमामंडन करते हैं
सृष्टिकर्ता की आज्ञा का जानबूझकर या अनजाने में पालन करना

उनके जीवन के लिए उसने जो नियम स्थापित किए थे, वे मुख्य हैं
उनके निर्माण और जीवन का उद्देश्य। इसलिए आपको चाहिए
सचेत रूप से उनके प्रति उनकी आज्ञाकारिता का निरीक्षण करें, उनका
उसकी पूजा और महिमा करें, और उस पर चिंतन करें
इन कार्यों की गवाही दें।

अपनी दोषपूर्ण विशेषताओं (जैसे, आंशिक ज्ञान, शक्ति और इच्छा) को माप की इकाइयों के रूप में उपयोग करते हुए, राजसी निर्माता की पूर्ण विशेषताओं और क्षमताओं को पहचानें।
पवित्र गुण। उदाहरण के लिए, आप अपने सीमित संसाधनों का उपयोग करके एक सुंदर और सुव्यवस्थित घर बना सकते हैं।
गुण, तो समझ लो कि इस महल का निर्माता
ब्रह्मांड का निर्माण करने वाला कहीं अधिक शक्तिशाली, बुद्धिमान और सक्षम है। जहाँ तक सृष्टिकर्ता की एकता और निर्माता की एकता का सवाल है

आदरणीय, आप समझ सकते हैं और आपको समझना चाहिए कि प्रत्येक अस्तित्व उन्हें अपनी भाषा में घोषित करता है।
नपुंसकता और कमजोरी, गरीबी और जरूरत, अनुमान
दिव्य शक्ति की अभिव्यक्ति की डिग्री
और गुरु की समृद्धि। जैसे भोजन का आनंद
और विविधताओं को आपकी भूख और आवश्यकता के अनुसार समझा या पहचाना जाता है, डिग्री को समझें
आपके माध्यम से अनंत दिव्य शक्ति और समृद्धि की प्राप्ति
अनंत नपुंसकता और गरीबी.

संक्षेप में, ये आपके जीवन के लक्ष्य हैं, प्रकृति है
जिसका सारांश इस प्रकार दिया जा सकता है: यह एक सूचकांक है
दिव्य नामों में उत्पन्न होने वाले चमत्कारों का एक माप-

दैवीय गुणों पर विचार करना, जानने की एक इकाई

ब्रह्माण्ड में स्थित संसार, वृहत् ब्रह्माण्ड की सूची, ब्रह्माण्ड और उसके फल या संकुचित रूप का मानचित्र, दिव्य प्रकाश को खोलने के लिए कुंजियों का एक समूह

शक्ति के गुप्त भण्डार, तथा प्राणियों में प्रतिबिम्बित दिव्य पूर्णता का एक उत्कृष्ट प्रतिरूप

और समय के माध्यम से प्रकट हुआ।

निम्नलिखित आपके जीवन के स्पष्ट, अवलोकनीय रूप और उसके अर्थ का वर्णन करता है: आपका जीवन

एक उत्कीर्ण शब्द, एक ज्ञान-प्रदर्शन शब्द लिखा हुआ

शक्ति की कलम द्वारा। अवलोकन और अनुभूति से, यह इंगित करता है

दिव्य सुंदर नामों के लिए। आपके जीवन का अर्थ

ईश्वरीय अभिव्यक्ति को प्रतिबिंबित करने वाला दर्पण बनना है

ईश्वरीय एकता और ईश्वरीय अभिव्यक्ति के रूप में

सभी के लिए शाश्वत रूप से प्रार्थनीय। सभी दिव्य नामों के केंद्र बिंदु के रूप में इसकी व्यापकता के माध्यम से

दुनिया में दिखाया गया है, यह प्रतिबिंबित करने के लिए एक दर्पण के रूप में कार्य करता है

एकमात्र और शाश्वत रूप से मांगा जाने वाला।

जहाँ तक आपके जीवन की सम्पूर्णता की बात है, तो यह खुशी है।

अनन्त सूर्य की रोशनी को समझना और उससे प्रेम करना है

अपने जीवन के दर्पण में चित्रित, उत्साह प्रदर्शित करने के लिए

एक सचेतन प्राणी के रूप में, उसके प्रति आनंदित होना

उसके प्रति प्रेम, और उसके प्रकाश का प्रतिबिम्ब स्थापित करना

आपके हृदय के केंद्र में। इन सबके परिणामस्वरूप,

हदीस कुदसी उच्च लोगों के बीच आपकी रैंक को व्यक्त करती है-

उन्होंने कहा: "(भगवान ने कहा): मैं आकाश और पृथ्वी में निहित नहीं हूं, लेकिन मैं विश्वासियों के दिल में निहित हूं।"

तो, हे मेरे आत्म-स्वरूप! तुम्हारा जीवन तुम्हें इसलिए दिया गया था ताकि तुम ऐसे महान लक्ष्यों को प्राप्त कर सको। चूँकि तुम्हारे पास ऐसे अमूल्य खजाने प्राप्त करने की क्षमता है, तो तुम इसे क्षणभंगुर शारीरिक इच्छाओं को संतुष्ट करने और क्षणिक सांसारिक सुखों की तलाश में बर्बाद करने के बारे में कैसे सोच सकते हो? इसे बर्बाद न करने के लिए, नीचे दिए गए श्लोकों में शपथों और निम्नलिखित सत्यों पर विचार करें और उसके अनुसार कार्य करें:

> सूर्य और उसकी सुबह की चमक की कसम; चाँद की जब वह उसके पीछे चलता है; दिन की जब वह उसे प्रकट करता है; रात की जब वह उसे ढाँप लेती है; आकाश की और उसको बनानेवाले की कसम; धरती की और उसको फैलानेवाले की कसम; आत्मा की और उसको पूर्ण करनेवाले की कसम; और उसको उसके लिए बुरा और अच्छा का ज्ञान देनेवाले की कसम। जो उसको शुद्ध कर दे वह सफल हो गया और जो उसको बिगाड़ दे वह असफल हो गया। (91:1-10)

> ऐ खुदा! पैग़म्बरी के आसमान के सूरज पर, नबूवत के चाँद पर और उसके घराने और साथियों पर जो हिदायत के सितारे हैं, रहमत और सलामती अता फरमा। हम पर और तमाम ईमान वालों पर रहम फरमा। आमीन! आमीन! आमीन!

तेईसवाँ शब्द

विश्वास के गुण और टिप्पणियाँ

हमारी खुशी और दुख

ईश्वर के नाम पर, जो दयालु,
कृपालु है।

हमने मनुष्य को बहुत ही उत्तम रीति से पैदा किया है।
हमने इसे निम्नतम से निम्नतम स्तर पर ला दिया है, सिवाय उन लोगों के जो
जो ईमान लाए और अच्छे कर्म किए। (95:4-5)

पहला अध्याय

निम्नलिखित पाँच बिंदुओं में हम पाँच बातों की व्याख्या करेंगे
विश्वास के हजारों गुणों में से.

पहला बिन्दु: हम सर्वोच्च स्तर तक पहुँचते हैं
पूर्णता प्राप्त करें और स्वर्ग के योग्य बनें
विश्वास का प्रकाश। अविश्वास का अंधकार हमें कमज़ोर कर देता है
निम्नतम स्तर तक ले जाना ताकि हम नरक के लायक हों। विश्वास
हमें हमारे राजसी निर्माता और हमारे मूल्य से जोड़ता है
दिव्य कला को दिखाने के लिए हमारे विश्वास का उपयोग करने से उत्पन्न होता है
और दिव्य नामों को प्रकट करो। अविश्वास इस विश्वास को तोड़ता है
इस प्रकार ईश्वरीय कला पर पर्दा पड़ जाता है और हमारा मूल्य मात्र एक भौतिक इकाई
तक सीमित रह जाता है।
लगभग कोई मूल्य नहीं (एक भौतिक इकाई नष्ट हो जाती है और

एक क्षणभंगुर जानवर से अधिक कुछ नहीं)। हम इसे समझाएंगे
एक दृष्टांत के माध्यम से.

लोहे (या किसी अन्य सामग्री) का मूल्य
कला का एक काम जो मूल्य से बना है उससे भिन्न होता है
इसमें व्यक्त कला का। कभी-कभी उनमें
समान मूल्य, या कला का मूल्य कहीं अधिक हो सकता है
इसकी सामग्री की तुलना में, या इसके विपरीत। एक प्राचीन वस्तु को
एक मिलियन डॉलर, जबकि इसकी सामग्री का मूल्य भी कुछ नहीं है
कुछ सेंट। अगर इसे प्राचीन वस्तुओं के बाजार में ले जाया जाए, तो यह हो सकता है
अपनी कला और कला के कारण अपने वास्तविक मूल्य पर बेचा जा सकता है
शानदार कलाकार का नाम। अगर इसे लोहार के पास ले जाया जाए, तो
इसे केवल उसके लोहे के मूल्य पर बेचा जाएगा।

इसी प्रकार, प्रत्येक व्यक्ति एक अद्वितीय, अमूल्य कृति है
सर्वशक्तिमान ईश्वर की कला। हम उनकी शक्ति के सबसे नाजुक और सुंदर
चमत्कार हैं, जो उनके सभी नामों और शिलालेखों को मानव रूप में प्रस्तुत करने
के लिए बनाए गए हैं।
ब्रह्मांड का एक लघु नमूना। अगर हम विश्वास से प्रकाशित हैं, तो ये सार्थक
शिलालेख
दृश्यमान हो जाते हैं। विश्वासी अपने निर्माता के साथ अपने संबंध के माध्यम से
इन शिलालेखों को प्रकट करते हैं, क्योंकि
प्रत्येक व्यक्ति में निहित दिव्य कला प्रकट होती है
इस तरह के कथनों के माध्यम से: "मैं ईश्वर का कार्य हूँ
महान् निर्माता, उसकी दया का प्राणी और पात्र
और उदारता।” परिणामस्वरूप, और क्योंकि हम प्राप्त करते हैं
हम इस कला को कितनी अच्छी तरह से प्रतिबिंबित करते हैं, इसके अनुपात में मूल्य,

हम तुच्छता (भौतिक दृष्टि से) से निकलकर सभी प्राणियों से ऊपर की श्रेणी में आ जाते हैं। हम ईश्वर से संवाद करते हैं, पृथ्वी पर उनके मेहमान हैं, और स्वर्ग के योग्य हैं।25

लेकिन अगर अविश्वास हमारे अंदर समाया हुआ है, तो ईश्वरीय नामों की सभी अभिव्यक्तियाँ अंधकार से ढकी हुई हैं और इस तरह से अव्यक्त हैं। अगर कलाकार अज्ञात है, तो उसकी कला के महत्व को व्यक्त करने वाले पहलुओं की पहचान कैसे की जा सकती है? इस तरह उस उत्कृष्ट कला और श्रेष्ठ शिलालेखों के सबसे सार्थक उदाहरण छिपे हुए हैं। भौतिक दृष्टि से, अविश्वासी ऐसी कला और शिलालेखों को तुच्छ कारणों, प्रकृति और संयोग से जोड़ते हैं, जिससे वे चमकते हीरे के बजाय सादे कांच के समान हो जाते हैं। वे किसी भी अन्य भौतिक इकाई से अधिक महत्वपूर्ण नहीं हैं, जो क्षणभंगुर और घुटन भरे जीवन के लिए खुद को दोषी ठहराती हैं, और सबसे नपुंसक, जरूरतमंद और पीड़ित जानवर से बेहतर नहीं हैं जो अंततः धूल बन जाएगा। इस तरह अविश्वास हमारे हीरे को कोयले में बदलकर हमारी प्रकृति को खराब कर देता है।

दूसरा बिंदु: जिस प्रकार विश्वास मानव को प्रकाशित करता है और उसके अस्तित्व में अनन्त-प्रार्थना-करने वाले द्वारा अंकित सभी संदेशों को प्रकट करता है, उसी प्रकार यह ब्रह्मांड को भी प्रकाशित करता है और अंधकार को दूर करता है।

---

[25] उदाहरण के लिए, प्रार्थना ईश्वर के साथ संचार का एक रूप है, जो पैगम्बरों, प्रेरणा या धर्मग्रंथों के माध्यम से हमसे बात करता है। (ट्र.)

अतीत और भविष्य। हम इस सत्य को समझाएंगे
ईश्वर के अर्थ के बारे में मैंने जो अनुभव किया
वह उन लोगों का रक्षक मित्र है जो ईमान लाए हैं।
उन्हें अंधकार की परतों से बाहर लाता है
प्रकाश (2:257).

मैंने खुद को एक विस्मयकारी पुल पर खड़ा देखा
दो पहाड़ों के बीच एक गहरी घाटी पर स्थित है।
दुनिया पूरी तरह से अंधकारमय थी। अपनी दाईं ओर देखते हुए, मैंने देखा कि
मैंने कल्पना की कि मैंने एक विशाल मकबरा देखा है। अपनी बाईं ओर देखते हुए, मैंने देखा कि
ऐसा लगा जैसे मैं हिंसक तूफान और विपत्तियाँ देख रहा हूँ
अंधेरे की जबरदस्त लहरों के बीच तैयार रहना। नीचे देखते हुए, मैंने कल्पना की कि मैंने एक बहुत गहरा दृश्य देखा है
मेरी टॉर्च की मंद रोशनी ने एक भयानक दृश्य दिखाया
दृश्य। पुल पर इतने भयानक अजगर, शेर और राक्षस थे कि मैं चाहता था कि मेरे पास कोई मशाल न होती।
मैंने इसे जिस भी तरह निर्देशित किया, मुझे वही भय लगा।
मैंने कहा, "यह मशाल मेरे लिए केवल परेशानी ही लेकर आती है।"
गुस्से में उसे फेंक दिया और तोड़ दिया। अचानक
अंधकार की जगह प्रकाश ने ले ली, मानो मैंने स्विच कर लिया हो
मैंने अपनी टॉर्च तोड़कर एक बहुत बड़ी रोशनी देखी। मैंने हर चीज़ को उसके असली रूप में देखा।

मुझे पता चला कि यह पुल एक राजमार्ग था
समतल मैदान। विशाल मकबरा एक हरा-भरा, सुंदर बगीचा था जिसमें
प्रतिष्ठित व्यक्ति नेतृत्व कर रहे थे
आराधना, प्रार्थना, महिमा और विमोचन की सभाएँ

अशांत, तूफानी, भयावह खड़ी चट्टानें एक भोज कक्ष, एक छायादार सैरगाह, सुंदर पहाड़ों के पीछे एक सुंदर विश्राम स्थल के रूप में दिखाई दीं।

भयानक राक्षस और ड्रेगन वास्तव में ऊँट, भेड़ और बकरियाँ थे। "विश्वास के प्रकाश के लिए ईश्वर की स्तुति और धन्यवाद हो," मैंने कहा, और फिर यह कहते हुए जागा: ईश्वर उन लोगों का रक्षक मित्र है जो विश्वास करते हैं। वह उन्हें अंधकार की परतों से प्रकाश में लाता है।

ये दो पर्वत इस जीवन का आरंभ और अंत हैं, तथा मृत्यु और पुनरुत्थान के बीच का जीवन हैं।

यह पुल जीवन काल है, जो अतीत (दाईं ओर) और भविष्य (बाईं ओर) के दो चरणों के बीच है।

मशाल हमारा अहंकार है जो अपनी उपलब्धियों पर भरोसा करके ईश्वरीय रहस्योद्घाटन को अनदेखा करता है। राक्षस दुनिया की घटनाएँ और जीव थे।

जो लोग अपने अहंकार के भरोसे गलत दिशा-निर्देशन और असावधानी के अंधकार में गिर गए हैं, वे मेरे जैसे ही हैं, जैसे मशाल की धुंधली रोशनी में। अपने अपर्याप्त और गलत ज्ञान के कारण वे अतीत को विनाश के अंधकार में एक विशाल कब्र के रूप में देखते हैं और भविष्य को एक अँधेरे में।

संयोग या संयोग से नियंत्रित आतंक का एक तूफानी दृश्य। मशाल उन्हें घटनाएँ और जीव दिखाती है। वास्तव में, ये सर्वज्ञ के अधीन हैं

और दयालु, विशिष्ट कार्यों को पूरा करते हैं, और सेवा करते हैं
उसके आदेश के प्रति समर्पण में अच्छे उद्देश्य। हालाँकि,
वे ऐसी चीज़ों को हानिकारक राक्षसों के रूप में देखते हैं।
जिन लोगों का उल्लेख किया गया है: जो लोग ऐसा नहीं करते हैं
उनका मानना है कि उनके रक्षक मित्र झूठे देवता हैं।
वे उन्हें प्रकाश से निकालकर अंधकार की परतों में ले जाते हैं (2:257)।

तथापि, यदि लोगों को ईश्वरीय मार्गदर्शन प्राप्त हो ताकि उनके हृदय में विश्वास प्रवेश करे और उनके

फिरौन जैसे अहंकार को तोड़ा जाता है, जिससे वे सक्षम हो जाते हैं
परमेश्वर की पुस्तक को सुनने के लिए, वे मेरे समान होंगे
मेरी बाद की अवस्था में। अचानक ब्रह्मांड भर जाएगा
दिव्य प्रकाश, जिसका अर्थ है: ईश्वर
आकाश और पृथ्वी का प्रकाश है (24:35)।

ऐसे लोग अपने दिल की आँखों से देखते हैं
कि अतीत कोई विशाल कब्र नहीं है; बल्कि, प्रत्येक अतीत
सदी एक पैगंबर या एक के अधिकार का क्षेत्र है
संत, जहां शुद्ध आत्माएं,
अपने जीवन के कर्तव्यों (पूजा) को इस प्रकार से प्रस्तुत करें: “ईश्वर ही परमेश्वर है
महानतम,' ऊंचे स्थानों की ओर उड़ गया
भविष्य। अपनी बाईं ओर और प्रकाश के माध्यम से देखते हुए
वे समझते हैं कि मध्यवर्ती दुनिया और अगले जीवन के पर्वत-जैसे क्रांतियों के पीछे विश्वास है,
सर्व-दयालु द्वारा स्थापित एक भोज स्थल
एक स्वर्ग के बगीचों में आनंद के महलों में। वे

समझें कि तूफान, भूकंप, महामारी, और
इसी तरह की घटनाएँ एक विशिष्ट कार्य करती हैं, जैसे
वसंत की बारिश और हवाएँ, अपनी स्पष्ट हिंसा के बावजूद,
वे कई सुखद उद्देश्यों की पूर्ति करते हैं। वे मृत्यु को भी देखते हैं
अनंत जीवन की शुरुआत के रूप में, और कब्र के रूप में
शाश्वत खुशी का प्रवेश द्वार.

तीसरा बिन्दु: विश्वास प्रकाश और शक्ति दोनों है।
जो सच्चा विश्वास प्राप्त कर लेते हैं वे ब्रह्मांड को चुनौती दे सकते हैं,
अपने विश्वास की शक्ति के अनुपात में, राहत पाएं
घटनाओं के दबावों से। भगवान पर भरोसा करते हुए, वे घटनाओं की पहाड़ी लहरों के बीच सुरक्षित रूप से यात्रा करते हैं
जीवन के जहाज़ में सवार होकर वे दुनिया भर में यात्रा करते हैं
वे अपने अंतिम दिन तक आराम से रहे, क्योंकि उन्होंने अपना बोझ परम शक्तिशाली को सौंप दिया था।
शक्ति। कब्र एक विश्राम स्थल होगी, जिसके बाद
वे शाश्वत आनंद प्राप्त करने के लिए स्वर्ग की ओर उड़ जाएंगे।
भगवान पर भरोसा मत करो, उनका सांसारिक जीवन उन्हें मजबूर कर देगा
उन्हें सबसे निचली गहराई तक ले जाओ।

इसलिए, विश्वास में ईश्वरीय शक्ति की पुष्टि करना शामिल है
एकता, जिसके लिए ईश्वर के प्रति समर्पण की आवश्यकता होती है, जो
ईश्वर पर भरोसा करने की आवश्यकता है, जिससे खुशी मिलती है
दोनों दुनिया में। भगवान पर इस तरह का भरोसा नहीं होना चाहिए
कारण और प्रभाव की अनदेखी करना गलत समझा जाता है।
इसका मतलब है कि हमें कारणों को एक आवरण के रूप में सोचना चाहिए
शक्ति के हाथ को ढकना। कोई उन्हें दिव्य इच्छा का अनुपालन करने की कोशिश करके देखता है, जो एक प्रकार का है

पूजा की क्रिया। हालाँकि, ऐसी इच्छा और खोज किसी विशेष प्रभाव को प्राप्त करने के लिए पर्याप्त नहीं है। हम
यह समझना चाहिए कि, सही विश्वास के अनुसार,
परिणाम की उम्मीद केवल सर्वशक्तिमान ईश्वर से की जा सकती है। चूँकि वह प्रभावों का एकमात्र निर्माता है, इसलिए हम
हमें सदैव उसके प्रति आभारी होना चाहिए।

विश्वास की सच्चाई और अर्थ को समझने के लिए
हे परमेश्वर, इस दृष्टान्त पर विचार करो: एक बार दो व्यक्ति भारी बोझ लेकर जहाज पर चढ़े। एक ने अपना बोझ जहाज पर रखा।
विमान में चढ़ने के तुरंत बाद डेक पर आ गया और बैठ गया
इसे सुरक्षित रखने के लिए। दूसरे को, कहने के बाद भी
अपना बोझ नीचे रखने से इनकार कर दिया और कहा: "मैं
इसे नीचे नहीं रखेंगे, क्योंकि यह खो सकता है। इसके अलावा,
मैं इसे उठाने के लिए काफी मजबूत हूं।” उनसे कहा गया:

> यह विश्वसनीय शाही जहाज अधिक मजबूत है और इसे धारण कर सकता है बेहतर है। आप शायद थक जाएंगे, चक्कर महसूस करेंगे,
> और अपने बोझ के साथ समुद्र में गिर जाओ। आपकी ताकत
> असफल हो जाओगे, और फिर तुम यह बोझ कैसे उठाओगे कि
> हर पल भारी होता जा रहा है? अगर कप्तान आपको अंदर देखता है
> इस स्थिति में, वह कह सकता है कि आप पागल हैं और आपको निष्कासित कर सकता है
> जहाज से। या शायद वह सोचेगा कि आप नहीं जानते
> हमारे जहाज पर भरोसा करो और हमारा मज़ाक उड़ाओ, जिसके लिए वह
> तुम्हें कैद कर लिया जाएगा। साथ ही, तुम्हें चिन्हित कर लिया जाएगा और तुम जेल में बंद हो जाओगे।
> मज़ाक का पात्र। आपका घमंड आपकी कमज़ोरी को उजागर करता है,
> तुम्हारा अहंकार तुम्हारी नपुंसकता को प्रकट करता है, और तुम्हारा अहंकार तुम्हारी नपुंसकता को प्रकट करता है,
> दिखावा आपके अपमान को दर्शाता है। और इसलिए आपके पास है
> हंसी का पात्र बन जाओ—देखो हर कोई कैसा है
> आप पर हंसना।

इन शब्दों ने उसे अपने साथी के उदाहरण का अनुसरण करने के लिए प्रेरित किया। उसने उससे कहा: "ईश्वर प्रसन्न हो तुम्हारे साथ। मुझे राहत मिली है और अब मैं नहीं हूँ कारावास या हंसी का पात्र बनने के अधीन। इसलिए ईश्वर पर भरोसा रखें और अपने होश में आएं, क्योंकि दृष्टांत में वर्णित व्यक्ति ने ऐसा किया। परमेश्वर पर भरोसा रखें और सृष्टि से भीख मांगने और प्रत्येक घटना से डर कर कांपने से मुक्ति पाओ। ऐसा करने से तुम अहंकार, हास्यास्पद होने, इस जीवन के दबावों और परलोक की पीड़ाओं से मुक्त हो जाओगे।

चौथा बिन्दु: विश्वास हमें सच्ची उपलब्धि प्राप्त करने में सक्षम बनाता है। मानवता के लिए, अन्य सभी प्राणियों से ऊपर स्थान प्राप्त करना। इस प्रकार, विश्वास और पूजा हमारे सबसे मौलिक और महत्वपूर्ण कर्तव्य हैं। इसके विपरीत, अविश्वास, हमें क्रूर लेकिन बहुत नपुंसक की स्थिति में पहुंचा देता है जानवर।

इस सत्य का निर्णायक प्रमाण यह अंतर है मनुष्य और जानवरों के बीच कैसे संबंध आते हैं अस्तित्व। जन्म के क्षण से ही, ऐसा लगता है कि जानवर को कहीं और प्रशिक्षित किया गया है और उसकी क्षमताएं परिपूर्ण हो गई हैं। कुछ ही घंटों में या दिन या महीने, यह अपने जीवन को उसके अनुसार जी सकता है इसके विशेष नियम और शर्तें। गौरैया या मधुमक्खी एकीकृत करने के कौशल और क्षमता से प्रेरित है यह 20 दिनों के भीतर अपने पर्यावरण को नष्ट कर देता है, जबकि

किसी व्यक्ति को ऐसा करने में 20 साल लगेंगे। इसका मतलब है
एक पशु का मूल दायित्व और आवश्यक भूमिका
इसमें सीखने के माध्यम से पूर्णता की खोज, वैज्ञानिक ज्ञान के माध्यम से प्रगति, या प्रार्थना शामिल नहीं है
और अपनी नपुंसकता का प्रदर्शन करके मदद की गुहार लगाते हैं। बल्कि, उनका एकमात्र उद्देश्य सीमा के भीतर कार्य करना है
उनकी जन्मजात क्षमताओं की सीमा, जो कि विधा है
उनके लिए निर्दिष्ट पूजा की।

हालाँकि, लोग बिना कुछ जाने ही जन्म लेते हैं
जीवन और अपने पर्यावरण के बारे में सब कुछ सीखना होगा। चूँकि हम 20 साल के भीतर भी ऐसा नहीं कर सकते, इसलिए हम यह सब नहीं सीख पाएँगे।
हमें मरते दम तक सीखते रहना चाहिए।
इतनी कमज़ोरी के साथ यहाँ भेजा गया है

असमर्थता है कि हमें 2 साल तक की आवश्यकता हो सकती है
चलना सीखो। 15 साल बाद ही हम अच्छाई और बुराई में फर्क कर सकते हैं। समाज में रहकर ही
क्या हम इतने समझदार बन सकते हैं कि इनमें से कोई एक चुन सकें
क्या लाभदायक है और क्या हानिकारक है.

इस प्रकार हमारे अस्तित्व का आवश्यक और आंतरिक कर्तव्य है कि हम शिक्षा के माध्यम से पूर्णता की खोज करें और
परमेश्वर की आराधना और सेवा का प्रचार करें
प्रार्थना और विनती के माध्यम से। हमें तलाश करनी चाहिए
उत्तर: "जिसकी करुणा से मेरा जीवन है
इतनी बुद्धिमानी से प्रशासित? किसकी उदारता के माध्यम से
क्या मुझे इतने प्यार से प्रशिक्षित किया जा रहा है? किसके माध्यम से

एहसान और परोपकार के लिए मैं इतनी तत्परता से हूँ पोषित?” और अन्य प्रश्न। तब हमें प्रार्थना करनी चाहिए और अपनी आवश्यकताओं के प्रति विनम्र जागरूकता के साथ आवश्यकताओं के प्रदाता से प्रार्थना करें, जिनमें से किसी को भी हम अपने बलबूते पर पूरा नहीं कर सकते हमारी अपनी। नपुंसकता और गरीबी की यह समझ और स्वीकारोक्ति दो पंख बन जाएंगे जिन पर सर्वोच्च पद पर पहुंचना: ईश्वर का सेवक बनना।

और इसलिए हमारा उद्देश्य यहाँ पूर्णता की खोज करना है ज्ञान और प्रार्थना के माध्यम से। सब कुछ अपने आप में प्रकृति, अनिवार्यतः ज्ञान पर निर्भर है। और सभी सच्चे ज्ञान का आधार, स्रोत, प्रकाश और आत्मा ईश्वर का ज्ञान है, जिसमें विश्वास ही सबसे महत्वपूर्ण है आधार। विश्वास के बाद, प्रार्थना हमारा अनिवार्य कर्तव्य है और पूजा का आधार, क्योंकि हमारी असीम शक्तिहीनता के बावजूद, हम अनंत दुर्भाग्य और असंख्य शत्रुओं के संपर्क में हैं। और हमारी असीम गरीबी के बावजूद, हम असीमित आवश्यकताओं और मांगों से पीड़ित हैं।

बच्चे किसी चीज़ की ज़रूरत व्यक्त करते हैं शब्दों या आँसुओं से नहीं पहुँच सकते। दोनों ही एक तरह के हैं दलील या प्रार्थना, शब्द या कर्म में, जीभ से कमज़ोरी। आख़िरकार उन्हें वो मिल ही जाता है जो वे चाहते हैं। इसी तरह, हम भी एक प्यारे बच्चे की तरह हैं, क्योंकि परम दयालु और कृपालु प्राणी के दरबार में हम या तो रोएंगे (अपनी कमजोरी और नपुंसकता के कारण) या प्रार्थना करें (अपनी गरीबी और ज़रूरत के कारण) ताकि हमारा

जरूरत पूरी हो सकती है। बदले में, हमें प्रदर्शन करना चाहिए
इस प्रावधान के लिए कृतज्ञता और धन्यवाद का हमारा कर्तव्य है। अन्यथा, उन लोगों की कृतघ्नता जो दावा करते हैं
इतनी बुद्धि और हर चीज़ पर इतनी शक्ति होना कि वे अपनी ज़रूरतें खुद पूरी कर सकें

इस बिंदु पर आ जाएं कि वे शरारती लगें
बच्चे परेशान करने वाली मक्खियों के बारे में कराहते हैं। ऐसी कृतघ्नता हमारे मूल स्वभाव के विरुद्ध है और हमें
कठोर दण्ड के योग्य।

पांचवां बिंदु: विश्वास प्राप्ति के लिए प्रार्थना की आवश्यकता होती है
और पूर्णता, और हमारे सार को इसकी आवश्यकता है। सर्वशक्तिमान ईश्वर कहते हैं: कह दो (हे मुहम्मद): "मेरा प्रभु यह नहीं चाहेगा कि
वह तुम्हारी प्रार्थना के सिवा और कुछ नहीं चाहता।”
(25:77) और " मुझसे प्रार्थना करो, मैं तुम्हारी प्रार्थना स्वीकार करूँगा।"
(प्रार्थना) (40:60).

अगर लोग कहते हैं कि वे इतनी बार प्रार्थना करते हैं लेकिन
यदि किसी को लगता है कि उपरोक्त श्लोक में दिए गए आश्वासन के बावजूद उनकी प्रार्थनाएँ अनुत्तरित हैं, तो उन्हें बताएँ कि
प्रार्थना का उत्तर मिलने का अर्थ यह नहीं है कि उसे स्वीकार कर लिया गया है। हर प्रार्थना का उत्तर अवश्य मिलता है। हालाँकि,
प्रार्थना स्वीकार करना और मांगा गया देना
सर्वशक्तिमान की बुद्धि पर निर्भर करता है।मान लीजिए कि
बीमार बच्चा डॉक्टर से एक खास दवा मांगता है।

डॉक्टर वही देगा जो मांगा गया है, कुछ बेहतर या कुछ भी नहीं। यह सब इस बात पर निर्भर करता है कि दवा किस तरह से दी जा रही है

बच्चे पर इसका प्रभाव पड़ेगा। इसी प्रकार सर्वशक्तिमान, जो
वह सब कुछ सुनने वाला और देखने वाला है, अपने सेवक की प्रार्थना का उत्तर देता है
प्रार्थना और अकेलेपन को खुशी में बदल देता है
उसकी कंपनी। लेकिन उसका जवाब इस बात पर निर्भर नहीं करता
व्यक्ति की कल्पनाओं के अनुसार; बल्कि, उसके अनुसार
बुद्धि, वह जो मांगा जाता है, जो बेहतर है, देता है।
या कुछ भी नहीं.

इसके अलावा, प्रार्थना एक प्रकार की पूजा है और पूजा का पुरस्कार मुख्यतः परलोक में मिलता है। संक्षेप में,
प्रार्थना सांसारिक उद्देश्यों के लिए नहीं की जाती, क्योंकि
सांसारिक उद्देश्य प्रार्थना के कारण होते हैं। उदाहरण के लिए, बारिश के लिए
प्रार्थना करना एक तरह की पूजा है
बारिश की कमी से। अगर बारिश ही प्रार्थना का एकमात्र उद्देश्य है,
यह प्रार्थना अस्वीकार्य है, क्योंकि यह ईमानदार या ईमानदार नहीं है
इसका उद्देश्य परमेश्वर को प्रसन्न करना और उसका अनुमोदन प्राप्त करना है।

सूर्यास्त शाम की प्रार्थना का समय निर्धारित करता है,
जबकि सूर्य और चंद्र ग्रहण दो विशेष प्रकार की पूजा के अवसर होते हैं। चूँकि
ऐसे ग्रहण दो प्रकार के होते हैं
सर्वशक्तिमान ईश्वरीय महिमा को प्रकट करने का साधन
अपने सेवकों को एक प्रकार की आराधना करने के लिए बुलाता है
इन अवसरों के लिए विशेष प्रार्थना। इस प्रार्थना का ग्रहण समाप्त करने से कोई
लेना-देना नहीं है, क्योंकि यह
खगोलीय गणनाओं के माध्यम से पहले से ही ज्ञात है।
यही तर्क सूखे और अन्य आपदाओं पर भी लागू होता है।
विपत्तियाँ, क्योंकि ऐसी सभी घटनाएँ कुछ प्रकार की होती हैं

प्रार्थना का। ऐसे समय में, हमें अपनी नपुंसकता का सबसे अच्छा एहसास होता है और इसलिए हमें उच्च ईश्वर की शरण लेने की आवश्यकता महसूस होती है।
परम शक्तिशाली की उपस्थिति
प्रार्थना और विनती। यदि संकट दूर नहीं होता
बहुत प्रार्थना करने के बाद भी यह मत कहो कि तुम्हारी प्रार्थना
स्वीकार नहीं किया गया है। बल्कि, कहें कि समय आ गया है
प्रार्थना अभी समाप्त नहीं हुई है। भगवान अपनी असीम कृपा और उदारता
के कारण विपत्ति को दूर करते हैं।
उस घटना का अंत उस विशेष घटना का अंत दर्शाता है
प्रार्थना का अवसर.

हमें परमेश्वर की अच्छी इच्छा को पूरा करने के लिए प्रयास करना चाहिए
पूजा करें, अपनी गरीबी और कमजोरी की पुष्टि करें
प्रार्थना करें, और प्रार्थना के माध्यम से उसकी शरण लें।
उसके आधिपत्य में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए, बल्कि ईश्वर को उसके आधिपत्य में हस्तक्षेप करने देना चाहिए।
उसकी इच्छा के अनुसार कार्य करें और उसकी बुद्धि पर भरोसा रखें। इसके अलावा,
हमें उसकी दया पर आरोप नहीं लगाना चाहिए।

प्रत्येक प्राणी ईश्वर को अपनी-अपनी स्तुति और आराधना अर्पित करता है। ईश्वर के दरबार में कौन-सी वस्तु पहुँचती है?
ब्रह्मांड एक तरह की प्रार्थना है। कुछ जीव, जैसे
पौधे और जानवर अपनी जीभ से प्रार्थना करते हैं
पूर्ण रूप प्राप्त करने और फिर प्रदर्शित करने की क्षमता
कुछ दिव्य नाम दिखाएँ।26 एक अन्य प्रकार की प्रार्थना

---

[26] उदाहरण के लिए: एक पौधे के बीज प्राकृतिक रूप से पौधे के रूप में विकसित होते हैं, और जानवरों के संयुक्त वीर्य और अंडे स्वाभाविक रूप से जानवरों में विकसित होते हैं। चूँकि उनमें यह क्षमता होती है, इसलिए उनका प्राकृतिक स्वभाव होता है

प्राकृतिक आवश्यकताओं की भाषा में व्यक्त किया जाता है। सभी जीवित प्राणी परम उदार परमेश्वर से अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए प्रार्थना करते हैं। उनकी महत्वपूर्ण ज़रूरतें पूरी नहीं हो पातीं, क्योंकि वे ऐसा नहीं कर पाते। प्रार्थना पूरी तरह असहायता की भाषा में की जाती है। संकटग्रस्त परिस्थितियों में एक जीवित प्राणी अपने अदृश्य रक्षक की शरण में सच्ची श्रद्धा के साथ जाता है वह प्रार्थना करता है और अपने दयालु प्रभु की ओर मुड़ता है। ये तीन प्रकार की प्रार्थनाएँ सदैव स्वीकार्य होती हैं, जब तक कि किसी तरह से बाधा न उत्पन्न हो।

चौथे प्रकार की प्रार्थना वह है जिसका प्रयोग मानवता। यह प्रकार दो श्रेणियों में आता है: सक्रिय और स्वभाव से, और मौखिक और हृदय से। उदाहरण के लिए, कारणों के अनुसार कार्य करना एक सक्रिय प्रार्थना। हम कारणों का अनुपालन करके, ईश्वर की स्वीकृति प्राप्त करने का प्रयास करते हैं, क्योंकि अकेले कारण परिणाम उत्पन्न नहीं कर सकते परिणाम - केवल भगवान ही ऐसा कर सकते हैं। सक्रिय प्रार्थना मिट्टी जोतने के समान है, क्योंकि यह कुछ भी नहीं है खजाने का दरवाज़ा खटखटाने के अलावा ईश्वर की करुणा। ऐसी प्रार्थना आमतौर पर स्वीकार्य होती है, क्योंकि यह ईश्वरीय नाम का अनुप्रयोग है। सर्व उदार.

दूसरे प्रकार की प्रार्थना, जीभ से की जाती है और हृदय, साधारण है। इसका मतलब है कि

परिपक्व होना, संक्षेप में, एक प्रार्थना है। ऐसा करके वे पुष्टि करते हैं ऐसे दिव्य नामों का प्रकटीकरण जैसे कि सर्व-पालन और सर्वांगीण (ट्र.)

हम ईश्वर से दिल से कुछ मांगते हैं जो हमें नहीं मिल सकता। इसका सबसे महत्वपूर्ण पहलू और बेहतरीन और
सबसे मीठा फल यह है कि हम जानते हैं कि भगवान हमारी सुनता है,
हमारे हृदय की अन्तर्वस्तु से अवगत रहें, कि उनकी शक्ति फैली हुई है
हर जगह, वह हर इच्छा को पूरा कर सकता है, और
वह हमारी दुर्बलता और अपर्याप्तता पर दया करके हमारी सहायता के लिए आता है।

और इसलिए, हे असहाय और गरीब व्यक्ति! कभी नहीं
प्रार्थना का परित्याग कर दो, क्योंकि यह धन के खजाने की कुंजी है।
करुणा और उस तक पहुंच पाने के साधन
अनंत शक्ति। इसे थामे रहो। सर्वोच्च शिखर तक पहुँचो
मानवता का सर्वोच्च पद और सृष्टि का सर्वाधिक प्रिय प्राणी
और श्रेष्ठ सदस्य, पूरे ब्रह्मांड को शामिल करते हैं
अपनी प्रार्थना में सभी प्राणियों की ओर से कहो:
हम तुझसे ही सहायता मांगते हैं (1:5), और तुझसे ही सहायता पाते हैं।
सृजन के लिए एक सुंदर पैटर्न.

दूसरा अध्याय

(मानव सुख और दुख पर पाँच टिप्पणियाँ)

[मनुष्य को सर्वोत्तम कद-काठी में बनाया गया,
सृजन का सर्वोत्तम नमूना, और एक व्यापक दिया गया
उन्हें परीक्षण के क्षेत्र में भेज दिया गया है,
जहाँ वे या तो सर्वोच्च पद पर पहुंचेंगे या
सबसे निचले स्तर पर उतरो। ये रास्ते खुले हैं
मानवता के लिए। हम यहाँ शक्ति और शक्ति के चमत्कार के रूप में हैं

सृष्टि का अंतिम शिखर। मैं मानवता के उत्थान और पतन के रहस्य को पाँच टिप्पणियों में स्पष्ट करूँगा।]

पहली टिप्पणी: हमारा कुछ रिश्ता है
और हमें अधिकांश प्रजातियों की ज़रूरत है। हमारी ज़रूरतें विस्तृत हैं
ब्रह्मांड के सभी भागों में, और हमारी इच्छाएँ विस्तृत हैं
अनंत काल तक। हम भी एक फूल की चाहत रखते हैं
एक संपूर्ण वसंत, एक उद्यान और साथ ही एक शाश्वत
स्वर्ग। हम अपने दोस्त के साथ-साथ अपने बेटे को भी देखना चाहते हैं।
राजसी, सर्वसुन्दर। हम अपने प्रियतम के द्वार पर दस्तक देते हैं
किसी मित्र के दरवाज़े पर मिलने के लिए जाना पड़ता है, और इसलिए भी उसे शरण लेनी पड़ती है
परम सर्वशक्तिमान की उच्च उपस्थिति में।
यह इस दुनिया के दरवाजे बंद कर देगा और खोल देगा
एक परलोक की ओर, आश्चर्यों की दुनिया की ओर, और
इस दुनिया को अगली दुनिया से बदल दें ताकि हम
हमारे उन 99 प्रतिशत मित्रों से फिर से जुड़ें जो हमें छोड़कर चले गए हैं
मध्यवर्ती विश्व के लिए.

इसे देखते हुए, हमारी पूजा की सच्ची वस्तु केवल
महाप्रतापी, सर्वशक्तिमान, दयालु हो
अनंत सुन्दरता से परिपूर्ण, सर्वज्ञ, पूर्णता से परिपूर्ण, जिसके हाथ में सभी चीजों की लगाम है,
जिसके अधिकार में ही प्रत्येक अस्तित्व का प्रावधान है, जो सब कुछ देखता है और सर्वव्यापी है,
अंतरिक्ष से असीम, और किसी भी बाधा, दोष से मुक्त,
दोष, या कमी। चूंकि हमारी असीमित ज़रूरतें हो सकती हैं
केवल अनंत शक्ति वाले द्वारा ही संतुष्ट किया जा सकता है और

सर्वव्यापी ज्ञान, वह एकमात्र है
पूजा करने योग्य।

यदि तुम केवल उसकी पूजा करोगे तो तुम्हें पद की प्राप्ति होगी। अन्य सभी प्राणियों से ऊपर। यदि आप ऐसा नहीं करते हैं, तो आप नपुंसक सृष्टि का अपमानित गुलाम बन जाओ।
आप अपने आत्मसम्मान और शक्ति पर भरोसा करते हैं,
प्रार्थना और ईश्वर पर भरोसा न करें, और अहंकारी श्रेष्ठता का दावा करें, तो आप मधुमक्खी या चींटी से भी कमतर हो जाएंगे
और सकारात्मक कार्यों और रचनात्मक आविष्कार के संबंध में मक्खी या मकड़ी से भी कमज़ोर है। लेकिन आपकी बुराई
और विनाश पहाड़ से भी भारी होगा
और महामारी से भी अधिक हानिकारक हो, क्योंकि तुम्हारे पास अस्तित्व के दो पहलू हैं। एक सकारात्मक और सक्रिय है, और दूसरा इसका सम्बन्ध रचनात्मक आविष्कार, अस्तित्व और अच्छाई। दूसरा नकारात्मक और निष्क्रिय है, और विनाश, अस्तित्वहीनता और बुराई से संबंधित है।

जहाँ तक आपके अस्तित्व के प्रथम पहलू का प्रश्न है, आप ऐसा नहीं कर सकते मधुमक्खी या गौरैया से प्रतिस्पर्धा करने वाले पक्षी से कमज़ोर होते हैं मक्खी या मकड़ी की तरह, और वह हासिल नहीं कर पाते जो वे कर सकते हैं। हालाँकि, आपके अस्तित्व के दूसरे पहलू के लिए, आप पहाड़ों, धरती और आसमान को पार कर सकता है,
आप वह बोझ उठा सकते हैं जो वे नहीं उठा सकते। इस प्रकार आपका उनके कृत्यों का प्रभाव उनसे कहीं अधिक व्यापक होता है। जब आप ऐसा करते हैं कुछ अच्छा करो या कुछ बनाओ, यह केवल पहुँचता है

जहाँ तक तुम्हारे हाथ और ताकत का सवाल है, लेकिन तुम्हारी बुराई और विनाशकारी कृत्य आक्रामक और विस्तार योग्य होते हैं।

उदाहरण के लिए, अविश्वास एक बुराई है, विनाश का कार्य है, पुष्टि का अभाव है। यह एक तरह का भ्रम हो सकता है।
यह एक मात्र पाप है, लेकिन इसका तात्पर्य सृष्टि का अपमान करना है,
सभी दिव्य नामों का अपमान, और मानवता का पतन। सृष्टि का एक उदात्त स्थान है और
महत्वपूर्ण कार्य, क्योंकि इसका प्रत्येक भाग ईश्वर का संदेश है
प्रभु, उनकी महिमा का दर्पण और उनके सेवक
देवत्व। अविश्वास उन्हें दिए गए पद से वंचित करता है
इन कार्यों द्वारा और उन्हें खिलौने में बदल देता है
संयोगवश, तुच्छ, बेकार और व्यर्थ वस्तुओं का
क्षय और विघटन के लिए अभिशप्त।

अविश्वास उन दिव्य नामों का अपमान करता है, जिनके सुन्दर अंकन और अभिव्यक्तियाँ भगवान शिव के श्री चरणों में देखी जाती हैं।
संपूर्ण ब्रह्मांड में सभी सृजित रूपों के दर्पण।
यह हमें और भी अधिक दयनीय और दुःखद स्तर पर ले जाता है।
हम सबसे कमज़ोर, असहाय और बेसहारा हैं, सबसे घटिया जानवर से भी कम।
यह हमें एक साधारण, नाशवान साइन-बोर्ड में बदल देता है
अर्थहीन, भ्रमित और तेजी से क्षयग्रस्त।
और यह तब है जब मानवता वास्तव में एक काव्यात्मक कृति है
वह ज्ञान जो सभी दिव्य नामों को प्रकट करता है; एक महान
शक्ति का चमत्कार जो बीज की तरह वृक्ष को धारण करता है
सृष्टि का निर्माता; और ईश्वर का प्रतिनिधि, स्वर्गदूतों से श्रेष्ठ

और पहाड़ों, धरती और आकाश से भी ऊँचा

हमने जो विश्वास स्वीकार किया है, उसके आधार पर यह संभव हुआ है।

मैं इसे संक्षेप में कहना चाहता हूँ। जहाँ तक बुराई और विनाश का प्रश्न है, आत्मा, जो बुराई का आदेश देने वाली आत्मा है, असंख्य अपराध कर सकती है और असीमित विनाश कर सकती है, जबकि अच्छाई करने की उसकी क्षमता बहुत सीमित है।

यह एक दिन में एक घर को नष्ट कर सकता है लेकिन उसे दोबारा नहीं बना सकता
100 दिन में। लेकिन अगर वह आत्मनिर्भरता को त्याग देता है और
घमंड और अच्छा करने के लिए ईश्वरीय सहायता पर निर्भर करता है
रचनात्मक चीजें, अगर यह बुराई और विनाश को त्याग देता है और दिव्य क्षमा मांगता है और इस तरह बन जाता है
परमेश्वर के एक आदर्श सेवक के रूप में, यह निम्न का संदर्भ बन जाता है:
परमेश्वर उनके बुरे कर्मों को अच्छे कर्मों में बदल देगा
(27:50) तब हमारी बुराई करने की असीम क्षमता बदल जाती है
अच्छाई के लिए एक अनंत क्षमता में। हम मूल्य प्राप्त करते हैं
“सृष्टि के सर्वोत्तम नमूने” का निर्माण और “सर्वोच्चतम” तक उत्थान।

हे असावधान, सर्वशक्तिमान की बात पर विचार करो।
अनुग्रह और उदारता। वास्तव में, एक पाप को उसके परिणामों और प्रभावों के कारण 1,000 पापों के रूप में दर्ज करना और एक अच्छे कार्य को केवल एक के रूप में दर्ज करना पूर्ण न्याय है।
परन्तु परमेश्वर इसके विपरीत करता है: वह पापपूर्ण कार्य को इस रूप में दर्ज करता है
एक और अच्छाई का कार्य 10, 70, 700, या, कुछ में
7,000 मामले। इससे हम समझ सकते हैं कि नरक में प्रवेश करना व्यक्ति के कर्मों और शुद्ध न्याय का परिणाम है,

जबकि स्वर्ग में प्रवेश उसकी परम कृपा का परिणाम है।

दूसरी टिप्पणी: मनुष्य के दो चेहरे होते हैं।
पहला चेहरा इस सांसारिक जीवन की ओर इसलिए देखता है क्योंकि
हमारा आत्म-सम्मान। यहाँ हम वास्तव में बेचारे प्राणी हैं।
मानव इच्छाशक्ति एक बाल के समान दुर्बल है, मानव शक्ति एक बाल के समान दुर्बल है,
अत्यंत सीमित प्रतिभा तक सीमित, मानव जीवन उतना ही है
दुनिया के जीवन की तुलना में प्रकाश की एक चमक जितनी छोटी,
और हमारा भौतिक अस्तित्व एक छोटी सी चीज़ है
विघटित होने के लिए बाध्य। इस अवस्था में, हम अब और नहीं हैं
पूरे ब्रह्माण्ड में फैली अनगिनत अन्य प्रजातियों में से किसी एक प्रजाति के कमज़ोर सदस्य की तुलना में।

दूसरा मुख अनन्त जीवन की ओर देखता है क्योंकि
परमेश्वर के सेवकों के रूप में हमारी प्रकृति के बारे में हमारी धारणा
परमेश्वर के सेवकों की असहायता और अपर्याप्तता
हम महत्वपूर्ण, समावेशी प्राणी हैं। सर्वज्ञ सृष्टिकर्ता
अनंत नपुंसकता और गरीबी को जन्म दिया है
हमारा स्वभाव ऐसा हो कि हम में से प्रत्येक एक व्यापक हो सके
ईश्वर की अनंत अभिव्यक्तियों को प्रतिबिंबित करने वाला दर्पण
करुणा और शक्ति, समृद्धि और उदारता।
इसलिए, विश्वास और पूजा के माध्यम से, हम असीम शक्ति और असीम धन प्राप्त करते हैं।

हम बीज के समान हैं, क्योंकि हममें से प्रत्येक में पूर्णता प्राप्त करने की क्षमता है। बीज को शक्ति द्वारा महान क्षमता प्रदान की जाती है और उसे पूर्णता प्राप्त करने के लिए नियत किया जाता है।

इसे लागू करें। डेस्टिनी के सूक्ष्म कार्यक्रम के अनुसार, इसे भूमिगत रूप से अंकुरित होना चाहिए ताकि यह विकसित हो सके
अपनी क्षमता की भाषा के अनुसार पूजा करके एक “उत्तम” वृक्ष बनाया जा सकता है। यदि वह बीज हानिकारक पदार्थों को आकर्षित करने के लिए अपनी क्षमता का दुरुपयोग करता है, तो वह जल्द ही सड़ जाएगा
अपने संकीर्ण स्थान में। यदि यह अपनी क्षमता का सही उपयोग करता है, हालाँकि, और उसके नियमों के अनुपालन में
जो कोई बीज को अंकुरित करने के लिए फाड़ता है (6:95), वह उग आएगा
अपनी संकीर्ण जगह से और एक भयानक में विकसित,
फलदार वृक्ष। इसके अलावा, इसकी छोटी और विशेष प्रकृति
एक महान एवं सार्वभौमिक सत्य का प्रतिनिधित्व करेगा।

हमारा सार भी महान शक्ति से सुसज्जित है
क्षमता और भाग्य द्वारा महत्वपूर्ण कार्यक्रमों के साथ अंकित है। अगर हम अपनी क्षमता और आध्यात्मिक का उपयोग करते हैं
इस संकीर्ण दुनिया में संसार की मिट्टी के नीचे की क्षमताएँ-
अपने शारीरिक, बुराई-आदेश देने वाले स्वार्थ की कल्पनाओं को संतुष्ट करने के लिए
अपने पूरे जीवन का उपयोग करते हुए, हम भ्रष्ट, सड़े हुए बन जाएंगे
बीज, एक छोटे से जीवन के दौरान एक तुच्छ सुख के लिए।
इस प्रकार हम इस संसार से भारी दुःख के साथ विदा होंगे।
हमारी अभागी आत्माओं पर आध्यात्मिक बोझ।

लेकिन अगर हम अपनी क्षमता के बीज को अंकुरित करते हैं
“पूजा की मिट्टी” को “इस्लाम के पानी” से मिलाना और
कुरान के अनुसार "विश्वास का प्रकाश",
और अगर हम अपनी आध्यात्मिक क्षमताओं का उपयोग उनके सच्चे उद्देश्यों के लिए करते हैं, तो हम शाश्वत, राजसी वृक्ष बन जाएंगे जिनकी

शाखाएँ मध्यवर्ती विश्व तक फैली हुई हैं और
वह दुनिया जहाँ हमारे कर्म परलोक के लिए विशिष्ट रूप धारण करते हैं। इससे परलोक में अनगिनत, उत्तम फल मिलेंगे। हम बन जाएँगे

सृष्टि के वृक्ष का फल, जो अनुग्रहित होगा
अनंत पूर्णता और अनगिनत के साथ स्वर्ग में
आशीर्वाद का।

हम सच्ची प्रगति तभी कर सकते हैं जब हम
हमारी क्षमताएँ (जैसे, बुद्धि, हृदय, आत्मा और कल्पना) अनंत जीवन के लिए समर्पित हैं, ताकि प्रत्येक व्यक्ति अपनी-अपनी तरह की पूजा में व्यस्त हो जाए। जिसे गुमराह लोग प्रगति मानते हैं - अपनी क्षमताओं को समर्पित करना

सांसारिक, दुष्टतापूर्ण स्वार्थ को सब कुछ चखने के लिए
सांसारिक सुखों से वंचित रहना और कुछ नहीं, बल्कि पतन और गिरावट है। मैंने एक बार एक दर्शन में इस सत्य को देखा था, जो
इस प्रकार है:

मैं बड़े महलों से भरे एक विशाल शहर में पहुंचा।
उनमें से कुछ ने चल रहे तमाशे और शो पर ध्यान दिया
मनोरंजन और मन बहलाने के लिए। जैसे ही मैं उनमें से एक के पास पहुंचा,
मैंने देखा कि उसका मालिक एक कुत्ते के साथ खेल रहा था
दरवाजे पर खड़ी महिलाएं युवा अजनबियों से बातचीत कर रही थीं और
लड़कियाँ बच्चों के खेल आयोजित कर रही थीं। दरबान ऐसे व्यवहार कर रहा था जैसे वह उनका मालिक हो। मुझे एहसास हुआ कि महल खाली था, सभी महत्वपूर्ण सामान वहाँ नहीं थे

इसके भ्रष्ट निवासियों के लिए, कार्य अनदेखे छोड़ दिए गए
बेकार के कामों में लगे हुए थे।

फिर मैं एक और महल के पास पहुंचा।
कुत्ता दरवाजे पर लेटा था और उसके बगल में एक दरबान खड़ा था जिसका चेहरा सख्त, गंभीर और शांत था।
महल इतना शांत लग रहा था कि मैं आश्चर्य में पड़ गया और
अंदर बहुत हलचल मची हुई थी, क्योंकि
निवासी अलग-अलग महत्वपूर्ण कार्यों में व्यस्त थे। पहली मंजिल पर रहने वाले लोग काम संभाल रहे थे
महल की दूसरी मंजिल पर लड़कियाँ और लड़के थे
तीसरी मंजिल पर महिलाएँ सुंदर कलाकृतियाँ और नाजुक कढ़ाई बना रही थीं।
सबसे ऊपरी मंजिल पर, मालिक अपने घर की सुरक्षा के लिए राजा के साथ लगातार संपर्क में था।
ताकि वह अपने अच्छे कर्तव्यों का पालन कर सके
अपनी प्रगति और पूर्णता के लिए।
मुझे देखो, मैं बिना रोक-टोक के घूम रहा था।

बाहर आकर मैंने देखा कि शहर में ऐसे ही महल भरे पड़े हैं। मैंने पूछा तो मुझे बताया गया कि ये महल ऐसे ही हैं।
पहला सबसे बड़े अविश्वासियों का था
और गुमराह, जबकि दूसरे प्रकार के लोग
यह जगह ईमानदार मुस्लिम हस्तियों की थी।
मैं एक महल के पास पहुंचा जिस पर मेरा नाम लिखा था: "सईद।" जब मैंने इसे करीब से देखा, तो मुझे ऐसा लगा जैसे मैंने देखा हो

उस पर मेरी छवि। घबराहट में रोते हुए, मैं आया
मैं होश में आया और जाग गया।

शहर हमारा सामाजिक जीवन और मानवीय जीवन का भूभाग है। सभ्यता। प्रत्येक महल एक मानव है, और
निवासी मानव इंद्रियां और संकाय हैं (जैसे, आंखें,
कान, बुद्धि, हृदय और आत्मा, तथा क्रोध की शक्तियाँ
और वासना) प्रत्येक इंद्रिय और क्षमता का एक विशेष कर्तव्य है
पूजा-अर्चना के साथ-साथ विशेष सुख-दुख का भी वर्णन किया गया है।
स्वयं और कल्पनाएँ, साथ ही क्रोध की शक्तियाँ
और वासना, कुत्ते और दरबान के अनुरूप हैं।
इस प्रकार, उत्कृष्ट इंद्रियों और क्षमताओं को वश में करना
शारीरिक इच्छाओं और कल्पनाओं के प्रति इतना आकर्षित हो जाते हैं कि वे अपनी इच्छाओं और कल्पनाओं को भूल जाते हैं
आवश्यक कर्तव्यों में गिरावट और भ्रष्टाचार है। यह निश्चित रूप से प्रगति नहीं है। आप अन्य विवरणों की व्याख्या कर सकते हैं
खुद के लिए।

तीसरी टिप्पणी: अपने कार्यों और शारीरिक प्रयासों में हम कमजोर जानवरों और असहाय प्राणियों की तरह हैं।
हमारे पास जो क्षेत्र है वह इतना सीमित है कि हमारी उंगलियाँ उसकी परिधि को छू सकती हैं। हमारी कमज़ोरी,
नपुंसकता और आलस्य इतना अधिक है कि
पालतू जानवर उनसे प्रभावित होते हैं।
जब एक पालतू पशु की तुलना उसके गैर-पालतू पशु से की जाती है, तो दोनों में बहुत अंतर देखा जा सकता है।

लेकिन निष्क्रिय, प्राप्तकर्ता प्राणियों के रूप में जिन्हें प्रार्थना करने की आवश्यकता है
और याचिका, हम योग्य यात्री हैं जिन्हें रहने की अनुमति है

हम इस दुनिया के अतिथिगृह में कुछ समय के लिए हैं।
एक उदार व्यक्ति के मेहमान, जिसने अपनी अनंत
करुणा के खजाने को हमारे लिए उपलब्ध कराया है और अपनी सृजनात्मक शक्ति
के अद्वितीय कार्यों और विशेष सेवकों को हमारे अधीन कर दिया है। इसके अलावा,
उन्होंने हमारे उपयोग के लिए तैयार किया है
और आनंद इतना विशाल क्षेत्र है कि इसकी त्रिज्या
जहाँ तक दृष्टि या कल्पना भी पहुँच सकती है।

यदि हम अपनी शारीरिक और जन्मजात क्षमताओं पर भरोसा करते हैं, सांसारिक
जीवन को अपना लक्ष्य मानते हैं और उसके ऊपर ध्यान केंद्रित करते हैं
सुखों की चाह में हम एक बहुत ही संकीर्ण दायरे में घुट जाएंगे
इसके अलावा, हमारे शारीरिक अंग, इंद्रियाँ और क्षमताएँ हमारे खिलाफ मुकदमा
और गवाही लाएँगी
परलोक में। लेकिन अगर हम जानते हैं कि हम मेहमान हैं और इसलिए
अपना जीवन हमारे द्वारा स्वीकृत सीमाओं के भीतर व्यतीत करें
उदार मेज़बान, हम सुखी और शांतिपूर्ण जीवन व्यतीत करेंगे
और सर्वोच्च पद पर पहुंचें। हमें पुरस्कृत किया जाएगा
परलोक में अनंत आनंदमय जीवन की प्राप्ति हो, तथा
हमारे सभी शारीरिक सदस्य और संकाय गवाही देंगे
हमारे पक्ष में.

हमारे अद्भुत संकाय इसके लिए नहीं बने हैं

तुच्छ सांसारिक जीवन; बल्कि, वे हमारे शाश्वत के लिए हैं
जीवन। हमारे पास अन्य लोगों की तुलना में बहुत अधिक क्षमताएं और इंद्रियां हैं
जानवर करते हैं, लेकिन हम अपने भौतिक जीवन से जो आनंद प्राप्त करते हैं वह जानवरों की
तुलना में बहुत कम है।

हर सांसारिक सुख में दुःख के निशान होते हैं, वह नष्ट हो जाता है

अतीत के दुखों और भविष्य के डर के साथ, और खुशी के अंतिम रूप से गायब हो जाने के साथ। जानवरों का अनुभव
दुःख रहित सुख, चिंता रहित आनंद,
और न ही अतीत के दुख और न ही भविष्य की चिंता।
वे आरामदायक जीवन का आनन्द लेते हैं और अपने सृष्टिकर्ता की स्तुति करते हैं।

हम सबसे अच्छे पैटर्न में बनाए गए हैं। अगर हम इस सांसारिक जीवन पर ध्यान केन्द्रित करो हम बहुत नीचे हैं गौरैया से ज़्यादा, हालाँकि हमारी क्षमताएँ किसी भी जानवर से कहीं ज़्यादा विकसित हैं। उदाहरण के लिए, एक आदमी अपने नौकर को 10 सोने के सिक्के देता है और उससे कहता है एक खास कपड़े से अपने लिए एक सूट बनवाया। वह देता है दूसरे नौकर को 1,000 सोने के सिक्के देकर भेज देता है बाजार में खरीदारी की सूची लेकर जाता है। पहला व्यक्ति खरीदारी करता है बेहतरीन कपड़े का बेहतरीन सूट। बाद वाला मूर्खतापूर्ण कार्य करता है, क्योंकि वह न तो यह देखता है कि उसके पास कितना पैसा है खरीदारी की सूची दी गई थी और न ही पढ़ता है। यह सोचकर कि उसे अपने दोस्त की नकल करनी चाहिए, वह एक दुकान पर जाता है और सूट मांगता है। बेईमान दुकानदार उसे सूट दे देता है सबसे घटिया किस्म के कपड़े से बना सूट। दुर्भाग्यपूर्ण नौकर अपने मालिक के पास लौटता है और उसे कठोर दंड मिलता है फटकार और भयानक सजा। कोई भी देख सकता है कि 1,000 स्वर्ण सिक्के किसी मुकदमे के लिए नहीं दिए गए थे, लेकिन एक बहुत ही महत्वपूर्ण लेनदेन के लिए।

उसी तरह, हमारी आध्यात्मिक क्षमताएँ, भावनाएँ, और इंद्रियाँ मनुष्यों की तुलना में बहुत अधिक विकसित होती हैं

जानवर। उदाहरण के लिए, हम सुंदरता के सभी स्तरों को देख सकते हैं, किसी खाद्य पदार्थ के विशेष स्वाद की सभी किस्मों का स्वाद ले सकते हैं, दृश्यमान वास्तविकताओं के कई विवरणों को भेदना, तरसना पूर्णता के सभी स्तरों के लिए, इत्यादि। लेकिन जानवर, एक विशेष क्षमता को छोड़कर जो अपने विशेष कर्तव्य के अनुसार विकास की उच्च अवस्था तक पहुँचती है, केवल मामूली विकास ही प्राप्त कर सकती है, यदि कोई भी।

हमारी इन्द्रियाँ और भावनाएँ, जो विकसित हुई हैं हमारे मन और बुद्धि के कारण बहुत कुछ आवश्यक है कि हमारे पास बहुत सी क्षमताएँ हैं। हमारी बहुत सी ज़रूरतें हैं हममें विभिन्न प्रकार की भावनाएँ विकसित हुईं, कई चीज़ों के प्रति बहुत संवेदनशील हो जाते हैं। हमारी व्यापक प्रकृति हमें इच्छाएँ दी गई हैं कई लक्ष्यों और उद्देश्यों की ओर मुड़ गए। हमारी इंद्रियाँ और हमारे आवश्यक कर्तव्यों की विविधता के कारण संकायों का बहुत विस्तार हुआ है। इसके अलावा, चूंकि हम पूजा करने के लिए इच्छुक और सक्षम, हमारे पास क्षमता है सभी प्रकार की पूर्णता का एहसास करने के लिए।

ऐसी समृद्ध क्षमताएं और प्रचुर संभावनाएं हमें किसी तुच्छ चीज़ के लिए नहीं दिया जा सकता है, अस्थायी, सांसारिक जीवन। वास्तव में, उन्हें दिया गया था हमारे लिए क्योंकि हमारा आवश्यक कर्तव्य है कि हम अपने दायित्व, जो अंतहीन उद्देश्यों की ओर निर्देशित हैं; हमारी नपुंसकता, गरीबी और अपर्याप्तता की पुष्टि करने के लिए

उपासना के माध्यम से; हमारी दूरगामी दृष्टि से अध्ययन करना और
गहरी समझ; सृष्टि द्वारा ईश्वर की महिमा का साक्ष्य देना; दयालु ईश्वर की सहायता को समझना
और उसके प्रति कृतज्ञ होना जो ईश्वर के रूप में भेजी जाती है

वरदानों का; तथा उसकी शक्ति के चमत्कारों को देखने, उन पर विचार करने, तथा उनसे
चेतावनी प्राप्त करने का
सृष्टि में.

हे जगत-पूजक, तू सांसारिक जीवन से मोहित है और अपने स्वरूप के अर्थ से अनभिज्ञ
है!
सृष्टि के सर्वोत्तम प्रतिरूप के रूप में! एक बार मैंने सत्य को देखा
इस सांसारिक जीवन की प्रकृति को एक दृष्टि में इस प्रकार दर्शाया गया है: मेरा
प्रभु ने मुझे इस यात्रा पर निकलने के लिए प्रेरित किया था।
धीरे-धीरे उसने मुझे 60 सोने के सिक्कों में से कुछ दे दिए
मुझे आवंटित किया गया था। यह कुछ समय तक चलता रहा, और
थोड़ी देर बाद मैं एक सराय में पहुंचा जो कुछ प्रदान करता था
मनोरंजन। मैंने एक ही बार में 10 सोने के सिक्के जुए में हार गए
मनोरंजन और मौज-मस्ती की रात। अगली सुबह, मेरे पास ज़रूरत के सामान के लिए पैसे
नहीं थे
मेरी मंजिल पर। मेरे पास बचा था तो बस दर्द, दुख,
और पापों और अवैध सुखों से बचा हुआ पछतावा। जबकि मैं
जब मैं इस दयनीय स्थिति में था, किसी ने मुझसे कहा: "तुम
तुमने अपना सब कुछ खो दिया है और दण्ड के पात्र हो।
इसके अलावा, आप अपने गंतव्य तक पहुंच जाएंगे
पैसे नहीं हैं। लेकिन अगर आप अपना दिमाग लगाएंगे तो दरवाजा खुल जाएगा।
पश्चाताप बंद नहीं हुआ है। जब आपको विश्राम मिलता है

पैसे का आधा हिस्सा बचाकर रखें और अपने गंतव्य पर ज़रूरत की चीज़ें खरीदने में इसका इस्तेमाल करें।"

मेरा स्वत्व सहमत नहीं था, इसलिए उस व्यक्ति ने कहा: "तो इसका एक तिहाई बचा लो।" फिर भी मेरा स्वत्व पीछे हट गया। उस व्यक्ति ने जोर दिया: "तो एक चौथाई।" मैं जानता था कि मेरा स्वत्व अपनी लतों को नहीं छोड़ सकता, इसलिए वह व्यक्ति क्रोधित होकर दूर चला गया और गायब हो गया। तुरंत, मैंने खुद को एक तेज़ गति वाली ट्रेन में पाया जो एक सुरंग से गुज़र रही थी। मैं घबरा गया, लेकिन कोई रास्ता नहीं था। मुझे आश्चर्य हुआ, मैंने सुरंग के किनारे ट्रैक के किनारे बहुत ही आकर्षक फूल और स्वादिष्ट दिखने वाले फल लटकते हुए देखे। मैंने मूर्खतापूर्वक उनमें से कुछ को तोड़ने की कोशिश की। लेकिन उनके चारों ओर कांटे थे, जो ट्रेन की गति के कारण मेरे हाथों को चीर रहे थे और उनमें से खून बह रहा था। मैंने जो कुछ भी पकड़ने की कोशिश की, वह मेरी मुट्ठी से फिसल गया। अचानक एक परिचारक आया और बोला: "मुझे 5 सेंट दो और मैं तुम्हें जितने फूल और फल चाहिए उतने दूंगा। अन्यथा, तुम्हारे सारे हाथ कट जाने पर, तुम 5 सेंट के बजाय 100 खो दोगे। इसके अलावा, बिना अनुमति के उन्हें चुनने पर सजा का भी प्रावधान है।"

इस स्थिति से हताश होकर मैंने खिड़की से बाहर देखा कि सुरंग कब खत्म होगी।

सुरंग की दीवारों में कई छेद थे, जिनमें यात्रियों को फेंका जा रहा था। अचानक

मैंने अपने ठीक सामने एक खुला स्थान देखा,
दोनों तरफ़ एक क़ब्र का पत्थर था। जब मैंने बाहर झाँका, तो मैंने देखा
मेरा नाम, "सैड" बड़े अक्षरों में लिखा हुआ
कब्र का पत्थर। मैं घबराहट और पश्चाताप की चीख़ें निकाल रहा था।
अप्रत्याशित रूप से, मैंने उस आदमी की आवाज़ सुनी जो
सराय में मुझसे पूछा था, "क्या तुम आये हो
क्या तुम होश में आओगे?" मैंने जवाब दिया: "हाँ, लेकिन मैं निराश हूँ
और मैं कुछ नहीं कर सकता।" उसने मुझे पश्चाताप करने के लिए कहा
और भगवान पर भरोसा रखो, जिस पर मैंने जवाब दिया कि मैं ऐसा करूँगा। फिर
मैं जागा और मैंने पाया कि मैं बदल गया हूँ
नया कहा; पुराना कहा चला गया।

अब मैं इस दृष्टिकोण के कुछ पहलुओं की व्याख्या करूंगा:
यात्रा हमारा जीवन है, अनंत काल की अमूर्त दुनिया से लेकर अनंत के चरणों
से गुज़रने की एक यात्रा।
आपकी माँ का गर्भ, युवावस्था, बुढ़ापा, कब्र,
मध्यवर्ती विश्व, पुनरुत्थान, और पुल।
ये 60 स्वर्ण सिक्के औसतन 60 वर्षों के बराबर हैं।
जीवन भर। मैं 45 साल का था जब मुझे यह दर्शन हुआ। केवल भगवान
जानता है कि मैं कब मरूंगा। कुरान का एक सच्चा विद्यार्थी
मुझे सच्चा रास्ता दिखाया ताकि मैं अपना आधा जीवन जी सकूँ
शेष 15 वर्ष परलोक के लिए होंगे।

मुझे समझ में आ गया कि वह सराय इस्तांबुल में थी।
ट्रेन समय थी और हर गाड़ी एक साल थी। सुरंग यह सांसारिक जीवन था।
काँटेदार फूल और फल
अवैध सुख और निषिद्ध मनोरंजन थे

अलग होने के विचार से दिल को खून से लथपथ कर दो
जिस क्षण आप उन तक पहुँचते हैं, उनका गायब हो जाना
सुख दुःख को बढ़ाता है और इसके अलावा, अवैध होने के कारण, व्यक्ति को दंड भुगतना पड़ता है।
कहा: "मुझे 5 सेंट दो, और मैं तुम्हें उतने ही दूंगा
फूल और फल जैसे आप चाहते हैं।" इसका मतलब है कि
वैध तरीके से प्राप्त स्वीकार्य स्वाद और आनंद
ये सभी तरीके मुझे संतुष्ट करने के लिए पर्याप्त हैं, इसलिए इनकी कोई आवश्यकता नहीं है।
अवैध तरीकों का अनुसरण करना।

चौथी टिप्पणी: हम कोमल बच्चों के समान हैं।

हमारी ताकत हमारी कमजोरी में है, और हमारी शक्ति हमारी कमजोरी में है।
हमारी नपुंसकता। शक्ति और ताकत की इस कमी ने
सृष्टि को हमारे अधीन कर दिया। इसलिए यदि हम अपनी कमज़ोरी को समझें और उसके विनम्र सेवक बनें
मौखिक और सक्रिय प्रार्थना के माध्यम से ईश्वर से प्रार्थना करें, और यदि हम अपनी नपुंसकता को पहचान लें और ईश्वर की सहायता मांगें, तो हम अवश्य ही ईश्वर से प्रार्थना करेंगे।
प्रकृति को हमारे अधीन करने के लिए हमने उनके प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट की है।

इसके अलावा, परमेश्वर हमें अपने लक्ष्य तक पहुँचने में सक्षम बनाएगा
और अपने लक्ष्यों को ऐसे तरीके से प्राप्त करें जो हमारे अपने लक्ष्य से कहीं बेहतर हो
क्षमता। कभी-कभी हम गलत तरीके से किसी इच्छा को जिम्मेदार ठहराते हैं
अपनी शक्ति और योग्यता की प्राप्ति, जबकि वास्तव में यह हमें प्रार्थना के माध्यम से प्राप्त हुई है
हमारे स्वभाव की जीभ द्वारा पेश किया गया। गौर कीजिए कि कैसे
शक्ति का एक बड़ा स्रोत चूजे की कमजोरी है, क्योंकि

यह माँ मुर्गी को शेर पर भी हमला करने के लिए मजबूर कर देता है। शेर
शावक की कमजोरी एक महान शेरनी को वश में कर लेती है, जो
अपने बच्चे को खिलाने के लिए भूख से तड़पना पड़ेगा। कितना अद्भुत है
क्या कमज़ोरी में शक्तिशाली आकर्षण निहित है, और क्या
असहाय प्राणियों के प्रति करुणा की एक अद्भुत अभिव्यक्ति।

इसी तरह, प्यारे बच्चे अपने
रो कर, कामना करके, या उदास चेहरा बनाकर लक्ष्य प्राप्त करना, ये सब
जिससे शक्तिशाली लोग उनकी सेवा कर सकें।
व्यावहारिक रूप से बच्चे अपनी ताकत पर भरोसा करते हैं
वे कुछ भी हासिल नहीं कर सकते। उनकी कमजोरी और शक्तिहीनता, साथ ही
स्नेह और संरक्षण की भावनाएं, उनके पक्ष में इतनी हैं कि एक भी इशारा उन्हें
प्रभावित नहीं कर सकता।
उन्हें शक्तिशाली व्यक्तियों को अपने अधीन करने की अनुमति दें। लेकिन अगर वे अहंकार से
उनके प्रति दिखाए गए देखभाल और स्नेह को नकारते हैं और यह सब करने का दावा करते हैं

वे अपने ही हैं, वे सज़ा के हकदार हैं।
यदि हम अपने सृष्टिकर्ता की आज्ञा का उल्लंघन करते हैं तो हम दण्ड के पात्र हैं
दया करो और यह कहकर अपनी कृतघ्नता दिखाओ कि हमारा
अपनी शक्ति और ज्ञान से - ईश्वरीय दया से नहीं -
यह सब हासिल कर लिया है। हम कोरह की तरह होंगे, जिसने
कहा: मुझे यह (मेरी संपत्ति) बदले में दी गई है
मेरे ज्ञान का (28:78)

इससे पता चलता है कि प्रकृति में हमारा प्रभुत्व,
और सभ्यता में हमारी उन्नति और प्रगति

और प्रौद्योगिकी, मुख्य रूप से हमारे आवश्यक के कारण हैं
कमजोरी और लाचारी, जो ईश्वर को आकर्षित करती है
सहायता। हमारी गरीबी ईश्वरीय प्रावधान का स्रोत है,
हमारी अज्ञानता की भरपाई ईश्वरीय प्रेरणा से होती है, और हमारी ज़रूरतें
ईश्वरीय अनुग्रह प्राप्त करती हैं।
दया, स्नेह और बुद्धि, हमारी अपनी शक्ति नहीं
और ज्ञान ने हमें प्रभुत्व से सशक्त बनाया है
सृष्टि पर अधिकार कर लिया है और चीज़ों को हमारे नियंत्रण में कर दिया है।
ईश्वरीय सत्ता और करुणा हमें सक्षम बनाती है
इतने कमज़ोर कि हम एक अंधे बिच्छू और एक पैरहीन साँप से भी पराजित
हो सकते हैं, और हम रेशम के कपड़े पहन सकते हैं
एक कीड़ा और एक डंक मारने वाले कीट द्वारा उत्पादित शहद को खाना।

हे लोगो, जब यह सत्य है तो अहंकार और अहंकार को त्याग दो। बल्कि
अपनी नपुंसकता की पुष्टि करो।
और परमेश्वर की उच्च उपस्थिति में माँगने से कमजोरी
उसकी सहायता के लिए प्रार्थना और विनती करें।
अपनी गरीबी और अपर्याप्तता को दिखाएं। दिखाएँ कि आप
उसके सच्चे बन्दे हो। फिर कह दो, " हमारे लिए अल्लाह ही काफ़ी है।"
अत्यन्त श्रेष्ठ है वह जिसपर हम भरोसा करते हैं (3:173)
उच्च पदों पर चढ़ना।

ऐसा मत कहो कि मैं कुछ भी नहीं हूँ। सर्वज्ञ सृष्टिकर्ता को सृष्टि को मेरे
अधीन क्यों छोड़ना चाहिए और मुझसे क्या माँग करनी चाहिए?
सार्वभौमिक आभार?" भौतिक दृष्टि से आप लगभग
कुछ भी नहीं, लेकिन आपका कर्तव्य या पद आपको उपस्थित बनाता है-

इस भव्य ब्रह्माण्ड का एक पर्यवेक्षक, दिव्य ज्ञान की घोषणा करने वाले
प्राणियों की एक वाक्पटु जीभ,
सृष्टि की इस पुस्तक का एक समझदार छात्र, ईश्वर की स्तुति करने वाले
प्राणियों का एक प्रशंसनीय पर्यवेक्षक,
पूज्य प्राणियों का एक आदरणीय गुरु।

हे मानवता, तुम एक तुच्छ अणु हो, एक दरिद्र प्राणी हो।
आपके शारीरिक रूप से प्राणी और कमज़ोर जानवर
अस्तित्व और आत्मा। और इसलिए आप बहक रहे हैं
सृष्टि की विशाल तरंगों द्वारा। लेकिन यदि आप पूर्ण हैं
ईमान की रौशनी के ज़रिए, जिसमें ईश्वरीय प्रेम की चमक शामिल है, और
इस्लाम की तालीम के ज़रिए,
तुम सेवक होने में राजसीपन पाओगे,
आपकी विशिष्टता में व्यापकता, एक दुनिया
आपकी छोटी इकाई, और आपकी तुच्छता में एक बहुत ही उच्च रैंक। बाकी
के आपके पर्यवेक्षण का क्षेत्र
सृष्टि इतनी व्यापक होगी कि आप कह सकेंगे: “मेरी
दयालु भगवान ने दुनिया को अपना घर बनाया है
उसने मुझे सूर्य और चन्द्रमा दीपक के रूप में दिये हैं,
वसंत गुलाब के गुलदस्ते के रूप में, गर्मियों के भोज के रूप में
उसने जानवरों को आज्ञाकारी सेवक बनाया है।
मेरे पास सजावट के रूप में पौधे और वनस्पतियाँ हैं
और मेरे घर के लिए रसद सामग्री।”

अंत में, आपकी दुष्ट-आज्ञा का पालन करना
स्वार्थ और शैतान का अनुसरण आपको सबसे निम्नतम गहराई तक ले जाता है, जबकि
सत्य और कुरान का अनुसरण आपको सबसे निम्नतम गहराई तक ले जाता है

सर्वोच्च पद और सबसे उत्कृष्ट प्रतिरूप के रूप में निर्माण।

पांचवी टिप्पणी: हमें यहां मेहमान के रूप में भेजा गया है एक विशेष जिम्मेदारी के साथ। महत्वपूर्ण क्षमताओं से संपन्न, हमें महत्वपूर्ण कार्य सौंपे गए हैं
कर्तव्यों का पालन करने के लिए दृढ़ता से आग्रह किया जाता है। यदि हम ऐसा करते हैं नहीं, हमें सज़ा मिलेगी। "सबसे अच्छा बनना"
सृष्टि के स्वरूप को और अधिक समझने योग्य बनाने के लिए, मैं उपासना और कर्तव्यों के आवश्यक तत्वों का सारांश दीजिए।

हमारी पूजा के दो पहलू हैं। पहला पहलू अंतर्निहित है और प्रतिबिंब और चेतना से संबंधित है। इसमें सृष्टि पर उनके प्रभुत्व की संप्रभुता के प्रति हमारा समर्पण और उनकी सुंदरता और कार्यों को विस्मय में देखना शामिल है

पूर्णता। हम दूसरों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करते हैं
कला के जटिल, अलंकृत कार्य: पवित्र दिव्य नामों की अभिव्यक्तियाँ। हम "इकाइयों" में भी मापते हैं
उचित अनुभूति और विवेक के रत्न
भगवान के नाम, जिनमें से प्रत्येक में एक छिपी हुई आध्यात्मिक शक्ति है
उन्हें संजोकर रखें और अपने हृदय की कृतज्ञतापूर्ण प्रशंसा के साथ उनका मूल्यांकन करें।

फिर हम सृष्टि के पन्नों का अध्ययन करते हैं और आकाश और पृथ्वी की चादरें, जिनमें से प्रत्येक एक है ईश्वरीय शक्ति का संदेश, और उनका मनन करें बहुत प्रशंसा हुई। बाद में, जब हम आश्चर्य से देखते हैं-

सृष्टि में दिखाई देने वाले सूक्ष्म अलंकरण और परिष्कृत कौशल पर प्रशंसा और प्रशंसा करते हुए, हम उत्साहपूर्वक
अपने सुंदर सृष्टिकर्ता को जानने की इच्छा रखते हैं और तरसते हैं
उसकी उपस्थिति में प्रवेश करें, जहाँ हमें प्राप्त होने की आशा है
उसके पक्ष में.

दूसरा पहलू, दृश्यमान प्रार्थना, का अर्थ है
हमारे राजसी निर्माता की ओर, जो स्वयं चाहता है
उनकी कलात्मकता के चमत्कारों के माध्यम से जाना जाता है।
सीधे उसकी उपस्थिति में, हम अपना बोझ हल्का कर लेते हैं
उस पर सच्चे मन से विश्वास रखें और ज्ञान प्राप्त करने का प्रयास करें
हम समझते हैं कि एक दयालु भगवान चाहता है
उसकी करुणा के सुन्दर फलों के माध्यम से प्रेम पाने के लिए,
और इसलिए हम अपने प्रेम और आराधना को उसके प्रति समर्पित करके स्वयं को उसके प्रिय बनायें।

यह देखकर कि उदार प्रदाता हमारा पोषण करता है
उनकी सर्वोत्तम और प्रियतम भौतिक और आध्यात्मिक कृपाओं के साथ, हम कृतज्ञता और प्रशंसा के साथ प्रत्युत्तर देते हैं,
हमारे कार्यों, कर्मों, जीवनशैली और, यदि
संभव है, हमारी इंद्रियाँ और क्षमताएँ। यह देखते हुए कि
सौंदर्य और ऐश्वर्य के भगवान स्वयं प्रकट होते हैं
प्राणियों का दर्पण और उसकी महिमा की ओर ध्यान आकर्षित करता है
और पूर्णता, महिमा और सौंदर्य, हम जवाब देते हैं:
"ईश्वर महानतम है। ईश्वर की जय हो," और दंडवत प्रणाम
उसके सामने आश्चर्य और श्रद्धा से खड़े हो जाओ।

यह देखते हुए कि परम धनवान परमेश्वर अपनी असीम सम्पदा और खजाने को असीम उदारता से प्रदर्शित करते हैं, हम उनकी महिमा करके प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं
और उसकी स्तुति करें और अपनी ज़रूरत को प्रदर्शित करते हुए उससे पूछें
उसके अनुग्रह के लिए। यह देखते हुए कि राजसी सृष्टिकर्ता
पृथ्वी को एक प्रदर्शनी की तरह व्यवस्थित किया है ताकि वह अपनी
अतुलनीय कार्यों के लिए हम उनकी सराहना करते हुए कहते हैं:
“परमेश्वर ने क्या ही अजूबे सोचे और बनाए हैं,” यह कहकर उनकी सुंदरता की पुष्टि करें: “परमेश्वर उन्हें आशीर्वाद दे,” दिखाएँ
हमारे आश्चर्य को यह कहकर व्यक्त करें: “परमेश्वर की महिमा हो,” और
हमारी प्रशंसा यह कहकर व्यक्त करें: “परमेश्वर महानतम है।”

हम देखते हैं कि वह अद्वितीय अपनी एकता दर्शाता है
संपूर्ण सृष्टि में अपने अद्वितीय चिन्हों और विशिष्ट आदेशों तथा अपनी अद्वितीय मुहरों और मुहरों के द्वारा
जो उसने हर प्राणी पर डाला है। वह चिन्हों को अंकित करता है
वह हर चीज़ पर अपनी एकता का प्रतीक है और अपनी एकता का झंडा पूरे विश्व में फहराकर अपनी एकता की घोषणा करता है।
आधिपत्य। हम इसका जवाब विश्वास, पुष्टि,
उनकी एकता की स्वीकृति और गवाही, और
भक्ति और सच्ची पूजा.

हम ऐसे तरीकों से सच्ची मानवता प्राप्त कर सकते हैं
पूजा और चिंतन का। हम दिखा सकते हैं कि हम हैं
सृष्टि का सर्वोत्तम नमूना और, विश्वास की कृपा से,
पृथ्वी पर परमेश्वर के भरोसेमंद प्रतिनिधि बनें।
अब हे असावधान लोगों, जो अधोगति की ओर बढ़ते हो।

अपनी वसीयत का दुरुपयोग करके उच्चतम स्तर पर पहुंचें, हालाँकि आपके पास सृष्टि के सर्वोत्तम प्रतिरूप के रूप में सृजित किया गया है, सुनिए
मैं यह देखना चाहता हूँ कि दुनिया का चेहरा कितना बदसूरत है,
जुनून और इच्छाओं की ओर, और इसका दूसरा चेहरा कितना असाधारण रूप से सुंदर है, जो जुनून और इच्छाओं की ओर मुड़ता है ...
इसके बाद, नीचे दी गई तालिकाओं को देखें।

पहली तालिका

(यह तालिका असावधान लोगों की सच्ची भावना को दर्शाती है (अपनी दुनिया)

मुझे दुनिया में मत बुलाओ,
मैं आया और पाया कि यह दुष्ट और नश्वर है।
असावधानी एक परदा थी;
मैंने सत्य का प्रकाश छिपा हुआ देखा।
सभी चीज़ें, सम्पूर्ण सृष्टि,
मैंने देखा कि वे नश्वर और हानि से भरे हुए थे।
अस्तित्व, वास्तव में मैंने इसे धारण किया है।
अफ़सोस! यह अस्तित्वहीनता थी; मुझे बहुत कष्ट सहना पड़ा।
जहाँ तक जीवन की बात है, मैंने इसे अनुभव
किया; मैंने देखा कि यह पीड़ा के भीतर पीड़ा थी।
बुद्धि शुद्ध प्रतिशोध बन गई; मैंने स्थायित्व को क्लेश के
रूप में देखा।
ज़िन्दगी हवा सी थी, सनक में गुज़र जाती थी;
मैंने पूर्णता को शुद्ध हानि के रूप में देखा।
काम तो केवल दिखावे के लिए थे;
मैंने महत्वाकांक्षाओं को शुद्ध पीड़ा के रूप में देखा।
मिलन वस्तुतः अलगाव था;
मैंने देखा कि इलाज ही बीमारी है।

ये रोशनियाँ अंधकार बन गईं;
मैंने देखा कि ये दोस्त अनाथ हो गये हैं।
ये आवाजें मौत की घोषणाएं थीं;
मैंने जीवितों को मृत देखा।
ज्ञान सनक में बदल गया;
मैंने विज्ञान में हजारों बीमारियाँ देखीं।
सुख मिश्रित दुःख बन गये;
मैंने अस्तित्व को अनस्तित्व का मिश्रित रूप देखा।
मुझे सच्चा प्रियतम मिल गया है;
आह, वियोग के कारण मुझे बहुत पीड़ा हुई।

दूसरी तालिका

(यह तालिका दुनिया की सच्ची भावना का वर्णन करती है मार्गदर्शन और शांति के लोगों में से।)

असावधानी लुप्त हो गई है;
मैंने सत्य के प्रकाश को प्रकट होते देखा है।
अस्तित्व ईश्वरीय सत्ता का प्रमाण है।
देखो, जीवन सत्य को प्रतिबिंबित करने वाला दर्पण है।
बुद्धि खजाने की कुंजी बन गई है।
देखो, नश्वरता ही शाश्वतता का द्वार है।
आत्म-प्राप्ति की चिंगारी मर चुकी है।
लेकिन देखो, वहाँ अनुग्रह और सौंदर्य का सूर्य है।
जीवन शुद्ध कर्म बन गया है। देखो, अनंत काल शुद्ध जीवन है।
अंधकार प्रकाश को घेरने वाली एक पतली झिल्ली है।
देखो, मृत्यु में ही सच्चा जीवन है।
सभी चीजें परिचित हो गई हैं।
देखो, सभी ध्वनियाँ ईश्वरीय नामों का उच्चारण हैं।
सृष्टि के सभी कण:
देखो, हर कोई भगवान के नाम का जाप करता है और उनकी महिमा करता है।

मैंने गरीबी को धन का खजाना पाया है।

देखो, नपुंसकता में ही सम्पूर्ण शक्ति छिपी है।

यदि तुम्हें ईश्वर मिल गया है तो देखो, सब कुछ तुम्हारा है।

यदि तुम सब वस्तुओं के स्वामी के सेवक हो,

देखो, उसकी सम्पत्ति तुम्हारी है।

यदि आप अहंकारी हैं और स्वयं पर स्वामित्व का दावा करते हैं,

यह अंतहीन परीक्षण और क्लेश है।

यह अनंत पीड़ा है जिसे तुम्हें अनुभव करना है,

यह एक असहनीय आपदा है.

यदि आप सचमुच ईश्वर के सेवक हैं, उनके प्रति समर्पित हैं,

देखो, यह एक असीम आनन्द है।

इसके अनगिनत पुरस्कारों का स्वाद चखो,

इसके असीम आनंद का अनुभव करें...

तेरी महिमा हो। हमें इसके सिवा और कोई ज्ञान नहीं
तूने हमें शिक्षा दी है, वास्तव में तू सर्वज्ञ है।
हे मेरे प्रभु, मेरे मन को शांति प्रदान करो और मुझे सुख प्रदान करो।
मेरा काम है। मेरी जीभ से एक गांठ ढीली करो ताकि वे
मेरी बात समझो.

हे ईश्वर, मुहम्मद पर शांति और आशीर्वाद प्रदान करें,
उसका शुद्ध, अद्वितीय सार, जो प्रकाश प्रकट करता है
सारे रहस्य, प्रकाश की अभिव्यक्ति, बिंदु
जिस पर ईश्वर की महिमा के प्रकटीकरण केन्द्रित हैं, वह धुरी जिसके चारों ओर उनकी
कृपा का संसार घूमता है
और सौंदर्य घूमता है।

हे परमेश्वर, उसके सम्बन्ध में उसका रहस्य
आप, और उसकी आपकी ओर यात्रा के लिए, मुझे सुरक्षित करें
मेरे डर से, मुझे गिरने से बचाओ, मेरी शक्ति को कम करो
मेरे दुखों को दूर करो और मुझे मेरे जुनून से शुद्ध करो। मेरे साथ रहो,
मुझे स्वयं से दूर अपने पास ले चलो, और मुझ पर अनुग्रह करो
खुद से मिटाना। मुझे जुनूनी मत छोड़ो

मेरे साथ, मेरी भावनाओं से ढका हुआ। मेरे लिए हर चीज़ को उजागर करो रहस्य।

हे सनातन जीवित और आत्मनिर्भर, हे सनातन
जीवित और आत्मनिर्भर, हे शाश्वत जीवित और
हे आत्म-निर्भर। मुझ पर और मेरे साथियों पर दया करो। सभी ईमान वालों और सभी पर दया करो।
कुरान के लोगों। आमीन, हे दयालु!
हे दयालु, हे दानवीरों में सबसे अधिक उदार!

उनके आह्वान का निष्कर्ष होगा: "सभी प्रशंसा है
सारे संसार के स्वामी परमेश्वर के कारण।"

अट्ठाईसवाँ पत्र / पाँचवाँ ग्रंथ

का पवित्र महीना
रमजान

[रमज़ान के रोज़े रखने के कुछ दैवीय उद्देश्यों की चर्चा, क्योंकि यह इस्लाम का सबसे उज्ज्वल और सबसे शानदार प्रतीक या अनुष्ठान है। इस खंड में नौ भाग हैं
नौ उद्देश्यों को स्पष्ट करने वाले बिंदु।]

ईश्वर के नाम पर, जो दयालु,
कृपालु है।

रमज़ान का महीना जिसमें क़ुरआन अवतरण हुआ
यह मार्ग मानवता के लिए मार्गदर्शन, स्पष्ट मार्गदर्शन और प्रमाण है। (2:158)

पहला बिंदु: रमजान का रोज़ा इस्लाम के नियमों में से एक है। सबसे प्रमुख स्तंभ और महानतम प्रतीक। इसके कई उद्देश्य परमेश्वर के प्रभुत्व और धन्यवाद देने से संबंधित हैं उनकी उदारता के लिए, और मानवता के व्यक्तिगत और सामूहिक जीवन, आत्म-प्रशिक्षण और आत्म-अनुशासन।

उनके आधिपत्य से जुड़ा एक उद्देश्य यह है कि परमेश्वर अपने प्रभुत्व की पूर्णता और अपने अस्तित्व को प्रदर्शित करता है वह अत्यन्त दयालु और दयावान है।

पृथ्वी की सतह, जिसे उन्होंने एक तालिका के रूप में डिज़ाइन किया था
उसकी कृपाएँ मानवीय कल्पना से परे हैं। फिर भी, लोग पूरी तरह से समझ नहीं पाते
असावधानी और कारणता के अंधे आवरण के कारण इस स्थिति की वास्तविकता। लेकिन रमज़ान के दौरान, एक सेना की तरह
इसके आदेश की प्रतीक्षा में, श्रद्धालु पूजा करते हैं
मानो उन्हें उम्मीद है कि उन्हें खुद की मदद करने के लिए कहा जाएगा
दिन का अंत। इस प्रकार वे उस भव्य और सार्वभौमिक दया का व्यापक रूप से जवाब देते हैं
और सामूहिक पूजा का सामंजस्यपूर्ण कार्य। मुझे आश्चर्य है
यदि वे लोग जो पूजा नहीं करते या सम्मान में हिस्सा नहीं लेते
इतने अनुग्रह प्राप्त करने के कारण ही मनुष्य कहलाने के योग्य हैं।

दूसरा बिंदु: जैसा कि पहले शब्द में कहा गया है, दूसरा उद्देश्य यह दिखाना है कि किसी वस्तु की एक कीमत होती है।
राजा के रसोईघर से नौकर द्वारा लाया गया भोजन।
जाहिर है, यह एक अविश्वसनीय मूर्खता होगी
सेवक को न पहचानना और राजा को न पहचानना, उस उपहार के प्रति स्पष्ट अनादर है। उसी तरह, सर्वशक्तिमान ईश्वर
पृथ्वी पर अपनी अनगिनत कृपाएँ फैलाता है और
उन्हें एक कीमत पर प्रदान करता है: धन्यवाद।

उन इनामों या उन के स्पष्ट कारण
जो उन्हें हमारे पास लाते हैं वे उस सेवक के समान हैं जो
उपरोक्त उदाहरण। हम नौकरों को वेतन देते हैं, ऋणी महसूस करते हैं
उन्हें धन्यवाद दें और कभी-कभी उनका आभार भी व्यक्त करें, भले ही
वे केवल कारण या साधन हैं। इस प्रकार हम उन्हें दिखाते हैं

वे सम्मान की एक सीमा तक हकदार नहीं हैं। सच्चा दानदाता इन दानों के लिए धन्यवाद का कहीं अधिक हकदार है। इस तरह का धन्यवाद दानों की आवश्यकता को स्वीकार करने, उनकी पूरी तरह से सराहना करने और उन्हें सीधे उसी को समर्पित करने का रूप धारण करता है।

रमज़ान का उपवास एक सच्चे, ईमानदार, व्यापक और सार्वभौमिक धन्यवाद की कुंजी है। बहुत से लोग अपने द्वारा भोगी गई अधिकांश चीज़ों की सराहना नहीं कर पाते, क्योंकि उन्हें भूख नहीं लगती। उदाहरण के लिए, सूखी रोटी का एक टुकड़ा उन लोगों के लिए कोई मायने नहीं रखता जो भरे हुए हैं, खासकर अगर वे अमीर हैं, हालाँकि उनके स्वाद की भावना भी इस बात की गवाही देती है कि यह विश्वासियों के उपवास तोड़ने की दृष्टि में ईश्वर का एक बहुत ही मूल्यवान उपहार है।

रमजान के दौरान, हर कोई ईश्वरीय उपहारों के मूल्य को समझकर हृदय से धन्यवाद देता है।

उपवास करते समय, विश्वासी सोचते हैं: "चूँकि ये उपहार मूल रूप से मेरे नहीं हैं, इसलिए मैं इन्हें केवल भोजन या पेय नहीं मान सकता। चूँकि वे मेरे स्वामी हैं और मुझे देते हैं, इसलिए मुझे उन्हें खाने के लिए उनकी अनुमति का इंतज़ार करना चाहिए।" इस प्रकार भोजन और पेय को ईश्वरीय उपहार के रूप में स्वीकार करके, विश्वासी मौन रूप से ईश्वर को धन्यवाद देते हैं। यही कारण है कि उपवास धन्यवाद की कुंजी है, जो एक मौलिक मानवीय कर्तव्य है।

तीसरा बिन्दु: उपवास मानवता से संबंधित है।
सामूहिक जीवन, क्योंकि ईश्वर ने प्रत्येक को एक समान जीवन न देने का निर्णय लिया है।
व्यक्ति की आजीविका का मतलब है कि अमीरों को मदद करनी है
गरीब। उपवास के बिना, कई अमीर और आत्म-भोगी
लोग भूख की पीड़ा को नहीं समझ सकते और
गरीबी, और किस हद तक गरीबों को देखभाल की जरूरत है।
अपने साथियों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करना ही सच्चे धन्यवाद का आधार है।

हमेशा कोई न कोई गरीब होता है, इसलिए हर किसी को
ऐसे लोगों की मदद करें। अगर लोग भूख से नहीं तड़पेंगे तो यह
उनके लिए अच्छा करना या मदद करना लगभग असंभव है
दूसरों को। अगर वे ऐसा करते भी हैं तो वे ऐसा अपूर्ण रूप से ही कर पाते हैं,
क्योंकि वे भूखे व्यक्ति की स्थिति को महसूस नहीं कर पाते।
उसी सीमा तक।

चौथा बिंदु: रमज़ान के रोज़े में कई बातें शामिल हैं
आत्म-प्रशिक्षण और आत्म-अनुशासन से संबंधित दिव्य उद्देश्य, जैसे: शारीरिक आत्मा स्वतंत्र
और अप्रतिबंधित होने की इच्छा रखती है और खुद को मानती है। यह यहाँ तक कि

अपने स्वभाव से ही, यह एक काल्पनिक आधिपत्य की इच्छा रखता है
और स्वतंत्र, मनमानी कार्रवाई। यह सोचना पसंद नहीं है कि यह है
परमेश्वर की अनगिनत परीक्षाओं के द्वारा प्रशिक्षित और परखा जाना
इनामों को, यह ऐसे इनामों को एक जानवर की तरह, चोर या डाकू की तरह
निगल जाता है, खासकर अगर
इसकी संपत्ति और शक्ति के साथ लापरवाही भी है-
नेस.

रमज़ान के दौरान, हर किसी की आत्मीयता समझ में आती है
कि इसका स्वामित्व एक दूसरे के पास है, स्वयं के पास नहीं; कि यह
यह एक सेवक है, स्वतंत्र एजेंट नहीं। जब तक आदेश या अनुमति न मिले, यह सबसे
सामान्य काम भी नहीं कर सकता,
खाने-पीने की तरह। यह असमर्थता इसकी
यह भ्रमपूर्ण प्रभुत्व को समाप्त कर देता है तथा उसे अपनी दासता स्वीकार करने तथा
धन्यवाद देने के अपने वास्तविक कर्तव्य को निभाने में सक्षम बनाता है।

पांचवां बिंदु: रमजान का उपवास शारीरिक आत्मा को विद्रोह करने से रोकता है और उसे अच्छे आचरण से सुसज्जित करता है।

असावधानी के कारण मनुष्य का शारीरिक स्वत्व अपने आप को भूल जाता है। वह अपने अन्तर्निहित को न तो देखता है, न देखना चाहता है।

अनंत नपुंसकता, गरीबी और दोष। यह
इस बात पर विचार न करें कि यह दुर्भाग्य से कैसे उजागर होता है और
क्षय के अधीन, कि यह मांस और हड्डियों से बना है
जो तेजी से विघटित और विघटित हो जाते हैं।
दुनिया पर हिंसक लालच और आसक्ति के साथ,
मानो उसका शरीर इस्पात का हो और वह हमेशा जीवित रहेगा, और
जो भी लाभदायक और आनंददायक है, उससे चिपके रहते हैं।
इस अवस्था में, यह अपने निर्माता को भूल जाता है, जो इसे प्रशिक्षित करता है
उत्तम देखभाल। बुरे के दलदल में डूबे रहना
नैतिकता के मामले में, यह परिणामों के बारे में नहीं सोचता
इसका जीवन यहाँ है या इसका परलोक।

लेकिन रमज़ान में रोज़ा रखने से सबसे ज़्यादा लापरवाह और जिद्दी व्यक्ति भी अपनी कमज़ोरी और जन्मजात कमजोरी महसूस करने लगता है।

गरीबी। भूख एक महत्वपूर्ण विचारणीय बिन्दु बन जाती है-

उन्हें यह एहसास होता है कि उनका शरीर कितना नाज़ुक है। वे करुणा और करुणा की ज़रूरत को समझते हैं।
परवाह करते हैं और अहंकार त्याग कर शरण लेना चाहते हैं
ईश्वरीय न्यायालय में पूर्ण असहायता और निराशा के साथ उपस्थित हों, तथा दया के द्वार पर दस्तक देने के लिए उठ खड़े हों
मौन धन्यवाद का हाथ - बशर्ते, बेशक,
यह असावधानी अभी भी उन्हें पूरी तरह से भ्रष्ट नहीं कर पाई है।

छठा बिन्दु: ईश्वर ने कुरान का अवतरण आरम्भ किया
रमज़ान के दौरान। इसके कई निहितार्थ हैं, जैसे
जैसे: जैसे कि कुरान को इस दौरान उतारा गया हो
हर रमज़ान में, ईमान वालों को फ़रिश्तों की तरह बनने की कोशिश करनी चाहिए
और खाना-पीना त्याग दें, और अपने आप को सांसारिक स्वार्थ की व्यर्थ व्यस्तताओं से मुक्त कर लें
सकल जरूरतें। रमजान के दौरान, उन्हें पढ़ना चाहिए या
कुरान को ऐसे सुनो जैसे वह किसी के लिए अवतरित हो रहा हो
पहली बार। यदि संभव हो तो उन्हें इसे सुनना चाहिए
यदि वे पैगम्बर मुहम्मद को इसे पढ़ते हुए सुन रहे होते,
या गेब्रियल ने इसे मुहम्मद को सुनाया, या भगवान ने इसे गेब्रियल के माध्यम से मुहम्मद को बताया। उन्हें चाहिए
अपने दैनिक कार्यों में कुरान का सम्मान करें और
अपना सन्देश दूसरों तक पहुँचाना, प्रदर्शित करना
इसके प्रकटीकरण का ईश्वरीय उद्देश्य।

रमज़ान मुस्लिम दुनिया को एक विशाल धर्म में बदल देता है
मस्जिद जिसमें लाखों लोग कुरान पढ़ते हैं

पृथ्वी के निवासी। महीने की वास्तविकता को प्रदर्शित करना
रमज़ान का महीना, जिसमें कुरान का अवतरण हुआ
(2:185), रमज़ान खुद को अल्लाह की रज़ामंदी का महीना साबित करता है।
कुरान। जबकि विशाल मण्डली में से कुछ
मुस्लिम दुनिया की महान मस्जिद इसकी बात सुनो
गंभीर श्रद्धा के साथ पाठ करते हुए, अन्य लोग इसे पढ़ते हैं।
सांसारिक स्वार्थ की आज्ञा का पालन करके उस स्वर्गीय आध्यात्मिक अवस्था
को त्यागना और इस प्रकार भोजन करना सबसे अप्रिय है
और पवित्र "मस्जिद" में शराब पीना, क्योंकि इससे पूरी जमात भड़क जाती है।
यह सबसे अप्रिय भी है और इससे मुस्लिम दुनिया में उन मुसलमानों के प्रति
अरुचि और घृणा पैदा होगी जो उपवास करते हैं।

रमजान.

सातवां बिंदु: रमज़ान के दौरान रोज़ा रखने से
किसी व्यक्ति के आध्यात्मिक पुरस्कार से संबंधित कई उद्देश्य,
क्योंकि हर किसी को इस दुनिया में बीज बोने के लिए यहां भेजा गया है
अगले जीवन के बीज। निम्नलिखित पैराग्राफ
ऐसे ही एक उद्देश्य की व्याख्या इस प्रकार करें:

रमज़ान के दौरान किए गए अच्छे कामों का पुरस्कार
एक हज़ार से गुणा किया जाता है। एक परंपरा कहती है
कुरान के प्रत्येक अक्षर के लिए 10 पुरस्कार दिए जाते हैं।
एक अक्षर का उच्चारण करने से 10 अच्छे कर्म होते हैं, और इससे धन की प्राप्ति होती है।
जन्नत के 10 फल बताए गए हैं। लेकिन रमज़ान के दौरान, यह
इनाम 1,000 से गुणा किया जाता है, और ऐसे मामलों में इससे भी अधिक

आयतों को "सिंहासन की आयत" कहा जाता है।27 रमज़ान की शुक्रवार की रातों में इसका इनाम और भी ज़्यादा होता है। इसके अलावा, अगर इसे शक्ति की रात (जिस रात कुरान का अवतरण शुरू हुआ) के दौरान पढ़ा जाए तो हर अक्षर 30,000 गुना बढ़ जाता है। रमज़ान के दौरान कुरान, जिसका हर अक्षर जन्नत के 30,000 स्थायी फल देता है, एक विशाल धन्य वृक्ष की तरह बन जाता है जो जन्नत के लाखों स्थायी फल देता है।

विचार करें कि यह व्यापार कितना पवित्र और लाभदायक है, और उन लोगों के लिए यह कितना बड़ा नुकसान है जो कुरान के अक्षरों की सराहना नहीं करते हैं।

इसलिए रमज़ान परलोक के नाम पर इस तरह के लाभदायक व्यापार के लिए सबसे उचित समय है। यह परलोक की फसल के लिए खेती करने के लिए सबसे उपजाऊ खेत की तरह है। अच्छे कर्मों के लिए इसके पुरस्कारों का गुणन इसे वसंत में अप्रैल जैसा बनाता है। यह उन लोगों की परेड के लिए एक पवित्र, शानदार त्योहार है जो प्रभु की संप्रभुता की पूजा करते हैं।

---

27 ऐ अल्लाह! उसके सिवा कोई पूज्य नहीं, वह जीवित, स्वयंभू, सबको पालनेवाला है। उसे नींद और निद्रा नहीं आती। आकाशों और धरती की हर चीज़ उसी की है। उसके यहाँ कौन सिफ़ारिश कर सकता है जब तक कि वह उसे इजाज़त न दे। वह अपने प्राणियों के आगे, पीछे और पीछे जो कुछ है, उसे जानता है। वे उसके ज्ञान में से उतना ही प्राप्त कर सकते हैं, जितना वह इजाज़त दे। उसका सिंहासन आकाशों और धरती पर फैला हुआ है। वह उनकी रक्षा करने में कभी थकावट महसूस नहीं करता, क्योंकि वह सर्वोच्च , सर्वोच्च है। (2:255)

इसलिए रमजान का रोज़ा फ़र्ज़ है, क्यों
विश्वासियों को शारीरिक स्वार्थ की संतुष्टि की अनुमति नहीं है
पशुवत लालसाओं को पूरा करना तथा उनकी व्यर्थ कल्पनाओं में लिप्त होना।
चूँकि वे उपवास करते समय या ऐसे व्यापार में लगे रहते हुए स्वर्गदूतों की
तरह बन जाते हैं, इसलिए प्रत्येक आस्तिक ईश्वर की आत्मनिर्भरता को
प्रतिबिंबित करने वाला दर्पण है। वे भौतिक वेश में प्रकट होने वाली शुद्ध
आत्मा बनने की ओर बढ़ते हैं
एक निश्चित अवधि के लिए दुनिया को त्यागना। वास्तव में,
रमज़ान में ईमान वालों को लाभ मिलता है,
उपवास के माध्यम से, थोड़े समय के बाद स्थायी जीवन
इस दुनिया में.

एक रमज़ान में मोमिनों को 80 फ़ायदे मिल सकते हैं
वर्षों का इनाम, क्योंकि कुरान घोषित करता है
नाइट ऑफ पावर 80 वर्षों से अधिक लाभदायक होगी
ऐसी कोई रात नहीं है (97:3)। राजा घोषणा कर सकता है
उनके जैसे विशेष अवसर को यादगार बनाने के लिए कुछ छुट्टियाँ
सिंहासनारूढ़ होना, और फिर अपने वफादार विषयों को सम्मानित करना
उन दिनों को विशेष अनुग्रह के साथ। इसी प्रकार, शाश्वत,
18,000 दुनियाओं के राजसी राजा ने खुलासा किया
कुरान, उनका महान आदेश, रमज़ान के दौरान प्रत्येक दुनिया के लिए। इस
प्रकार ज्ञान की आवश्यकता है कि रमज़ान एक विशेष दिव्य त्योहार हो जिसके
दौरान ईश्वर की प्रभुता का प्रदर्शन किया जाता है
वरदान उंडेलता है और आत्मिक प्राणी एक साथ आते हैं।
चूँकि रमज़ान एक ईश्वरीय त्यौहार है,

उपवास का आदेश इसलिए दिया जाता है ताकि लोग
कुछ हद तक उनकी शारीरिक व्यस्तताएँ भी कम हो जाती हैं।

उपवास लोगों को शारीरिक इंद्रियों या अंगों द्वारा किए गए पापों को त्यागने और उनका उपयोग करने में सक्षम बनाता है
प्रत्येक व्यक्ति की पूजा के विशेष कार्यों में। उदाहरण के लिए, जो लोग उपवास करते हैं, उन्हें अपनी जीभ को झूठ बोलने से रोकना चाहिए,
चुगली करना, और कसम खाना और इसे सुनाने में व्यस्त रहना
कुरान, ईश्वर की महिमा का बखान, उनसे क्षमा की प्रार्थना, और
पैगम्बर मुहम्मद पर अपना आशीर्वाद मांगते हुए।
उनकी आँखों को देखने से रोकना चाहिए, और उनके
कानों को वर्जित बातें सुनने से रोकते हैं; बल्कि, वे
उन चीजों को देखना चाहिए जो आध्यात्मिक शिक्षा देती हैं या
नैतिक चेतावनी दें, और कुरान और सच्चाई को सुनें।
जब फैक्ट्री रूपी पेट को काम करने से रोक दिया जाता है, तो अन्य सदस्यों (छोटी कार्यशालाओं) को काम में लाया जा सकता है।
इसका आसानी से पालन करना।

आठवां बिंदु: उपवास का एक उद्देश्य है
शारीरिक और आध्यात्मिक आहार पर लोग। अगर शारीरिक

अगर कोई व्यक्ति अपनी मर्जी से काम करता है, खाता-पीता है, तो इससे लोगों के शारीरिक स्वास्थ्य को नुकसान पहुंचता है। लेकिन, सबसे महत्वपूर्ण बात यह

है कि अगर कोई व्यक्ति अपनी मर्जी से काम करता है, खाता-पीता है, तो इससे उसके शारीरिक स्वास्थ्य को नुकसान पहुंचता है।

आध्यात्मिक जीवन को नुकसान पहुंचता है क्योंकि वे वैध और अवैध के बीच भेदभाव नहीं करते हैं।

शारीरिक आत्मा को हृदय की आज्ञा मानना बहुत कठिन लगता है और
आत्मा। किसी भी सिद्धांत को मान्यता न देते हुए, यह व्यक्ति की
उसे अपनी मर्जी से नियंत्रित और संचालित करता है।

रमज़ान का रोज़ा उसे परहेज़ करने का आदी बनाता है, और आत्म-अनुशासन उसे आज्ञा पालन करना सिखाता है; पेट को कोई नुकसान नहीं पहुँचाया जाता पिछले भोजन से पहले अधिक खाने से
यदि वह उचित रीति से पच जाए और विधि-सम्मत बातों को त्यागना सीख जाए, तो वह तर्क और धर्म के आदेश का पालन कर सकता है।
गैरकानूनी कामों से दूर रहना। इस प्रकार शारीरिक आत्मा कोशिश करती है
अपने स्वामी के आध्यात्मिक जीवन को दूषित न करें।

इसके अलावा, अधिकांश लोग विभिन्न स्तरों पर भूख से पीड़ित रहते हैं।
लम्बे समय तक भूख को धैर्यपूर्वक सहने के लिए, लोग
स्वयं को आत्म-अनुशासन और तपस्या में प्रशिक्षित करना चाहिए। रमज़ान का रोज़ा धैर्य-आधारित यह शिक्षा प्रदान करता है
लोगों को 15 घंटे तक भूखा रखकर प्रशिक्षण दिया जाता है,
या यदि भोर से पहले का भोजन छूट जाए तो 24 घंटे तक भी।
इस प्रकार उपवास अधीरता और सहनशक्ति की कमी को दूर करता है, जो मानवता के दुर्भाग्य को दोगुना कर देता है।

शरीर के कई अंग किसी न किसी तरह से पेट की सेवा करते हैं। अगर वह "फैक्ट्री" किसी खास महीने में दिन के समय की अपनी दिनचर्या बंद नहीं करती है, तो वह उन अंगों को अपने पास रखती है।
अपने आप में व्यस्त और अपनी पूजा को भूल गए
और उत्कृष्ट कर्तव्य। यही कारण है कि संत हमेशा पसंद करते हैं
तपस्या आध्यात्मिक और मानवीय पूर्णता का एक मार्ग है।
रमज़ान में रोज़ा रखना हमें याद दिलाता है कि हमारे शरीर के अंग सिर्फ़ पेट की सेवा करने के लिए नहीं बनाए गए हैं। रमज़ान में, शरीर के कई अंग उपवास का अनुभव करते हैं।
दिव्य और आध्यात्मिक - भौतिक सुखों के विपरीत -

परिणामस्वरूप, उपवास करने वाले विश्वासियों को आध्यात्मिक पूर्णता के अपने स्तर के अनुसार आध्यात्मिक आनंद और ज्ञान की डिग्री प्राप्त होती है। रमज़ान का उपवास व्यक्ति के दिल, आत्मा, तर्क और अंतरतम इंद्रियों को परिष्कृत करता है।
यदि पेट में शिकायत भी हो तो ये इन्द्रियाँ प्रसन्न रहती हैं।

नौवीं बात: रमजान का उपवास शारीरिक आत्मा के भ्रामक प्रभुत्व को तोड़ता है और उसे याद दिलाता है कि वह स्वाभाविक रूप से असहाय है, तथा उसे विश्वास दिलाता है कि वह एक सेवक है।
चूँकि शारीरिक आत्मा अपने प्रभु को पहचानना पसंद नहीं करती, इसलिए वह कष्ट सहते हुए भी हठपूर्वक प्रभुत्व का दावा करती है।
केवल भूख ही ऐसे स्वभाव को बदल सकती है। ईश्वर के दूत बताते हैं कि सर्वशक्तिमान ईश्वर ने शारीरिक आत्मा से पूछा: "मैं कौन हूँ, और तुम कौन हो?" उसने उत्तर दिया: "तुम स्वयं हो, और मैं स्वयं हूँ।" ईश्वर ने उसे जितना भी सताया और अपना प्रश्न दोहराया, उसे वही उत्तर मिला। लेकिन जब उसने उसे भूख के अधीन किया, तो उसने उत्तर दिया: "आप मेरे दयालु प्रभु हैं; मैं आपका असहाय सेवक हूँ।"

हे ईश्वर, हमारे स्वामी मुहम्मद को ऐसी शांति और आशीर्वाद प्रदान कर, जिससे आप प्रसन्न हों और उन्हें रमज़ान के दौरान कुरान के अक्षरों को पढ़ने के लिए मिलने वाले सवाबों की संख्या के अनुसार उनका हक़ प्रदान कर सकें, तथा उनके परिवार और साथियों को भी। आपका रब पवित्र है, जो सम्मान और शक्ति का रब है; जो लोग उसे गलत तरीके से आरोपित करते हैं, उससे कहीं अधिक महान है। रसूलों पर शांति हो, और सारी प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जो सारे संसार का रब है। आमीन।

उनतीसवाँ पत्र / दूसरा ग्रंथ

धन्यवाद

ईश्वर के नाम पर, जो दयालु,
कृपालु है।

कोई चीज़ ऐसी नहीं जो उसकी स्तुति से महिमा न करती हो। (17:44)

क़ुरआन में इस तरह के वाक्यों को दोहराया गया है: क्या वे कृतज्ञ नहीं होंगे? (36:35, 73) हम कृतज्ञ लोगों को पुरस्कार देंगे। (3:145) यदि तुम कृतज्ञ होगे तो मैं तुम्हें और अधिक दूँगा। (14:7) नहीं, बल्कि तुम अल्लाह की इबादत करते हो, तो कृतज्ञ बनो (39:66) यह दिखाने के लिए कि दयालु सृष्टिकर्ता का सबसे महत्वपूर्ण आदेश कृतज्ञ होना है। यह घोषणा करते हुए कि ऐसा न करना उपकारों को अस्वीकार करना है, वह उन्हें कम से कम 31 बार सूरतुल रहमान में कड़ी फटकार लगाता है: तो फिर तुम अपने रब की किन किन उपकारों को अस्वीकार करते हो?

यह ब्रह्मांड, अपने सूक्ष्म जगत क़ुरान की तरह, यह भी दर्शाता है कि सृष्टि का सबसे महत्वपूर्ण परिणाम धन्यवाद है। हम देख सकते हैं कि ब्रह्मांड को धन्यवाद जगाने के लिए एक तरह से व्यवस्थित किया गया है, और हर चीज इसके लिए आह्वान करती है। ऐसा लगता है कि धन्यवाद सृष्टि के वृक्ष का सबसे महत्वपूर्ण फल है और

ब्रह्मांड के इस कारखाने का सबसे अच्छा उत्पाद,
ब्रह्माण्ड एक वृत्त के आकार में है, जिसके केन्द्र में
जो जीवन है। सृष्टि का डिज़ाइन इस ओर निर्देशित है
जीवन, क्योंकि हर चीज़ जीवन की सेवा करती है और प्रदान करने का काम करती है
इसकी ज़रूरतें पूरी होती हैं। इसका मतलब है कि ब्रह्मांड का निर्माता
ब्रह्माण्ड से जीवन निकाला, संसार बनाया
गोलाकार रूपों में जीवित प्राणियों की, और मानवता को रखा
केंद्र में। जीवित प्राणियों के निर्माण के उद्देश्य
मानवता की ओर निर्देशित हैं, जो अन्य सभी प्राणियों के लिए है
सेवा करो। इसका मतलब है कि महान निर्माता ने चुना
मानवता को उन पर शासन करने के लिए प्रेरित किया।

गोलाकार मानव और पशु के केंद्र में
संसार का ईश्वरीय विधान है। सृष्टिकर्ता ने प्रेम का संचार किया
लोगों और जानवरों में प्रावधान के लिए, और उनसे आग्रह करता है
इसके लिए काम करना। उन्होंने प्रोविडेंस को एक विशाल और समृद्ध बनाया
अनंत उपहारों का खजाना। ताकि लोग और जानवर प्रत्येक स्वाद को पहचान
सकें, उसने जीभ को सक्षम किया
जितने खाद्य पदार्थ हैं उतने स्वादों में भेद करना तथा
पेय। यह देखते हुए, प्रोविडेंस ब्रह्मांड का सबसे अधिक है
स्पष्ट, व्यापक, जिज्ञासु और मनभावन वास्तविकता।

जब सब कुछ ईश्वर के इर्द-गिर्द केंद्रित होता है और ईश्वर की ओर निर्देशित होता है, तो ईश्वर स्वयं आता है, जीवित रहता है, और धन्यवाद की ओर इशारा करता है। यह है
क्योंकि ईश्वर की कृपा की आवश्यकता और इच्छा स्वाभाविक है।

मौखिक धन्यवाद, और खुशी और संतुष्टि
प्रोविडेंस से आ रही एक अचेतन हैं
धन्यवाद। ये दोनों ही गुण सभी सजीव प्राणियों में समान हैं। जो लोग ऐसे
प्राणियों के स्वभाव को बदलते हैं
गुमराही और अविश्वास के माध्यम से धन्यवाद
परमेश्वर के साथ साझेदार जोड़ने में।

उपहारों के सुंदर रूप, उनके स्वाद और
खुशबू, धन्यवाद के लिए निमंत्रण हैं।
जीवित प्राणियों में इच्छा जगाना और इस प्रकार उन्हें निर्देशित करना
ईश्वर की सराहना और सम्मान करने के लिए, वे जानवरों से उनके
स्वभाव के माध्यम से धन्यवाद देने का आग्रह करते हैं, और
लोगों को अपनी ज़बान और कामों से ऐसा करने के लिए प्रेरित किया।
जीवों को भी महानतम अनुभव कराता है
धन्यवाद के माध्यम से ही आनंद और संतुष्टि मिलती है।

दूसरे शब्दों में, करुणा के खजाने के सर्व-दयालु, सर्व-उदार मालिक को
दिखाना
सबसे सुखद और स्थायी अनुग्रह और कृपा
इनामों के अस्थायी आनंद के पीछे सक्षम बनाता है
मानवता को इस दुनिया में रहते हुए स्वर्ग का स्थायी आनंद अनुभव करने के लिए प्रेरित करना।
ईश्वर एक ईश्वरीय कृपा बन जाता है
धन्यवाद के माध्यम से अमूल्य और समृद्ध खजाना,
लेकिन इसके अभाव में यह लगभग शून्य हो जाता है
आभारी होना.

जैसा कि छठे वचन में बताया गया है, यदि जीभ
स्वाद की इंद्रिय का उपयोग भगवान के लिए, भेद करने के लिए किया जाता है-

धन्यवाद देने के इरादे से प्रोविडेंस के प्रकारों का उपयोग करते हुए, यह ईश्वर की असीम दया के अनगिनत खजानों का एक आभारी परीक्षक और एक उच्च सम्मानित पर्यवेक्षक बन जाता है। लेकिन अगर इस अर्थ का उपयोग शारीरिक स्व के लिए किया जाता है और प्रदाता को धन्यवाद नहीं देता है, तो यह केवल पेट की फैक्ट्री का चौकीदार, पेट की कार्यशाला का दरबान है। जैसा कि धन्यवाद न देना प्रोविडेंस के उस सेवक को नीचा करता है, प्रोविडेंस की प्रकृति और उसके अन्य सेवक (जैसे, हवा, प्रकाश और पानी) भी उसी तरह सबसे निचले स्तर पर आ जाते हैं और ब्रह्मांड के निर्माता की बुद्धि के विपरीत और विरोधी गुण ग्रहण करते हैं।

धन्यवाद देना संतोष और बचत, सहमति और कृतज्ञता से पहचाना जाता है; धन्यवाद न देना लालच और बर्बादी, कृतघ्नता और वैध और अवैध की परवाह किए बिना उपभोग करने से पहचाना जाता है। लालच से दुराचार और अपमान होता है। यह भी कहा जा सकता है कि चींटी, वह धन्य प्राणी जिसका सामाजिक जीवन है, पैरों तले कुचली जाती है क्योंकि उसका लालच उसे हज़ारों दाने इकट्ठा करने के लिए प्रेरित करता है जबकि कुछ दाने ही काफी हो सकते हैं। लेकिन मधुमक्खी अपने संतोष के कारण ऊपर से उड़ती है और लोगों को अपना शहद देती है।

वह दिव्य नाम जो अत्यंत दयालु है, सबसे महान है।
पवित्र दिव्य सार का नाम इसके बाद आता है

ईश्वर (अल्लाह-उसका वास्तविक नाम और सबसे बड़ा)
महानतम नाम) ईश्वरीय कृपा से संबंधित है।
और दयालु का सबसे स्पष्ट अर्थ है
सर्व-प्रदाता। व्यक्ति उस नाम से जुड़ा हुआ है
धन्यवाद के माध्यम से। धन्यवाद के कई प्रकारों में से, सबसे व्यापक दैनिक निर्धारित प्रार्थनाएँ हैं।

धन्यवाद ज्ञापन में ईश्वर की एकता के प्रति सच्ची आस्था और सच्ची घोषणा निहित है।
सेब उठाकर कहता है, "सारी स्तुति और धन्यवाद परमेश्वर को हो,"
घोषणा करता है कि सेब किसके हाथ से आया
शक्ति, उसकी दया के खजाने से एक उपहार है, और इस प्रकार सब कुछ
भगवान की शक्ति और हाथ को सौंप दिया जाता है
वह हर चीज़ में अपनी दया को प्रकट होता देखता है।

मैं उन लोगों को हुए नुकसान का एक पहलू बताना चाहता हूँ
जो धन्यवाद नहीं देते। जब लोग भगवान को धन्यवाद देते हैं
कुछ स्वादिष्ट, एक प्रकाश उत्पन्न होता है और बन जाता है
स्वर्ग का एक फल। भौतिक सुख के अलावा,
यह अधिक से अधिक और स्थायी आध्यात्मिक आनंद देता है
क्योंकि इससे लोग इसे एक उपकार के रूप में देखते हैं
ईश्वरीय दया का पात्र। इस प्रकार ईश्वर द्वारा दिया गया कोई भी भोजन
उदारता अपना आध्यात्मिक परिणाम उच्चतर तक भेजती है,
कृतज्ञता के कारण निराकार दुनिया। उसके बाद,
यह शरीर को पोषण देने के लिए पचता है और उत्सर्जित होता है
मिट्टी में तत्व बन जाते हैं। धन्यवाद के बिना,
यह भौतिक सुख अंततः दुःख में परिणत होता है

क्योंकि यह गायब हो जाता है और भोजन बर्बाद हो जाता है
पदार्थ। उपभोज्य इनाम स्थायी उत्पादन करते हैं
धन्यवाद देने से वे सुख पाते हैं और स्थायी फल प्राप्त करते हैं; इसके बिना
वे सबसे निम्नतम रूप बन जाते हैं
सबसे बुरा स्वभाव, जैसा कि लापरवाह, कृतघ्न लोग देखते हैं
उन्हें केवल खाने और फिर मल त्यागने की वस्तु ही समझें।

ईश्वर प्रेम का हकदार है। जबकि धन्यवाद इस प्रेम को एक उदात्त,
स्थायी प्रेम (प्रेम) में बदल देता है
ईश्वर के प्रति जो प्रेम असावधान और भ्रमित लोग महसूस करते हैं, वह
पशुवत प्रकृति का होता है।
ऐसे लोगों को जो भारी नुकसान होता है, उस पर विचार करें!

मानवता को ईश्वरीय कृपा की सबसे अधिक आवश्यकता है।
सर्वशक्तिमान ईश्वर ने मानवता को प्रतिबिंबित करने के लिए एक दर्पण के रूप में बनाया
उनके नाम, शक्ति के एक चमत्कार के रूप में वजन करने में सक्षम हैं और
उसकी दया के खजाने की सामग्री को पहचानें, और
पृथ्वी पर एक प्रतिनिधि के रूप में उसकी माप करने में सक्षम
नाम की सबसे सूक्ष्म अभिव्यक्तियाँ। इसे देखते हुए, मानवता को सभी प्रकार की
भौतिक और आध्यात्मिक तरकीबों की आवश्यकता है।
ऐसी व्यापक प्रकृति होने के कारण, लोग
सर्वोच्च पद (सृष्टि का "सर्वोत्तम प्रतिरूप" होने के नाते) केवल धन्यवाद के
माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है। इसके बिना, वे
सबसे भयंकर पाप करो और सबसे निम्नतम स्तर पर गिरो।

ईश्वर के आराध्य और प्रिय सेवक बनने के मार्ग के चार स्तम्भ हैं,

निम्नलिखित में कहा गया है:

जिस तरह से किसी की जागरूकता पर निर्भर करता है भगवान के सामने नपुंसकता के लिए चार चीजें आवश्यक हैं, जिनमें से सबसे महत्वपूर्ण है धन्यवाद: अपनी पूर्ण नपुंसकता (अज्ज-ए-मुतलक) और गरीबी (फक्र-ए-मुतलक) और पूर्ण उत्साह की स्वीकृति

(शौक-ए-मुतलक) और धन्यवाद (शुक्र-ए-मुतलक)।

हे ईश्वर, अपनी दया से हमें उन लोगों में शामिल करिए जो
हे दयालुओं में सबसे दयालु!
आपकी जय हो। हम केवल वही जानते हैं जो आप हमें सिखाते हैं।
हे ईश्वर, तू सर्वज्ञ, सर्वज्ञ है। हे ईश्वर, हमारे स्वामी मुहम्मद साहब पर कृपा और शांति प्रदान कर।
धन्यवादी और प्रशंसा करनेवाले, उसके परिवार और साथियों। आमीन।

उनका अंतिम आह्वान है: "सारी स्तुति परमेश्वर की हो।" (10:10)

अनुक्रमणिका

एल

एम

पी

आर

एस

टी

में

वी

में